आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2012 ★ फाल्गुन, 2068

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

व्हिएतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारै, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सौदी अरबिया, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहीरन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्वॅनिया, नामिबिया, चीन, अफगाणिस्तान, देशों में यह मांस निर्यात हो रहा है।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र
'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव
0257-2223903

''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद
0240-2244520

''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक
0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है। *मानवीय आहार शाकाहार।*

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं,
संजयाणं वुसीमओ।
न संतसंति मरणंते,
सीलवंता, बहुस्सुया॥
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.29

उन दान्त संयमी पूज्यों का,
सुन शिक्षाप्रद यह शुभ वर्णन,
शीलवान् बहुश्रुत मुनिवर वे,
पाते न त्रास, जब आये मरण॥

फरवरी, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
फाल्गुन, 2068

वर्ष 69 अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	भटकती युवापीढ़ी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
	वाग्वैभव	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
प्रवचन-	ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	12
चिन्तन -	सुखी-दुःखी होने का रहस्य	-श्री जशकरण डागा	22
संगोष्ठी आलेख -	भ्रष्टाचार : इतिहास, वर्तमान और भविष्य	-देवर्षि कलानाथ शास्त्री	23
	उपनिषदों में सदसदाचारसमीक्षा	-डॉ. सरोज कौशल	32
	श्रावकाचार में विकृतियाँ एवं निवारण	-श्री प्रकाशचन्द जैन	43
	Corruption : Is it a Social Compulsion or A Way out?	*-Dr S.P. Gupta*	47
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (4)	*-Prof. Sagarmal Jain*	37
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (74)	-श्री धर्मचन्द जैन	53
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(12)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	58
नारी-स्तम्भ-	हठवादिता : जीवन का अभिशाप	-श्रीमती बीना जैन	63
युवा-स्तम्भ-	सफलता के लिए संगठन और समर्पण आवश्यक	-श्री नितेश नागौता जैन	65
बाल-स्तम्भ -	मैं फूलों का हूँ व्यापारी	-डॉ. दिलीप धींग	67
कविता/गीत-	धंधा	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	52
	समय-समय पर जन्म अनेकों	-श्री उम्मेदचन्द जैन	56
विचार-	Some Pearls for Life	*-Ms. Minakshi Jain*	36
	नमक की मात्रा	-संकलित	62
	रात्रिभोजन-त्याग-महाभियान क्यों आवश्यक ?	-संकलित	64
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (27)		70
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (23)	-संकलित	73
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		80
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		118

सम्पादकीय

भटकती युवापीढ़ी

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

शीलगत भ्रष्टता भी भ्रष्टाचार का एक रूप है। राजस्थान में भंवरीदेवी काण्ड इसका ताजा उदाहरण है। यौनाचार की अनैतिकता के कारण अनेक दुराचारों के होने की सम्भावना बढ़ जाती है। भँवरी देवी की हत्या भी इसका एक दुःखद परिणाम है। परपुरुषों से अनैतिक सम्बन्ध सभी प्रकाश में नहीं आते हैं, किन्तु सबका परिणाम कहीं न कहीं दुःखद ही होता है।

मनुष्य की तीन प्रमुख कमजोरियां हैं:-(1) धनादि का अनावश्यक संचय (2) विपरीत लिंगी व्यक्ति के प्रति आकर्षण (3) आत्म-प्रशंसा एवं पर-निन्दा। धन संचय के प्रति जब व्यक्ति उन्मादग्रस्त होता है तो वह नीति-अनीति को नहीं देखता, धन संग्रह उसका मुख्य लक्ष्य होता है। किशोरावस्था में जब शारीरिक विकास होता है तो उसके साथ ही विपरीत लिंगी व्यक्ति के प्रति सहज आकर्षण बढ़ता रहता है। जो उस समय भावनात्मक आवेगों को प्रमुखता देता है तथा बुद्धि एवं प्रज्ञा के प्रकाश को भावनाओं की परत से ढक देता है। वह वासनाओं की पूर्ति के लिए अनुचित एवं एकांगी निर्णय कर लेता है। उसकी दृष्टि अत्यन्त सीमित होती है। जिस प्रकार नेत्रहीन व्यक्ति को दुनिया दिखाई नहीं देती, उसी प्रकार कामवासनाओं से आछन्न व्यक्ति के समक्ष अन्धकार छा जाता है एवं उसे अपनी वासना की पूर्ति ही प्रमुख नज़र आती है। मनुष्य का प्रायः यह भी स्वभाव होता है कि वह दूसरों की निन्दा एवं अपनी प्रशंसा पसन्द करता है। आजकल छोटे बच्चों में भी ऐसा देखा जाता है।

यहाँ मनुष्य की दूसरी कमजोरी पर विचार किया जा रहा है। किशोर एवं युवा पीढ़ी में जब यह कमज़ोरी हावी हो जाती है तो अनर्थ की सम्भावना बढ़ जाती है। आज समाज में सुनने को मिलता है कि अनेक युवतियां जैनेतर युवाओं के साथ भाग रही हैं। वे भागते समय यह नहीं देखती कि उनके इस निर्णय का परिवार एवं स्वयं के जीवन पर क्या प्रभाव होगा ? उनका भावात्मक आवेग इतना तीव्र होता है कि वे प्रत्येक चुनौती को झेलने के लिए मानस बना लेती हैं। कुछ समय व्यतीत होने के पश्चात् जब भावनात्मक आवेग क्षीण होता है तो उन्हें

अपने निर्णय पर पश्चात्ताप भी होता है, किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। परिवार के सदस्यों पर क्या बीतती है, इसका उन बालाओं को अनुमान नहीं होता। माता-पिता एवं दादा-दादी अपने कलेजे के टुकड़े के प्रति जिन ममतामयी भावनाओं एवं स्वप्नों को संजोये रखते हैं उन पर वज्रपात-सा हो जाता है। परिवार की तब भयंकर स्थिति होती है जब कोई किशोरी या युवति मासांहारी एवं संस्कारहीन परिवार में चली जाती है। माता-पिता को समाज के समक्ष नीचा देखना पड़ता है तथा उनके अन्य बालक-बालिकाओं की शादियाँ भी संकट में पड़ जाती हैं, क्योंकि ऐसे परिवार से समाज के लोग किनारा करने लगते हैं।

प्राचीनकाल में भी ऐसी छुट-पुट घटनाएँ होती रही हैं, किन्तु आज उनकी संख्या बेतहाशा बढ़ रही है। समाज में अनेक युवक भी जैनेतर परिवार की युवतियों को अपना जीवन साथी बना रहे हैं। वे समान कुल, जाति एवं संस्कारों से युक्त युवति को ब्याह कर लाते हैं तो सह्य हो जाता है, किन्तु जब हीन कुल एवं हीन संस्कारों से युक्त युवतियों को जीवन साथी बनाकर परिवार में लाते हैं तो समाज में निन्दा के पात्र बनते हैं। देश में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में निरन्तर घट रही है, इसलिये कई युवकों को समय पर अपने समाज में योग्य साथी नहीं मिल पाता है और वे दूसरे समाज की ओर दृष्टि दौड़ाकर जीवन साथी चुन लेते हैं। आज सोच की व्यापकता भी बढ़ी है। लोग अन्तर्जातीय विवाह को स्वीकार कर रहे हैं। पहले जब अन्तर्जातीय विवाह होता था तो एक नई जाति बनती थी एवं उस जाति को हीन दृष्टि से देखा जाता था। आज अन्तर्जातीय विवाह के पश्चात् युवतियां पूर्व जाति की पहचान खो देती हैं तथा युवक हीन दृष्टि से देखे जाते हैं।

भारत में विभिन्न जातियाँ हैं। उनके अपने रीति-रिवाज एवं जीवनयापन के तौर-तरीके हैं। उनका सांस्कृतिक वातावरण भिन्नता लिये हुए होता है, खान-पान बोल-चाल, रहन-सहन आदि में भी भेद देखा जाता है। कुछ पिछड़ी हुई जातियाँ मानी जाती हैं, कुछ अनुसूचित और कुछ अनुसूचित जनजाति के रूप में पहचानी जाती हैं तथा कुछ सामान्य जातियाँ मानी जाती हैं। इनमें भी अनेक जातियाँ एवं उपजातियाँ सम्मिलित हैं जो परस्पर सामाजिक स्तर के आधार पर उच्च या निम्न मानी जाती हैं। भारत सरकार ने एक ओर जातियों को आरक्षण की नीति के आधार पर अधिक सुदृढ़ बना दिया है, दूसरी ओर

वैवाहिक स्वतन्त्रता का अधिकार दे रखा है, इस अधिकार के अन्तर्गत कोई भी वयस्क अपनी इच्छा से कहीं भी विवाह कर सकता है। यह एक अधिकार है, किन्तु यह अधिकार व्यक्ति के विकास और पतन दोनों में सहायक है। परिपक्व वय एवं बुद्धि के साथ कृत निर्णय जहाँ विकास में सहायक है वहाँ भावुकता में किया गया निर्णय अधिकार का दुरुपयोग है तथा अधिकार का दुरुपयोग भ्रष्टाचार की कोटि में आता है।

विवाह के अनेक प्रकार हैं। इनमें अपनी जाति, कुल एवं समान रीति-रिवाज के व्यक्ति के साथ माता-पिता की सहमति से किया गया विवाह श्रेष्ठ माना जाता है। विवाह के शेष प्रकार हीन कोटि में आते हैं। स्वेच्छा से किया गया प्रेम विवाह भी समाज में श्रेष्ठ नहीं माना जाता है। समाज के सदस्यों की साक्षी में किया गया विवाह श्रेष्ठ होता है।

जैन समाज की कोई युवति जब मुसलमान युवक के साथ या हरिजन युवक के साथ भागती है तो परिवार का सिर शर्म से झुक जाता है। समाज के स्तर पर खूब टीका-टिप्पणियाँ होती हैं, किन्तु इन घटनाओं को रोंकने के लिए पर्याप्त प्रयत्न नहीं हो रहे हैं। समाज के कुछ हितचिन्तक कार्य कर रहे हैं, किन्तु उनके सीमित प्रयत्नों से पूरे देश को नहीं संभाला जा सकता। पुणे में भारतीय जैन संघटना के माध्यम से महिला सशक्तीकरण का कार्य चल रहा है। इसी प्रकार युगराज जैन, मुम्बई के द्वारा 'बहना तुम से कुछ कहना' शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन प्रयत्नों के सकारात्मक परिणाम भी आ रहे हैं, किन्तु अभी बृहद् स्तर पर गांव-नगर में अभियान की आवश्यकता है जो किशोर-किशोरियों एवं युवक-युवतियों को भावी जीवन के सम्बन्ध में सोच दे सके तथा उन्हें सशक्त बना सके।

युवतियों द्वारा अन्य जाति या हीन जाति के युवकों के साथ भागने के लिए उठाए गए ऐसे कदम के पीछे कई कारण हैं-

1. परिवार में परस्पर प्रेम का अभाव।
2. संवादहीनता की स्थिति।
3. हीरो-हीरोइन को अपना आदर्श मानना।
4. गुण सौन्दर्य से अधिक शरीर सौन्दर्य को महत्त्व देना।
5. अपने मित्रों की राय को ही सर्वोपरि मानना।
6. परिवार में भयोत्पादक कठोर अनुशासन एवं अधिक स्वच्छन्दता का

वातावरण।

7. अपने जीवन के प्रति सम्यक् सोच न होना।

8. भावुकता।

9. युवकों द्वारा प्रलोभन, भयादि के साथ जालसाजी फैलाना।

10. सामाजिक-नियन्त्रण का अभाव।

11. लिव इन रिलेशनशिप को छूट।

12. वयस्कों को वैवाहिक स्वतन्त्रता का अधिकार।

इस प्रकार के विभिन्न कारण हैं जो युवतियों को भागने में सहायक बन रहे हैं। टेलीविजन एवं मोबाइल भी इसमें बहुत बड़े निमित्त हैं। मोबाइल के कारण युवक-युवतियों का सम्पर्क सरल हो गया है। इसलिए मोबाइल आने के पश्चात् इस प्रकार की घटनाएँ बढ़ी हैं। भारतीय संस्कृति की शालीनता का स्थान पाश्चात्य संस्कृति की स्वच्छन्द प्रवृत्ति ले रही है। हम पाश्चात्य समाज के विघटित रूपों को देखते हैं, फिर भी सीख नहीं ले पा रहे हैं। पश्चिम के लोग भारतीय विवाह पद्धति एवं दाम्पत्य-व्यवस्था के कायल हैं, किन्तु फिर भी हम असावधान हैं।

किशोरियों अथवा युवतियों की ऐसी क्या मजबूरी है कि वे किसी भी कुल के युवक के साथ रहने या विवाह करने के लिए तत्पर हो जाती हैं? उनकी मजबूरी के निवारण में माता-पिता एवं परिवारजनों की क्या भूमिका हो सकती है? समाज की क्या भूमिका हो सकती है? यह सब चिन्तनीय विषय हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब सामायिक, प्रतिक्रमण के पाठ सीखकर भी कोई युवति इतर जाति के युवक के साथ जाने को मन बना लेती है। कारणों पर गहन अन्वेषण की आवश्यकता है तथा जीवन में धर्म एवं संस्कारों के महत्त्व को समझ कर जीवन को दिशा देने की आवश्यकता है। जीवन में धर्म, संस्कृति एवं लक्ष्य के प्रति सम्यक् सोच का विकास जब तक चित्त में नहीं होगा तब तक इस प्रकार की घटनाएँ घटित होती रहेंगी। इसके लिए घर का वातावरण भी दोष का भागी है। युवतियों के जैनेतर युवकों एवं हीन कुल तथा संस्कार के युवकों के साथ जाने के कारणों एवं उनके निवारण पर **हम सुज्ञ पाठकों से भी विचार आमन्त्रित करते हैं। आपके विचार उपयोगी रहे तो उनका प्रकाशन जिनवाणी पत्रिका में किया जाएगा।** सम्पादकीय में भी यह विषय आगे जारी रहने की सम्भावना है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

गर्हा-सूत्र

तिविहा गरहा पण्णत्ता, तं जहा-मणसा वेगे गरहति, वयसा वेगे गरहति, कायसा वेगे गरहति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

अहवा-गरहा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-दीहंपेगे अद्धं गरहति, रहस्संपेगे अद्धं गरहति, कायंपेगे पडिसाहरति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

गर्हा तीन प्रकार की कही गई है- कुछ लोग मन से गर्हा करते हैं, कुछ लोग वचन से गर्हा करते हैं और कुछ लोग काया से गर्हा करते हैं। पाप कर्मों से विरत होने के लिए गर्हा की जाती है। अथवा गर्हा तीन प्रकार की कही गई है- कुछ लोग दीर्घकाल तक पाप-कर्मों की गर्हा करते हैं, कुछ लोग अल्पकाल तक पाप-कर्मों की गर्हा करते हैं और कुछ लोग काया का निरोध कर गर्हा करते हैं- पाप कर्मों से विरत होने के गर्हा की जाती है। (भूतकाल में किये गये पापों की निन्दा करने को गर्हा कहते हैं।)।

प्रत्याख्यान-सूत्र

तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा-मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति, कायसा वेगे पच्चक्खाति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

अहवा-पच्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-दीहंपेगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्संपेगे अद्धं पच्चक्खाति, कायंपेगे पडिसाहरति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

प्रत्याख्यान तीन प्रकार का कहा गया है- कुछ लोग मन से प्रत्याख्यान करते हैं, कुछ लोग वचन से प्रत्याख्यान करते हैं और कुछ लोग काया से प्रत्याख्यान करते हैं (पाप-कर्मों को आगे नहीं करने हेतु)

अथवा प्रत्याख्यान तीन प्रकार का कहा गया है- कुछ लोग दीर्घकाल तक पापकर्मों का प्रत्याख्यान करते हैं, कुछ लोग अल्पकाल तक पापकर्मों का प्रत्याख्यान करते हैं और कुछ लोग काया का निरोध कर प्रत्याख्यान करते हैं- पाप कर्मों को आगे नहीं करने हेतु(भविष्य में पापकर्मों के त्याग को प्रत्याख्यान कहते हैं।)

-स्थानाङ्गसूत्रम्, तृतीय स्थान, प्रथम उद्देशक, सूत्र-26-27

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

स्वाध्याय

- यदि आप चाहते हैं कि समय-समय पर दिल में आने वाली तपन, काम-क्रोध, अहंकार की उत्तेजना आपको सता नहीं सके। यदि आप चाहते हैं कि हमारा परिवार संतुष्ट रहे, हम संतुष्ट रहें, सुखी रहें, यदि आप ऐसा संसार बनाना चाहते हैं जिसमें शान्ति, सौहार्द, सहिष्णुता और सद्भाव का साम्राज्य हो, कलह, अशान्ति और अविश्वास का लेशमात्र न हो तो आपको अपने बच्चों को 'स्व' का अध्ययन कराना पड़ेगा, जिस 'स्व' को समझ लेने के पश्चात् सारी दुनिया फीकी प्रतीत होगी। इस 'स्व' तत्त्व को पा लेने के बाद आत्मा स्वस्थ, शान्त और निर्मल होगी।
- अगर ज्ञान प्राप्त करना है तो वह केवल शब्द से नहीं होगा। पोथी पढ़कर या शब्द रटकर कोई अपने को पर्याप्त मान ले तो वह सम्यग्ज्ञानी नहीं होगा। सम्यग्ज्ञान प्राप्त करना है तो स्वाध्याय करो। स्वाध्याय से अपने आपको पढ़ो, अपने आप को सोचो। हमारे सामने हजारों समस्याएँ हों, पर उन सबका समाधान मैंने स्वाध्याय और सामायिक में ही पाया। समाज सुधार की जितनी बातें हैं वे सब दो में निहित हैं। समाज में झगड़े क्यों होते हैं? सम्प्रदाय में झगड़े क्यों होते हैं? इनके पीछे भी मूल कारण यही है कि आज समाज में स्वाध्याय की प्रवृत्ति नहीं है। इन महाराज के यहाँ जाना और दूसरों के नहीं जाना, इस झगड़े का मूल अविद्या या अज्ञान है। उसे भी स्वाध्याय से समाप्त किया जा सकता है।
- आज विज्ञान के युग में संसार में विद्या बढ़ी है। उसके साथ ही धर्म का ज्ञान और क्षेत्र भी बढ़ना चाहिए। पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों की संख्या बढ़ गई, लेकिन इसके साथ ही धर्म-ज्ञान या ज्ञान-साधना की पूर्ण व्यवस्था अपेक्षित है। हर युवक इस बात का संकल्प करे- "स्वाध्याय अवश्य करूँगा। चाहे घर में समय मिले, न मिले, पर जब तक स्वाध्याय नहीं करूँगा तब तक अन्न-जल नहीं लूँगा।" यदि स्वाध्याय को समाज धर्म बना लें तो काम सरलता से हो सकता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

जीवन-दृष्टि

- यदि आपका सामायिक और स्वाध्याय का क्रम बना रहेगा तो वह आपके लिए तो हितावह होगा ही, भावी पीढ़ी के लिए भी आदर्श होगा।
- आप भले ही संसार में रहें, पर कमल की तरह सांसारिक मोह-माया के कीचड़ से ऊपर उठे रहें।
- नाव पानी में रहे तब तक समस्या नहीं है। नाव में पानी नहीं होना चाहिये। आप संसार में रहें, यह समस्या नहीं है, आपके मन में संसार नहीं रहना चाहिये। संसार में रहते हुए संसार से अलग रहना जीने की कला है।
- ''अहो समदृष्टि जीवड़ा करे कुटुम्ब प्रतिपाल'' के अनुसार जीवन जीना है। धाय माता हर समय बच्चे के बीच रहती है। कभी नहलाती है, कभी खिलाती है, कभी दूध पिलाती है, कभी उसका मनोरंजन कराती है। सब कुछ करते हुए भी धाय माता जानती है कि यह बच्चा उसका नहीं है। संसार में आप इसी प्रकार रहेंगे तो ज्ञान-दर्शन-चारित्र और धर्म आराधना के मार्ग हरे-भरे रहेंगे।
- संसार में कोई भयंकर से भयंकर शत्रु, रोग या विष है तो वह है -मिथ्यात्व। विपरीत दृष्टि सबसे बड़ा ज़हर है। मिथ्यात्व ऐसा ज़हर है, जो एक नहीं, अनेक जन्मों तक दुःख देता है।
- यदि डरना है तो अपने विपरीत विचारों से डरो। अपनी विपरीत श्रद्धा से डरो। आज तक किसी ने घुमाया है, भटकाया है, नरक और निगोद दिखाया है तो वह मिथ्यात्व है। अगर यह मिथ्यात्व हट गया और अपने आप पर श्रद्धा जागृत हो गई तो भटकने की जरूरत नहीं।
- हम न जाने कितनी बार निगोद में गये, कितनी बार एकेन्द्रिय बने, कितनी बार नरक गये, कितनी बार देवताओं के सुख भोगे। हमारा स्वरूप न देव है, न मानव, न नरक और न तिर्यंच। हमारा शुद्ध स्वरूप आत्मा है।

-प्रवचनों से संकलन : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा नागौर चातुर्मास में दिए गए प्रवचन का आशुलेखन एवं सम्पादन श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने किया है। **-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

आज मैं अपनी बात एक छोटे से चुटकुले के माध्यम से शुरु करना चाहता हूँ। याद रखें चुटकुला आपका मनोरंजन करने के लिए नहीं, अपितु इसलिए प्रयोग कर रहा हूँ, क्योंकि चुटकुला उसे कहते है जिसमें चोट करने की कला हो। आप चाहें तो इस चुटकुले को दृष्टान्त भी कह सकते हैं। दृष्टान्त जो हमारी दृष्टि को बदलने में सहायक होते हैं। हमारे बुजुर्ग दृष्टान्त को 'ओटा' कहते थे, क्योंकि वे उसकी ओट में अपनी बात बड़े प्रभावपूर्ण सचोट तरीके से कह देते थे। कभी-कभी ये छोटे-मोटे दृष्टान्त हमारी जागृति में मील के पत्थर साबित हो जाते हैं। हाँ, तो मैं कह रहा था कि रात के अंधकार में एक जवान लड़का शहर की सड़क पर मोटरसाइकिल पर बड़ी तेज गति से आ रहा था। मोटरसाइकिल की लाइट भी नहीं जल रही थी। बीच चौराहे पर खड़े ट्रैफिक पुलिस ने यह देखकर उसे रुकने का संकेत दिया। पुलिस के संकेत को देखते ही मोटरसाइकिल सवार जोर से चिल्लाया- "बीच से हट जाओ, इसमें ब्रेक भी नहीं है।" (सभा में हँसी) तेजी से आ रही मोटरसाइकिल , जिसमें न लाइट है, न ब्रेक, की बात सुनकर आपको कितनी जल्दी हँसी आ गई, पर क्या कभी आपने अपने जीवन की गाड़ी के बारे में भी सोचा है कि उसमें भी लाइट और ब्रेक है या नहीं? हकीकत तो यह है कि आदमी दूसरों की कमियों पर तो तुरन्त हँस देता है, परन्तु अपनी गलतियों पर उसकी नज़र नहीं जाती। मैंने एक जगह बड़ा ही सुन्दर वाक्य पढ़ा था कि "आदमी खुद गलती करता है तो उसका औचित्य सिद्ध करने के लिए गलियां निकालता है, पर दूसरा गलती करता है तो उसे गालियाँ निकालता है।" यह सच्चाई हमारे जीवन की कमज़ोरी है। हमें भी अपने जीवन पर दृष्टिपात करना चाहिए कि हम अपनी गलतियों के लिये कैसे सोचते हैं और दूसरों की गलतियों पर कैसी प्रतिक्रिया करते हैं। आप देखिये कि एक घर के

मालिक ने ज्यों ही घर में प्रवेश किया तो वहाँ बीच में पड़ी एक गिलास से ठोकर खा गया और बड़बड़ाते हुए बोल पड़ा-''घर में कोई चीज ठिकाने रखते ही नहीं हैं?'' बाद में किसी दिन घर के एक दूसरे सदस्य ने घर में प्रवेश किया और वह भी किसी वस्तु से टकरा गया। घर में बैठे मालिक ने चिल्लाते हुए कहा-''अन्धा होकर चलता है, देखकर नहीं चलता?'' बन्धुओं! जरा हर व्यक्ति अपने जीवन पर एक नज़र डाल कर देखे कि कहीं वे भी इस दृष्टान्त के नजदीक तो नहीं हैं? आज व्यक्ति की मानसिकता ही कुछ ऐसी हो गई है कि वह दूसरों की गलतियों पर तो गाली देता है, उपालम्भ देता है या उपहास करता है, परन्तु स्वयं की गलतियों पर गलियां निकालता है, बहानेबाजी करता है या किसी अन्य निमित्त पर दोष मढ़ देता है। जरा सोचिये, कहीं उस मोटरसाइकिल की तरह ही हमारी जीवन की गाड़ी का तो हाल नहीं है? क्या हमारे जीवन में ज्ञान की लाइट और व्रत-नियम का ब्रेक है?

तत्त्वज्ञानियों ने मुक्तिमार्ग का एक कीमिया सूत्र दिया है-''ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः।'' अर्थात् ज्ञान और क्रिया (चारित्र) के समन्वय से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। जैसे एक पहिए से रथ नहीं चल सकता, उसके लिए दोनों ही पहिए चाहिए, वैसे ही मोक्ष-फल की प्राप्ति के लिये जीवन में ज्ञान और उसके अनुरूप क्रिया का होना आवश्यक है। वन में आग लगने पर पंगु उसे देखता हुआ और अंधा व्यक्ति भागता हुआ भी आग से बच नहीं सकता है, इसी तरह जीवन भी बिना ज्ञान के अंधा है और बिना चारित्र के पंगु है। चंदन का भार ढोने वाला गधा सिर्फ चंदन का भार ढोता है, उसे चंदन की सुगन्ध का कोई पता नहीं होता है। उसी तरह चरित्र रहित ज्ञानी भी सिर्फ ज्ञान का भार ढोता है, वह ज्ञान की सुगन्ध नहीं ले पाता, फिर उसे सद्गति कैसे मिल सकती है?

हम भी जरा अपने को टटोल कर तो देखें कि हमारे जीवन में इन दोनों का योग कितना है? बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि अधिकांश लोगों ने ज्ञान और क्रिया के महत्त्व को ही नहीं समझा है। अज्ञान में अथवा मोह-माया में उलझकर वे भौतिक उपलब्धियों को ही जीवन का ध्येय समझ बैठे हैं। जिधर देखें उधर एक ही दौड़, एक ही धुन, एक ही जुनून सिर पर सवार है- पैसा! पैसा!! और पैसा!!! पैसे की प्राप्ति में चाहे आपसी सम्बन्ध बिगड़ जाएँ, चाहे खून के रिश्ते का खून हो जाए, चाहे अन्याय और अनीति का आश्रय लेना पड़े तो भी किसी तरह का परहेज नहीं। येन-केन-प्रकारेण पैसा आना चाहिए। ज्यादा क्या कहूँ, शास्त्रों में तो जीवन के आधारभूत तत्त्वों में दस प्राण बतलाए

हैं, पर लगता है व्यक्ति ने पैसे को ग्यारहवाँ प्राण मान लिया है। भौतिकता के मायाजाल में व्यक्ति की मान्यता हो गई है कि पास में पैसा होगा तो प्रतिष्ठा होगी, समाज में उसकी हैसियत गिनी जायेगी, जिससे समाज में उसका प्रभाव बढ़ेगा। सुख का स्रोत भी पैसे को ही समझा जाने लगा है। व्यक्ति का सारा पुरुषार्थ, समय और शक्ति पैसे के ही अर्जन और संचय पर केन्द्रित हो गई है। इतना होने पर भी न समस्याएँ कम हो रही हैं और न चिन्ताएँ घट रही हैं, अपितु जीवन में तनाव निरन्तर बढ़ रहा है, जिसके कारण जीवन में विकृतियाँ घर कर रही हैं। फलस्वरूप जीवन में जो बदलाव पिछली दो शताब्दियों में नहीं आया, उतना केवल दो दशाब्दियों में ही आ गया। खान-पान, रहन-सहन और जीवन शैली ही नहीं बदली, व्यक्ति की सोच भी बदल गई। पहले के जमाने में लोगों के पास पैसा होता भी तो उनमें पैसे को पचाने की क्षमता थी अर्थात् पैसा उनमें कोई विकार पैदा नहीं करता था। उनमें कोई घमंड नहीं था, अतः वे पैसे का दुरुपयोग नहीं करके समाज के हित में उसका विसर्जन करते थे। पैसे के बावजूद भी उनमें करुणा, सेवा और नम्रता के भाव बने रहते थे। आज भी चंद उदाहरण ऐसे मिल सकते हैं ''मक्खन अभी डूबा नहीं'' लेकिन अधिकांशतः आज पैसे के प्रभाव में व्यक्ति का अहंभाव शिखर पर जा पहुँचा है, जिसके दुष्परिणाम हम सबके सामने हैं।

जीवन में यदि पैसा ही केन्द्र में हो तब व्यक्ति के लिये मानवीय गुणों का कोई मूल्य नहीं रहता। पैसे में ही सुख ढूंढना मृगमरीचिका की तरह है। सुख तो मिलता नहीं, अपितु वह दुःख की परम्परा को ही बढ़ाता है। सम्बन्धों में मैत्रीभावों की तो बात ही छोड़िये, आपस में इतनी कड़वाहट आ जाती है कि भाई तो भाई, बाप-बेटे भी पैसे के लिये लड़ पड़ते हैं और बात कोर्ट-कचहरी तक चली जाती है। सम्बन्धों की कड़वाहट ने व्यक्ति के तनाव को बहुत बढ़ा दिया है, जिससे उसका जीवन विषाद से भर गया है। ऐसे वातावरण में व्यक्ति गहरी निराशा में डूब जाता है और जघन्य अकरणीय कृत्य कर डालता है।

जब मैं लोगों से सुनता हूँ तो मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि किसी न्यायाधीश ने पाँचवीं मंजिल से कूद कर आत्महत्या कर ली। जो न्यायाधीश दूसरों को न्याय देता है, अपने जीवन को न्याय नहीं दे सका। जो डॉक्टर दवा की गोलियाँ देकर दूसरों की जान बचाता है, वही नींद की गोलियाँ खाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेता है। जो वकील न्यायालय में बहस कर अपने मुवक्किल का मुकदमा जीत लेता है, वह अपने ही जीवन का मुकदमा खुद ही

हार जाता है। मैं केवल न्यायाधीश, डॉक्टर या वकील की ही बात नहीं करता, आज की जीवन शैली और भौतिकता का वातावरण बड़े-बड़े अकलमंदों को भी अक्ल का मारा बना देता है।

कारण स्पष्ट है कि व्यक्ति का जीवन इतना उलझ गया है कि उसे जीवन की समस्याओं का सम्यक् समाधान नहीं मिल रहा है। समाधान इसलिए नहीं मिल रहा है क्योंकि उसके पास न तो सम्यक् ज्ञान ही है और न उसके अनुरूप उसकी क्रिया ही है। दशवैकालिक सूत्र में कहा है कि - ''पढमं नाणं तओ दया'' अर्थात् पहले ज्ञान होना चाहिए और फिर उसके अनुसार आचरण होना चाहिए। ज्ञान वह है जो हमें सत्य का बोध कराता है, विश्व के समस्त रहस्यों को प्रकाशित कर कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाता है, पुद्गल-धर्म और आत्मधर्म में भेद बताकर मुक्ति की राह बताता है। ज्ञान बताता है कि हमारी दुःखोत्पत्ति के कारण क्या हैं और बंधन क्या हैं? जो दुःखोत्पत्ति का कारण ही नहीं जानते, वे उसका निरोध भी कैसे कर सकते हैं? जो संसार के दुःखों को जान लेते हैं, उनकी प्रवृत्ति पापमयी नहीं रहती।

एक अज्ञानी उस नाविक की तरह है जो छिद्रवाली नौका में सवार होकर संसार सागर को पार करना चाहता है। ऐसा व्यक्ति किनारा आने के पहले ही बीच में डूब जायेगा। इसलिए भगवान् ने उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है कि अज्ञानी बोधहीन व्यक्ति हैं, जो दुःख के पात्र हैं। अज्ञान सबसे बड़ा दुःख है और संसार-भ्रमण का मूल कारण है।

ज्ञान, साधक को बंधन रूपी गांठों से मुक्त होने के लिए जीवन यात्रा की राह बताता है। वह स्वयं का बोध कराता है। अपने को अपने से जानकर राग-द्वेष के प्रसंगों में सम रहना ज्ञान ही सिखाता है। इसलिए ज्ञानीजन दुर्जनों और कठोर वचनरूपी चपेटों को समभावपूर्वक सहन करते हैं और अपने-पराये की भेद बुद्धि से परे हो जाते हैं। जो ज्ञान के वैभव से समृद्ध होता है वह हर परिस्थिति में सम रहता है। आपने चन्दनबाला का आख्यान सुना होगा। श्रेष्ठी की पत्नी ने उसे द्वेषवश तलघर में डाल दिया, सिर मुंडा दिया और हाथ-पैरों में बेड़ियाँ डाल दी। ऐसे क्रूरतम व्यवहार से भी वह किंचित् भी विचलित नहीं हुई। उसने अपनी आन्तरिक शांति बनाये रखी, क्योंकि उसके पास ज्ञान का बल था। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों की बात छोड़िये, आज तो जरा सी भी प्रतिकूल बात हो जाए तो व्यक्ति आवेश में आ जाता है। बदले की गाँठ बांध कर वैरानुबंध कर लेता है, क्योंकि जीवन में ज्ञान का अभाव है।

एक नन्हा बालक अपने पिता की अंगुली पकड़े मेले के मनोरंजक वातावरण में घूमता हुआ खुशी के मारे उछल रहा था। भीड़ में अचानक पिता की अंगुली छूट गई। पिता उसे दिख नहीं रहे थे, वह रोने लगा। मुझे आप बताइये कि मेला तो वैसे ही चल रहा था, उसमें मनोरंजन के साधन भी वैसे ही थे, वातावरण भी वैसा ही था, खेल-तमाशे भी वैसे ही हो रहे थे, तब जो बच्चा खुशी से उछल रहा था, वह अचानक क्यों रोने लगा? क्योंकि पिता की अंगुली उससे छूट गई थी। इसी तरह जो ज्ञान की अंगुली थामे चलता है उसे दुनिया के सुख-दुःख गुमराह नहीं कर सकते, दुःख के निमित्त दुःख नहीं पहुँचा सकते। यह सत्य है कि सूरज के साथ चलने वालों को कभी अंधेरे का सामना नहीं करना पड़ता। वैसे ही ज्ञान में जीने वालों को अज्ञान के दुःख की ठोकरें नहीं खानी पड़तीं। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान् ने कहा है कि जैसे धागे में पिरोई हुई सुई गिर जाने पर भी गुम नहीं होती है, उसी तरह ज्ञानरूपी धागों से बंधी हुई आत्मा संसार में नहीं भटकती है। दशवैकालिक सूत्र में भी पंचमहाव्रतधारी साधकों को सावधानी के स्वर में कहा है- "जीवाजीवे अयाणन्तो, कहं सो नाहीइ संजमं?" अर्थात् जो न जीव को जानता है और न अजीव को, वह संयम को कैसे जान पायेगा? भला ऐसा व्यक्ति संयम का पालन कैसे करेगा?

वास्तव में तो अज्ञान ही दुःख का कारण है। अज्ञान के कारण ही जीव दुःख को सुख मान लेता है, 'पर' में स्व की बुद्धि स्थापित कर लेता है, अनित्य को ही शाश्वत मान लेता है और अनात्म को ही आत्म समझ लेता है। इसलिए तो प्रभु ने साधु के तीन मनोरथों के अन्तर्गत प्रथम मनोरथ में नित्य नूतन अपूर्व श्रुत के अध्ययन की भावना भाने की बात कही है। व्यक्ति अपना मुँह अपनी आँखों से नहीं देख सकता। उसके लिए दर्पण की आवश्यकता रहती है। इसी तरह से आत्मभाव में रहने के लिए ज्ञान तत्त्व की आवश्यकता रहती है। यद्यपि ज्ञान आत्मा का ही मौलिक गुण है, तथापि उसे प्रगट करने के लिये शास्त्रज्ञान का अवलम्बन आवश्यक होता है। ज्ञान से दृष्टि में परिवर्तन आता है, पर यह परिवर्तन तब आयेगा जब शास्त्रों से सत्य को समझेंगे, अपने और पराये को जानेंगे। इसलिए प्रभु ने बार-बार स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कहा कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होगा और एक दिन आत्मा का मौलिक गुण केवलज्ञान प्रकट होगा। केवलज्ञान की प्राप्ति तो अन्तिम बात है, पर एक साधक को उसी दिशा में जाने के लिए शास्त्रज्ञान का अवलम्बन लेकर

सत्य को जानने का प्रयास निरन्तर करते रहना चाहिए। ज्ञान से ही विचारों की शुद्धि होती है और विचार शुद्धि से आचार शुद्ध होता है।

अभी मैंने सत्य को जानने के लिये साधक के लिये ज्ञान प्राप्ति की बात की, परन्तु आज तो हमें जैनत्व की जीवन शैली और उसके गौरव को अधिष्ठित रखने वाले सामान्य ज्ञान का भी भरपूर अभाव देखने को मिलता है। जैन किसे कहते हैं? या हमारे बत्तीस आगम कौनसे हैं? इसका भी जैन अनुयायियों को पूरा पता नहीं है। कुछ वर्ष पूर्व जयपुर में एक बहिन ने अपने जीवन का अन्त नजदीक समझकर संथारा (समाधिमरण) अंगीकार किया। समाचार मिलते ही मीडिया वालों ने उसके इस उपक्रम को आत्महत्या की संज्ञा दे दी। पर मैं आपसे पूछता हूँ कि संथारे के संबंध में क्या आप पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे? सम्भव है कि आपकी समुचित जानकारी के अभाव में पत्रकार आपको निरुत्तर कर दें। *संथारा आत्महत्या नहीं है, यह सिद्ध करना* आपके लिए भारी पड़ जाएगा। ज्ञान का पक्ष कमजोर होने से सम्भवतः आप साधक जीवन के इस अंतिम मनोरथ संथारे का अर्थ और इसके महत्त्व को समझाकर संथारे और आत्महत्या में भेद को सिद्ध नहीं कर पायेंगे। कितनी लज्जास्पद बात है? हम क्रिकेट पर लम्बी-चौड़ी कमेंट्री कर देंगे, अन्ना हजारे के आन्दोलन पर प्रतिक्रिया दे देंगे, पर जिस ज्ञान से सत्य का द्वार खुलता है, सही दृष्टिकोण मिलता है, पापों से बचने का उपाय मिलता है, कर्मों की निर्जरा का रास्ता दिखता है और जिनशासन की प्रभावना होती है। उसके बारे में हम इतने अनभिज्ञ और बेपरवाह हैं, जरा सोचने की बात है। हम यह तो अच्छी तरह से जानते हैं कि रात्रि में घना अंधेरा कितना भयोत्पादक होता है। अंधेरे में रास्ता नहीं दिखता है, अतः उसमें न केवल भटकने का ही डर होता है, बल्कि ठोकर खाकर गिरने की भी पूरी सम्भावना रहती है। इसी तरह अज्ञान रूपी अंधेरा भी अहित करने वाला होता है, इसलिए प्रभु ने ज्ञान की रोशनी से रोशन होने की हितकारी प्रेरणा प्रदान की है। यह ज्ञान आत्मलक्ष्यी हो। ज्ञान के साथ उसके अनुरूप क्रिया भी हो, क्योंकि जान लेने मात्र से हीं कार्य की सिद्धि नहीं होती है। ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी कोई उस पर आचरण नहीं करे तो वह संसार सागर को कैसे पार कर सकेगा? व्यक्ति तैरना जानते हुए भी यदि जल में कूद कर तैरने की काय चेष्टा नहीं करेगा, हाथ-पाँव नहीं हिलायेगा तो जल प्रवाह में डूब जाएगा। अतः क्रिया शून्य ज्ञान और ज्ञान शून्य क्रिया, दोनों ही मुक्ति की ओर नहीं ले जा सकते।

प्रवचन के प्रारम्भ में मैंने उस दृष्टान्त में मोटरसाइकिल में लाइट और ब्रेक, दोनों के नहीं होने की बात कही थी। आप अपने जीवन में भी जरा झाँक कर देखलें कि उसमें भी ज्ञान रूपी रोशनी और चारित्र रूपी व्रत-नियम हैं या नहीं? हम देखते हैं कि कई व्यक्ति ज्ञान तो प्राप्त कर लेते हैं, पर वे व्रत-नियम लेने एवं पालने से कतराते हैं। कई लोग तो व्रत-पच्चक्खाण को भार समझते हैं तो कई उन्हें बुढ़ापे में लेने के लिये ही सुरक्षित रखते हैं। कुछ लोगों के मन में एक और भ्रान्त धारणा घर कर गई है कि जब हम अमुक पाप कर्म करते ही नहीं है तो उससे निवृत्त होने के पच्चक्खाण लेने की क्या आवश्यकता है? कुछ लोग यह भी तर्क देते हैं कि जब मैंने किसी धर्मक्रिया के करने की ठान ली है तो फिर अलग से उसके बारे में व्रत-पच्चक्खाण का क्या औचित्य है, क्योंकि उस अवस्था में तो व्रत लेना मात्र एक खानापूर्ति ही होगी। इन धारणाओं में उलझे हुए लोग व्रत-पच्चक्खाण का माहात्म्य नहीं जानते हैं।

सूत्रकृतांग सूत्र में भगवान् फरमाते हैं- "अदक्खु व दक्खुवाहियं सद्दहसु" अर्थात् नहीं देखने वालों, तुम देखने वालों की बात पर विश्वास करके चलो। यहाँ देखने वालों का अर्थ है सर्वज्ञ। उन्होंने साधकों के लिये जो कहा है, जो रास्ता बताया है, हमें उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उन करुणानिधान सर्व हितैषी की वाणी पर पूर्ण विश्वास और श्रद्धा रखनी चाहिए। उनकी वाणी है- "नाण-किरियाहिं मोक्खो" अर्थात् ज्ञान और क्रिया (आचार) से ही मुक्ति होती है। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि जिसने ज्ञान तो प्राप्त कर लिया, लेकिन उसको अपने चरित्र में नहीं उतारा तो उसका ज्ञान उसके लिए केवल भाररूप ही है। उस क्रियाशून्य ज्ञान से उसका कुछ भी कल्याण नहीं होने वाला है। जो ज्ञान तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन व्रत-पच्चक्खाण से कतराते हैं उनके लिये तो अपने संकल्प बल को जागृत और पुष्ट करने के लिये ही व्रत-नियम में बन्धना अत्यन्त आवश्यक है। व्रतों का नियम से पालन करते-करते वे कुछ समय बाद उसके लिए सहज हो जाते हैं। वे फिर भार नहीं लगेंगे। लेकिन जो लोग व्रत-पच्चक्खाण बुढ़ापे के लिए मानते हैं, तो उन लोगों से मुझे एक ही बात पूछनी है कि क्या उन्होंने मृत्यु के साथ अनुबन्ध कर लिया है कि वह अमुक समय के पहले उनके पास नहीं आयेगी? यह तो, आज्ञा पालन नहीं, टालने का बहाना है। यह जीवन ओस बूंद की तरह है जो कभी भी नष्ट हो सकता है। इसलिये वीतराग वाणी हमें सावधान करती है कि जब तक बुढ़ापा नहीं आता,

जब तक व्याधियों का जोर नहीं बढ़ता, जब तक इन्द्रियाँ क्षीण नहीं होती, तभी तक बुद्धिमान को जो भी धर्माचरण करना हो, कर लेना चाहिए। धर्माचरण करने में विलम्ब नहीं करना चाहिए। जीवन विघ्नों से भरा है, इसमें संध्याकाल की प्रतीक्षा किये बिना, एक क्षण का भी प्रमाद किये बिना, साधना में जुट जाना चाहिए। मृत्यु अत्यन्त निर्दय है, वह कब आकर किसको दबोच ले, कोई पता नहीं। जिसकी मृत्यु के साथ मित्रता हो, वही कल पर विश्वास कर सकता है। जो लोग यह सोचते हैं कि हम पाप करते ही नहीं हैं तो व्रत लेने की औपचारिकता निभाने की क्या आवश्यकता है? उनसे यही कहना है कि यह जीवन संकल्प-विकल्पमय है जो सुख और दुःख का कारण है। जब तक हम साधना के उस धरातल पर नहीं पहुँच जाते हैं जहाँ संकल्प-विकल्प समाप्त हो जाते हैं, तब तक अपने मनोबल को पुष्ट करने के लिये, फिसलन से बचने के लिये लक्ष्मण रेखा में रहना ही उचित है। यह सत्य है कि हम उस अवस्था में नहीं पहुँचे हैं, अतः किन्हीं प्रलोभनों में आकर करणीय या अकरणीय बातों का अतिक्रमण होने की संभावना बनी रहती है। उस समय यदि गुरुजनों से व्रत-नियम पालने की प्रतिज्ञा ली हुई होती है तो जीव तुरन्त सावधान होकर उस फिसलन से बच जाता है। निश्चय दृष्टि से तो जब साधक संकल्प-विकल्प से रहित (कल्पातीत) अवस्था में पहुँच जाता है तब उसके लिये व्रत लेने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। लेकिन वह स्थिति तो बहुत आगे की बात है। वहाँ तक पहुँचने के लिये मन को विचलन से बचाने के लिये व्रत-नियम आवश्यक साधन है। यही व्रत का महत्त्व है।

इस विषय में मैं एक बात और स्पष्ट करना चाहता हूँ कि व्रत-पच्चक्खाण ले लेना ही कोई जादू की छड़ी नहीं है कि इनके लेते ही हमारे पाप हल्के होने या सीमित होने शुरु हो जाएं। साधक को व्रत-पच्चक्खाण की क्रिया के साथ अपनी भावधारा (सम्यक्त्व) भी जोड़नी होगी। व्रत-पच्चक्खाण व्यवहार-साधना से भाव-साधना में पहुँचने का मार्ग है। अतः इसे जो धारण नहीं करते उनका भाव-साधना में पहुँचना मुश्किल होता है। अतः इसकी उपेक्षा उचित नहीं। साधना के साथ जब भावधारा जुड़ जाती है तब हमें परमार्थ रूप आत्मबोध प्राप्त होता है। वस्तुतः यह आत्मबोध ही हमारे निर्वाण का कारण बनता है। व्रत-पच्चक्खाण लेते समय उसके पालन में उसमें निहित भावना निरन्तर हमारे मन में रहनी चाहिए। यदि उपवास करते हैं तो केवल आहार त्याग

ही नहीं, शरीर की आसक्ति का त्याग, विषय-कषायों का त्याग और राग-द्वेष की प्रवृत्ति का त्याग भी अन्तर में रहना चाहिए, ताकि हम अपने विकारों पर विजय प्राप्त कर सकें। जब सामायिक व्रत में हों तो समभाव की साधना का संकल्प भी होना चाहिए ताकि सामायिक के पश्चात् भी समभाव हमारे दैनिक व्यवहार में झलके। भगवान् ने कहा है कि ज्ञान से भावों यानी पदार्थों का सम्यक् बोध होता है, दर्शन से उन पर श्रद्धा होती है, चारित्र से कर्मों का निरोध होता है और तप से आत्मा निर्मल होती है। व्रत-पच्चक्खाण गुरुजनों से ग्रहण करने से, जैसाकि मैंने पहले कहा है कि हमारा संकल्प बल पुष्ट होता है, जिससे उनके सम्यक् पालन की ऊर्जा प्राप्त होती है और उनके पालन में स्खलना नहीं होती है। जैसे-जैसे उनके साथ हमारी भावधारा जुड़ती है, उनका पालन सहज हो जाता है। जब हम अपने कषायों को मन्द कर लेते हैं तब हम लाभ-अलाभ , सुख-दुःख, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा और मान-अपमान में समता रखते हैं। तब हमारा किसी जीव से वैर नहीं रहता, सबके साथ मैत्री हो जाती है और सब प्राणी हमारे लिये आत्मवत् हो जाते हैं। फिर जीव पाप कर्मों में प्रवृत्त ही नहीं होता है। वह समझता है कि जिस प्रकार मुझको दुःख प्रिय नहीं है, उसी प्रकार सभी जीवों को दुःख प्रिय नहीं है। जो ऐसा जानता है वह स्वयं न हिंसा करता है न किसी से हिंसा करवाता है। वह समत्वयोग में आ जाता है। इस अवस्था में आने के लिये प्रथम तो तत्त्व का ज्ञान होना चाहिए, फिर उसके अनुरूप हमारा चारित्र होना चाहिए।

विशुद्ध चारित्र के लिये विशुद्ध भावधारा भी अन्तर में बहनी चाहिए। जितने हेतु संसार के हैं उतने ही हेतु मोक्ष के हैं। जो गमनागमन की क्रियाएँ असंयत के लिये कर्म-बंध का कारण होती हैं, वे ही यतनाशील के लिये मुक्ति का कारण बन जाती हैं। व्रत-पच्चक्खाण से चारित्र ग्रहण करने का महत्त्व समझेंगे और समकित सहित आत्मबोध की प्राप्ति करेंगे तो आप सिन्धुसम पापकर्मों को एक बिन्दु तक ले आयेंगे। भावधारा से सम्यक्त्व सहित व्रत अंगीकार करना दुर्लभ अवश्य है, पर असम्भव नहीं। याद रखें व्रतों में भावधारा से जुड़ना और सम्यक्त्व में आना एकाएक नहीं होता। इसके लिए व्रतों का निरन्तर पालन आवश्यक है। ऐसा करने से अन्तर में समता सूर्य जब उगेगा तो गृहीत व्रत हमारे लिये वरदान सिद्ध हो जायेंगे। अतः भगवत् वाणी पर श्रद्धा रखते हुए आत्मलक्ष्यी बन व्रत-पच्चक्खाण लेते और पालते रहें। करोड़ रुपये के कर्ज

में से पचास पैसा रखकर बाकी का कर्ज माफ करने से जैसे कर्ज केवल पचास पैसा ही रह जाता है, वैसे ही अनन्त जन्मों से चली आ रही पाप-क्रिया व्रत-ग्रहण करने के बाद कर्मों के कर्ज से हल्की हो जाती है। अव्रती को पिछले जन्मों की क्रिया भी लगती ही रहती है, अतः अव्रत भी अपने आप में एक पाप ही है। अनन्त जीवन प्रवाह में इस मानव जीवन को एक सुअवसर समझ कर हमें कर्मों के कर्ज को समाप्त करने के लिये व्रतों में आ जाना चाहिए। जैसाकि मैंने पहले कहा है कि व्रत भावधारा के साथ हों तभी कषाय शान्त होंगे और कर्मों की शृंखला टूटेगी। इस विषय में एक बात और स्पष्ट कर दूँ कि जो व्यक्ति भोग-भोगने में समर्थ होते हुए भी उनका त्याग करता है, वही कर्मों की महान् निर्जरा करता है, उसे ही मुक्ति रूपी महाफल मिलता है। दशवैकालिक सूत्र में कहा है कि जो पराधीनता के कारण विषयों को भोग नहीं सकते, उन्हें त्यागी नहीं कह सकते। व्रत ग्रहण करने और उनका पालन करने में हो सकता है कि शुरु में कुछ तकलीफ आये, पर याद रखिये पत्थर की चट्टान कमजोरों के लिए राह का रोड़ा होती है, लेकिन बहादुर लोगों के लिये सफलता की सीढ़ी हो जाती है। अतः व्रत-ग्रहण में अपना पराक्रम करेंगे तो व्रत आपके लिये सफलता के सोपान होंगे, इसमें कोई संशय नहीं। इस तरह ज्ञान और क्रिया दोनों की महत्ता को समझकर दोनों के समन्वय के साथ साधना के क्षेत्र में बढ़ेंगे तो सिद्धि के द्वार स्वतः ही खुल जायेंगे।

अभिमत

श्री नितेश नागोरा

नव वर्ष की हार्दिक शुभ कामनाएँ। दिसम्बर अंक में 'भ्रष्टाचार पर विचार' सम्पादकीय के माध्यम से आचार्यप्रवर के सान्निध्य में सम्पन्न संगोष्ठी के निष्कर्ष रूप दसों चिंतन अनुकरणीय, अनुमोदनीय व आचरण योग्य हैं। निश्चित ही ये सूत्र प्रत्येक पाठक, प्रत्येक भारतीय के लिए आचरण योग्य हैं। आपश्री के दिशाबद्ध पुरुषार्थ हेतु अभिनंदन, आभार....।

जिस प्रकार हर नई सुबह कुछ नये सपने, नई आशा एवं नई उमंग का गान साथ में लाती है, ठीक इसी प्रकार 'जिनवाणी' का प्रत्येक अंक कुछ नवीनता,सृजन, प्रेरणा, शुभ चिंतन की दिव्य ज्योति साथ में लेकर आता है। आपके प्रभावी संपादन, सृजन व शासन समर्पणता को नमन....।

-कर सलाहकार, भवानी मण्डी-326502 (राज.)

चिन्तन

सुखी-दुःखी होने का रहस्य

श्री जशकरण डागा

संसार के सभी प्राणी सुख चाहते हैं और सदा सुखी रहना चाहते हैं। इस हेतु वे प्रायः अधिकाधिक धन सम्पत्ति अर्जित करने हेतु तथा सत्ता, पद, ख्याति आदि की प्राप्ति के लिए रातदिन पुरुषार्थ करते रहते हैं। फिर भी इच्छित अनुकूल सभी कुछ मिल नहीं पाता। कदाचित् विशिष्ट पुण्योदय से सभी कुछ मिल जाय तो भी वे अपने को सुखी अनुभव नहीं कर पाते। अतः सुखी कैसे हुआ जा सके, इसके लिए यहाँ दो प्रक्रियाएँ दी जाती हैं, जिन्हें अपनाकर प्रत्येक प्राणी अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर सकता है। **प्रथम प्रक्रिया–** हमें जो कुछ अनुकूल या प्रतिकूल द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि मिले हैं वे सब अपने ही पूर्वकृत कर्म के परिणाम स्वरूप हैं। जो आगे मिलने वाले हैं, वे भी स्वकृत कर्मानुसार ही मिलने वाले हैं। इस कथन पर पुनःपुनः चिंतन कर सभी परिस्थितियों में संतोष व समभाव रखे । **दूसरी प्रकिया–** सम्यग् पुरुषार्थ करें। लोक में सर्वत्र शुभ, अशुभ दो प्रकार की पुद्गल वर्गणा भरी पड़ी है। शुभ वर्गणा से सुख एवं अशुभ वर्गणा से दुःख की अनुभूति होती है। जब मन, वचन व काया के योगों की प्रवृत्ति शुभ होती है तो शुभ पुद्गल वर्गणा और इन योगों की प्रवृत्ति अशुभ होती है तो अशुभ पुद्गल वर्गणा का आत्मप्रदेशों से संयोग होता है, जिसे लोह चुम्बक के उदाहरण से समझा जा सकता है। ये संचित वर्गणाएँ ही सुख-दुःख की अनुभूति कराती हैं। इससे सुस्पष्ट है कि सुख-दुःख का संबंध सत्ता, सम्पत्ति, वैभव आदि से न होकर स्वयं की शुभ-अशुभ प्रवृत्ति से है। निर्धन, अकिंचन व्यक्ति भी शुभ योगों के माध्यम से सुखी और सत्ता, सम्पत्ति सम्पन्न व्यक्ति भी शुभ योगों के अभाव में दुःखी होते हैं। यह सुखी-दुःखी होने की सहज, मनोवैज्ञानिक एवं आगम सम्मत प्रक्रिया है। अतः हम सुखी होने व सुखी रहने हेतु इन दोनों प्रक्रियाओं पर ध्यान दें। सम्यग् पुरुषार्थ द्वारा सदा शुभ योगों में प्रवर्तन को तथा वर्तमान दशा को उदित कर्मों का विपाक समझकर संतोष व समभाव से जीवनयापन करें।

बस यही सुखी-दुःखी होने का रहस्य है। "धर्म करते रहो, मुस्कराते रहो।"

-डागा सदन, संघपुरा, जिला-टोंक-304001 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

भ्रष्टाचार : इतिहास, वर्तमान और भविष्य

देवर्षि कलानाथ शास्त्री राष्ट्रपति सम्मानित

पिछले कुछ अर्से में भारत में हर तरह के भयंकर भ्रष्टाचार ने जो भीषण कीर्तिमान बनाये हैं उन्होंने प्रत्येक भारतवासी का दिल दहला दिया है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि भ्रष्टाचार का यह स्तर निरन्तर उन्नति पर है। अगला भ्रष्टाचार पिछले भ्रष्टाचार से करोड़ों रुपये ऊपर का वजन लेकर आता है। यदि कोई भ्रष्टाचार का पिछले दो दशकों का डायरीबद्ध इतिहास लिखे तो पाएगा कि प्रतिवर्ष इसका स्तर वृद्धि पर रहा। इन दशकों से पूर्व पुराने पत्रकारों को स्मरण होगा इन्दिरा जी के समय के तथाकथित नागरवाला कांड का जिसमें किसी नागरबाबा के सूटकेस से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के केवल 60 लाख के नोट मिले थे। इसके बाद के घोटालों की रकमें बढ़ती गईं। ऐसे घोटालों और भ्रष्टाचारों की जैसे हर्षद मेहता कांड या हवाला कांड की रकम आज के घोटालों के सामने कितनी बचकानी लगती है। आप स्वयं देख सकते हैं। तेलगी के स्टांप घोटाले की राशि या मधु कौंडा द्वारा बटोरी सम्पत्ति की राशि, 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाले की भारी भरकम रकम के आगे पानी भरती नज़र आएगी। यह भ्रष्टाचार अब कार्यपालिका, विधायिका और वाणिज्य व्यवस्था तंत्र से लेकर न्यायपालिका और धर्मगुरुओं तक फैला दिखने लगा है।

इस वर्ष के इन भीषण भ्रष्टाचारों के उजागर होने से तो बड़ों-बड़ों का धैर्य जवाब दे गया है और यह चिन्तन प्रारंभ हो गया है कि आखिर भारत जैसे धर्मप्राण देश के मुँह पर यह कलंक क्यों लग रहा है कि भ्रष्टाचारी देशों में यह दूसरे नंबर पर आता है। तब अन्ना हजारे जैसे जननेता उसके विरुद्ध अनशन पर न बैठें तो और क्या करें? क्या इस देश में प्राचीन काल से इस प्रकार की भ्रष्टाचार की परंपराएँ रही हैं? क्या इस देश की माटी में इसके बीज अधिक पुराने समय से अंकुरित होते रहे हैं? हमारी संस्कृति और इतिहास क्या कहते हैं इस बारे में?

---

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी हेतु प्रेषित आलेख।

इतिहास–

शोध की दृष्टि से देखा जाए तो आप यह पाएँगे कि अत्यन्त प्राचीन देशों में उन अंचलों में जहाँ समृद्धि के संसाधन कम हैं, अनेक कारणों से, अनेक वर्गों में, विशेषकर उन सरकारी कर्मकरों में जिनकी कलम के बल से किसी व्यक्ति को बहुत बड़ा लाभ या हानि हो सकते हैं, नाजायज कमाई करने की मनोवृत्ति पनपना स्वाभाविक है। भारत में प्राचीन काल में भी ऐसा होता रहा है। गुप्तकाल के स्वर्णयुग में जब यह देश सोने की चिडियाँ कहलाता था, शकुन्तला नाटक लिखने वाले विश्वविख्यात कालजयी कवि कालिदास ने अपने इस कालजयी नाटक में भी सरकारी मुलाजिमों के मन में पनप रहे भ्रष्टाचार का हलका सा संकेत वहाँ दिया है जब शकुन्तला की अंगुली से दुष्यन्त द्वारा दी गई अंगूठी नदी के शचीतीर्थ में फिसलकर गिर जाती है तथा उस अंगूठी को कोई मछली निगल जाती है। अंगूठी की पहचान खो जाने के कारण शकुन्तला दुष्यन्त को आश्वस्त नहीं कर पाती है और दुत्कार दी जाती है। उस मछली को एक मछुआरा पकड़ता है और चीरता है तो राजा की मोहर वाली अंगूठी मिलती है। वह इतना ईमानदार और राजदंड से भयभीत भी है कि उस अंगूठी को राजा को लौटाने को राजदरबार में आता है। राजा के सिपाही उसे राजा तक पहुँचाने और यह प्रमाणित करने के बदले में कि उसने अंगूठी नहीं चुराई, मछली के पेट में मिली है, उससे मदिरालय में बैठकर शराब की बोतलों की रिश्वत माँगते हैं। इससे यह तो लगता है कि किसी तरह की 'स्पीड मनी' या इनाम उस समय भी प्रचलन में था।

प्राचीन इतिहास में तथा संस्कृत भाषा में ऐसी रिश्वत के लिए अनेक शब्द मिलते हैं। सच पूछा जाए तो नीति के जो चार उपाय में बतलाए गए हैं– साम, दाम, दण्ड और भेद, उनमें 'धन' शब्द ले–देकर काम निकालने का उपाय ही कहा गया है। आप्टे जैसे संस्कृत कोशकारों ने तो इसे स्पष्टतः 'रिश्वत' ही कहा है। 'उत्कोच' शब्द घूस या रिश्वत का ही सुप्रचलित पर्याय है। यह सामान्यतः राज कर्मचारी द्वारा ली जाती थी, ऐसे संकेत भी मिलते हैं। तब क्या इस पर हमारे शास्त्रकारों ने, सुयोग्य शासकों ने, न्यायकारी राजाओं ने कोई चिन्तन नहीं किया? कोई उपाय नहीं खोजे? यह प्रश्न प्रत्येक प्रबुद्ध मानस में उठना स्वाभाविक है।

इसका उत्तर आप खोजने लगे तो पाएँगे कि हमारे प्राचीन धर्मशास्त्रों को भी इस बात का पूरा एहसास था कि प्रशासन, धर्म, न्याय आदि प्रत्येक तंत्र

में अवैध कमाई के प्रति ललक स्वाभाविक है, साथ ही धर्मगुरुओं को पुजते और चाँदी काटते देखकर नकली धर्मगुरुओं का, पाखंडियों का और भ्रष्टाचारियों का पनपना भी, साथ ही राजशास्त्रों में और कौटिल्य जैसे मूर्धन्य विद्वानों के लिखे अर्थशास्त्रों में भी इस बात पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है कि राजतंत्र में और न्यायतंत्र में भ्रष्टाचार पनपना स्वाभाविक है, अतः इस पर किस प्रकार निगरानी रखी जाए और किस प्रकार उसका प्रतीकार किया जाए।

स्वयं मनु ने मनुस्मृति में स्पष्ट किया है कि नकली धर्मगुरु जनता को लूट सकते हैं- उन्हें मनु ने 'वैडालव्रतिक' कहा है जो बिल्ली की तरह लपकते हैं। उन्हें तिरस्कृत अर्थात् 'एक्सपोज' करना तथा बहिष्कृत करना आवश्यक बताया है। भागवत में बताया गया है कि श्री कृष्ण को पुजते देखकर कुछ लोग नकली श्री कृष्ण बन गए थे- जिन्हें 'मिथ्यावासुदेव' कहा गया है। उन्हें स्वयं श्री कृष्ण की पहल पर समाप्त किया गया। कौटिल्य ने बताया है कि किन कारणों से कर्मचारियों में लापरवाही या अनैतिक कमाई की ललक पनपती है। यदि उन्हें लगे कि उन पर किसी की निगरानी नहीं है, वे पकड़े भी जाएँ तो उन्हें बड़ा दंड नहीं मिलेगा तो वे भ्रष्टाचारी बन सकते हैं। निरन्तर निगरानी और निगरानी का भय, साथ ही दंड की अपेक्षा भी दंड का भय इस प्रकार के भ्रष्टाचार के प्रतीकार का मूलमंत्र बताया है कौटिल्य ने। 'शुक्रनीति' में भी ये सारे सिद्धान्त और उपाय स्पष्टतः विवेचित मिलते हैं।

महाभारत में भी इस प्रकार का विस्तृत विवेचन उपलब्ध है कि दंड का भय राज्य के नियंत्रण हेतु अत्यावश्यक है, प्रशासन के लिए 'दंड व्यवस्था' सबसे बड़ा शस्त्र होता है। ''दंडः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति'' महाभारत कहता है। अब आप सिंहावलोकन कर लें कि अब तक हुए घोटालों पर कितना दंड किस-किस को मिला? यदि नहीं मिला या नहीं के बराबर मिला तो कौन भ्रष्टाचार और घोटालों की बहती गंगा में हाथ धोना नहीं चाहेगा।

कारण-

एक बहुत बड़ा कारण पिछले दशकों में पनपते भ्रष्टाचार और अधिकाधिक धन समेटने की प्रवृत्ति के लिए जिम्मेदार है जिस पर समाज को, विशेषकर मीडिया को ध्यान देना चाहिए। भारत के प्राचीन सांस्कृतिक तंत्र की एक यह स्वचालित परम्परा थी कि यहाँ धन का या धनपति का केवल इसलिए सम्मान नहीं था कि वह समृद्ध है। ज्ञान का, त्याग का, तप का ही सम्मान था। मैं बहुधा कहा करता हूँ कि अकबर कालीन किसी धनपति का नाम या गुप्त कालीन

किसी सेठ का नाम इतिहास में कहीं सुना हो यह आप बताएँ जबकि इन युगों के सन्तों का, कालिदास, तुलसीदास जैसे निर्धन कवियों का नाम अमर है। केवल धनपति होना न समाज की दृष्टि में सम्मान का मापदण्ड था, न राज्य की दृष्टि में। भ्रष्टाचारी को काला मुँहकर गधे पर बिठाकर घुमाया जाता था। यह काम आज समाज करने लगे तो आप इसका असर देख सकते हैं।

इसके विपरीत आज हो यह रहा है कि मीडिया विश्व के सबसे बड़े धनपतियों की आरती उतारने हेतु उनकी सूची छापता है और भारत का कोई धनपति बिलगेट्स के आसपास पहुँचता है तो वह इसी कारण पूजनीय हो जाता है कि उसने धन बटोरा है। वह कैसे बटोरा गया है, पहले इस पर नज़र अधिक रखी जाती थी। गाँधीजी का पूरा जोर इसी पर था कि 'साधनों की शुद्धता' पहली कसौटी है हमारी । यदि अमरीका की तरह अधिकाधिक धनार्जन करना ही विश्व में सफलता का शिखर जीतना माना जाए तो कौन नहीं चाहेगा काले-गोरे किसी भी तरीके से धन बटोरना? क्यों नहीं पैदा होंगे तेलगी, मधु कौंडा या ए. राजा?

समाज के मूल्यांकन के मापदंडों में जिस दिन भ्रष्टाचार घृणा, हिकारत, अस्पृश्यता का पर्याय बन जाएगा, इस महामारी का आधा उपचार उसी दिन हो जाएगा। बाकी उपचार होगा भ्रष्टाचार पर दंड व्यवस्था कड़ी करने से और उसे पारदर्शी बनाने से, यह अब स्पष्ट हो गया होगा।

निवारण-

गत कालखंड में भारत में फैले भ्रष्टाचार के समूल नाश का नारा लेकर किए गए अनशनों, प्रदर्शनों, रैलियों आदि ने इस महामारी के विरुद्ध वातावरण अवश्य बना दिया है, किन्तु यह सभी का अपना अनुभव है कि विविध प्रकार के भ्रष्ट मार्गों से चाँदी काटकर गदराने वाले महाशय बड़ी संख्या में हैं, प्रभावी हैं जबकि सदाचारी सद् विचारी और ईमानदारी के निश्छल समर्थक अपने आपको अल्पसंख्यक अनुभव करने लगे हैं। प्रेसवाणी की यह चिन्ता स्वाभाविक है कि ऐसा क्या किया जाए जिससे ऐसे सत्यनिष्ठ और सद्विचारवान् व्यक्ति बढ़ें, सुगठित हों, सशक्त हों। यह तो सुविदित ही है कि चोरों का ही गिरोह होता है, साहूकार अकेला ही रहता है, गुटबन्दी नहीं करता, किन्तु आज आवश्यक हो गया है कि न केवल महानगरों में बल्कि उपनगरों और गाँवों में भी भ्रष्टाचार विरोधी संस्थाएँ या समाज गठित हों। उन्हें कुछ भी नाम दिया जा सकता है, 'सत्यसेवक समाज', 'सत्यनिष्ठा' 'मूल्यदृष्टि', 'उदात्त साधना', सत्पुरुष समाज, सत्यसेवी संस्थान आदि।

वास्तव में गाँधी के इस देश में, जहाँ लँगोटी लगाने वाले गाँधी के चरण बिड़ला जैसे करोड़पति छूते थे, जहाँ धन संचय की बजाय त्याग को नमन किया जाता था, आज धनपतियों की जो महिमा बढ़ी है उससे काले धन और भ्रष्टाचार के प्रति वह घृणा नहीं रही है जो पहले थी। उलटे आज करोड़ों खर्च कर तड़क-भड़क से विवाह करने वाले की प्रशंसा होती है, ईमानदारी और सादगी को बेचारगी समझा जाता है। वामपंथी आन्दोलनकारियों ने इस चिन्तन का स्पष्ट विरोध किया था। आप जानते ही हैं कि बंगाल में वामपंथी सरकार के मंत्री अपनी सारी तनख्वाह पार्टी कार्यालय में जमा कराते थे, गुजारे के लायक धन राशि लेते थे। वहाँ काले धन से, तड़क-भड़क से विवाह का प्रदर्शन होता तो या तो आयकर वालों का छापा पड़ता था या आन्दोलनकारियों का। आज हमें यह दृढ़ता दिखानी होगी कि सत्यनिष्ठ सम्मानित नागरिक यह नारा दें कि तड़क-भड़क वाले समारोहों का बहिष्कार करेंगे। मैं कहता ही रहता हूँ कि एक भ्रष्टाचारी को भी न्यायालय कड़ा दण्ड दे और उसका व्यापक प्रचार हो तो उसका जनसामान्य पर उचित असर होगा। समाज और संस्थाओं की उसे भर्त्सना मिले तो और भी अधिक असर होगा।

आपको याद ही होगा कि कुछ समय पूर्व प्रशासन सेवाओं के एक संगठन ने सर्वाधिक अयोग्य प्रशासकों की सूची प्रसारित की थी। उसी प्रकार सर्वाधिक निष्कलंक, ईमानदारी के लिए विख्यात राज्यसेवकों, कर्मचारियों की सूची बन सकती है। निष्कलंक और विशुद्ध सेवा देने वालों का सार्वजनिक सम्मान होना चाहिए। अब तक कोई ऐसा मंच उपलब्ध नहीं है जो 'ईमानदारी' पर पुरस्कार दे, अतः वीरता पर या मेरिट पर पुरस्कार की तरह ऑनेस्टी पर पुरस्कार क्यों न स्थापित किया जाए? आशा है जब से प्रशासकों की संपत्ति की सार्वजनिक प्रसारण व्यवस्था होने लगी है उसे देखकर अब किसी समर्थ चिन्तक के मानस में उपज अवश्य पैदा होगी कि 'ऑनेस्टी' और निष्कलंकता का भी कोई पुरस्कार होना चाहिए जो उस व्यक्ति को मिले जिसके पास मकान या धन की पूंजी भले ही न हो, निष्कलंक चरित्र की पूंजी हो। इससे भले लोगों की बिरादरी अवश्य बढ़ेगी।

वर्तमान-

पिछले कुछ समय की घटनाओं से आपको लग ही रहा होगा कि अन्ना हजारे का जादू सिर पर चढ़कर बोलने लगा है और सारा देश भ्रष्टाचार के इस सर्वभक्षी दानव से किसी भी प्रकार से पीछा छुड़ाने के लिए एक कतार में आकर

खड़ा होने को तैयार है। अब इसके परिणाम स्वरूप चाहे लोकपाल बिल पारित हो अथवा जन लोकपाल बिल (जन और लोक तो पर्यायवाची हैं) या सर्वजन लोकपाल बिल, इस दानव से सदा के लिए पीछा छूटना क्या आपको संभव और सरल लगता है? अंग्रेजी की उस उक्ति के अनुसार जो कहती है कि शाब्दिक उपदेश की बजाय आचरण का एक उदाहरण ही पर्याप्त होता है। जनता जब तक नहीं देख लेगी कि किसी एक भ्रष्टाचारी को जमकर दण्ड दिया गया है उसे विश्वास नहीं होगा कि यह दानव पीछा छोड़ देगा। पिछले पाँच दशकों के किस भ्रष्टाचारी को इस प्रकार 'जमकर दण्ड' मिला है, आप सोचकर देखें।

हमें याद आ रहा है कि कौटिल्य ने आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व भी यह कह दिया था कि जिन राज्य सेवकों की कलम के एक इशारे से जनता में लाखों के वारे-न्यारे हो सकते हैं वे पारिणामिक लाभ का कुछ तो जायज फायदा उठाना या उसमें हाथ बँटाना क्यों नहीं चाहेंगे? इसलिए भ्रष्टाचार तो कुछ स्थितियों में स्वाभाविक ही है, किन्तु वह आटे में नमक जितना ही हो इसका ध्यान राजा को रखना होगा। यदि वह छह प्रतिशत से अधिक पाया जाए तो भ्रष्टाचारी को और उस राज्यसेवक को जिसका कर्तव्य भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना है, हाथ काटने तक का दंड राजा दे सकता है। ऐसे उत्कट दंड का एक ही उदाहरण जनता को आश्वस्त करने को पर्याप्त होगा।

आपको लग ही रहा होगा कि जनता बेचारी तो इन समाचारों से भी आश्वस्त होने लगी है कि मंत्री स्तर के वे लखटकिया राजनेता जिन पर भ्रष्टाचार द्वारा करोड़ों कमाने का आरोप है, जमानत नहीं पा सके हैं, न उनकी लाड़ली बेटियाँ जो उसमें शामिल थीं और वातानुकूलित महलों में ऐश करने वाले ये लोग अभियोग के दौरान जेल की बैरकों में रहने को विवश हैं। यह बात अलग है कि वहाँ भी इन्हें खेलने को ताश, घर का खाना, अखबार आदि की सुविधा मिलने की गोपनीय खबरें मीडिया देता रहता है। ऐसे किसी एक दिग्गज को भी ऐसा दंड मिल जाए जिसे अंग्रेजी में "एकजेंप्लरी पनिशमेंट" कहते हैं तो उसका असर अन्य भ्रष्टाचारियों पर कितना होगा इसकी आप कल्पना कर ही सकते हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार उन्मूलन की बातें कहना या लोकपाल आदि के बिल खोदते रहना भ्रष्टाचार की महामारी से राहत नहीं दिला सकता, एक दो ठोस उदाहरणों की हम साँस रोक कर प्रतीक्षा कर रहे हैं। निश्चित है कि

उनसे वातावरण की इस गन्दगी का हटना अवश्य प्रारंभ हो जाएगा।

वस्तुस्थिति–

अभी जिस कालखंड में हमारा देश अपने सबसे प्रबल शत्रु 'भ्रष्टाचार' पर हल्ला बोलता नज़र आ रहा है और उसके विरुद्ध अनशनों, रैलियों, भाषणों, लेखों आदि के शस्त्रास्त्रों से भरपूर प्रहार की मुद्रा में है उसका स्वागत कौन ऐसा देशवासी है, जो नहीं करेगा? किन्तु क्या इन शस्त्रास्त्रों से भ्रष्टाचार के दानव का वध संभव है? यह प्रश्न आप अपने आप से पूछें तो आपकी आत्मा स्वयं इसका उत्तर दे देगी। इस प्रश्न के साथ यह अवश्य पूछिएगा कि यदि आपका स्वयं का काम इस दानव के क्षेत्राधिकार के लिए प्रसिद्ध महकमों से पड़ता है, जैसे पुलिस आपकी गाड़ी पर पोल्यूशन सर्टिफिकेट की चेकिंग करती है, परिवहन अधिकारी ड्राइविंग लाइसेंस बनाने में विलंब करता है, नगर निगम या राजस्व विभाग का व्यक्ति कर निर्धारण में या अन्य कार्य निपटाने में भारी रकम चाहता है, विद्युत विभाग कनेक्शन में देरी करता है तो आप क्या किसी भी प्रकार की रिश्वत (जिसे सभ्य भाषा में 'स्पीड मनी' या उपहार या 'ग्रेटिफिकेशन' कहा जाता है) देना हर्गिज मंजूर न कर ईमानदारी पर जोर देंगे या ''ले-दे-कर'' काम कराना पसंद करेंगे? यदि कानूनी झंझट या पुलिस की गिरफ्त से या लम्बे समय से बचने के लिए आप कुछ भेंट देना समझदारी समझते हैं तो भ्रष्टाचार पर या भ्रष्टाचारी पर ही सारा दोष मँढना कहाँ तक वाजिब है?

तात्पर्य यह है कि भ्रष्टाचारी जितना दोषी है उतना ही दोषी वह व्यक्ति भी है जो उसे रिश्वत देता है। कारण यह भी है कि यह दूसरे को रिश्वत देकर साफ बँचते देखता है, तो क्यों न स्वयं यह तरकीब आजमाना चाहेगा। अतः यदि भ्रष्टाचार का समूल नाश अभीष्ट है तो पहला काम यही करना होगा कि समस्त नागरिक अपने आपको इस संकल्प पर दृढ़ करें कि वे भ्रष्टाचार में साथ नहीं देंगे। तब उनका काम नहीं होगा या देर से होगा, यह तय है अतः इसके लिए प्रत्येक उच्चतर अधिकारी के द्वार सदा खुले रखने होंगे कि तत्काल उसके पास इसकी शिकायत जाए। पारदर्शिता के साथ-साथ यह ''खुले द्वार'' (ओपन डोर) की नीति आवश्यक है। उच्चतर अधिकारी वातानुकूलित कक्षों में नहीं बैठे रहेंगे, हर एक की सुनेंगे, यह कर्मचारी जानेगा तो भ्रष्टाचार का साहस नहीं कर पाएगा।

यह तो मैं सदा कहता रहा हूँ कि हमारी सामाजिक मूल्यदृष्टि ही

शासकीय तंत्र को या व्यापार तंत्र को अनापशनाप धन कमाने से रोक सकती है। जिस दिन धन सम्मान का मापदंड नहीं रहेगा उस दिन आधा भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा यह क्या आपको नहीं लगता? आज जो ईमानदार अधिकारी है, यदि उसके पास ऊँचा बंगला या लक्जरी कार नहीं है, दो चार नौकर नहीं है, स्वयं सामान बाजार से खरीद कर लाता है उसे समाज कितनी हेय दृष्टि से देखता है यह क्या आप नहीं देख रहे? वह बेचारा अपना मुँह दिखाने में शर्माता है, क्योंकि समाज के मापदंड ऊपरी तड़क-भड़क हैं। ये मापदंड जब तक नहीं बदलेंगे, भ्रष्टाचार रुक नहीं सकेगा यह क्या आसानी से समझने की बात नहीं।

मैं यह अनेक बार कह चुका हूँ कि हमारे समाज में प्रदर्शन-प्रियता, दिखावा और दंभ पिछले दिनों जिस कदर बढ़ा है, विशेषकर महानगरों और अभिजात वर्ग में, वह प्राचीन भारत में कभी नहीं था। आज किसी 'ऊँचे आदमी' के विवाह का निमंत्रण पत्र दो-चार सौ रुपये का न हो, सबसे मँहगे होटल या मैरिज गार्डन में डिनर न हो, करोड़ों रुपये खर्च कर किसी अभिनेता या राजनेता को उसमें न बुलाया जाए तो उसे 'ऊँचा' आदमी नहीं माना जाएगा। तब कौन ऐसा होगा जो काला धन इकट्ठा कर ऐसा दिखावा न करे। कल्पना कीजिए कि यदि आज गाँधी के उपदेशों का असर पुनर्जागृत हो जाए और समाज यह प्रतिज्ञा कर ले कि ऐसे तड़क-भड़क के दिखावे वाले विवाहों में ईमानदार व्यक्ति न जाए, उसका सार्वजनिक बहिष्कार किया जाए तो क्या आपको नहीं लगता कि काले धन के जादू का असर कम होगा और समाज की विकृत सोच कुछ सुधरेगी? यदि देश में कहीं भी किसी भी एक भ्रष्टाचारी को समाज वाला मुँह कर गधे पर बैठाकर दिखा दे और मीडिया उसका प्रचार करे तो क्या उसका तत्काल असर नहीं पड़ेगा?

पर ऐसा तब होगा जब मीडिया में भी वह सदाचार का बल हो जो गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे पत्रकारों में होता था। मीडिया में जब से 'पेडन्यूज' की महामारी व्याप्त हुई है, समाचार चैनल और अखबार जबसे माफिया के हाथों बिके हैं, तबसे उन्होंने धनपतियों की आरती उतारनी शुरु की है। जिस देश में त्याग का सम्मान धन से सौ गुना अधिक था वहाँ धन की आरती उतारी जाने लगी तो गाँधी जैसों का अवतरण होगा या दाऊद जैसों का, आप ही सोच देखिए।

हमारी मूल्यदृष्टि और मापदण्ड तत्काल बदलें तो भ्रष्टाचार के विरुद्ध

लगाए गए मोर्चों का कुछ असर होगा, अन्यथा दस-पाँच अन्ना हजारे भी कुछ नहीं कर पाएँगे। भ्रष्टाचारियों के दिए गए दंड का भी अधिकाधिक प्रचार आवश्यक है, अन्यथा आज का सोच तो यह है कि दंड देने वालों को भी सिक्कों से तोल कर खरीदा जा सकता है, न्यायपालिका भी भ्रष्ट हो गई है। ''सैयाँ भए कोतवाल, फिर डर काहे का?'' ''भ्रष्टाचार की जड़ राजनीति में है, ईमानदार पुलिस वालों और प्रशासकों को भी भ्रष्ट राजनेता और मंत्री न्याय नहीं करने देते, इस थीम पर बीसियों फिल्में बन चुकी हैं, अतः राजनेता को तो समाज ने सही परख लिया लगता है। अब बारी है प्रशासक, न्यायाधिकारी और मीडिया की। उनमें व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दापाश होना आज की माँग है। उसके बाद नंबर आएगा सेना का। अभी तो भगवान की कृपा से सेना में वह नौबत नहीं आई है। ईश्वर से प्रार्थना है कि कभी न आए वैसी नौबत।

-अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृतपीठ, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रधान सम्पादक 'भारती' संस्कृत मासिक, पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, सी/8, पृथ्वीराज रोड़, सी. स्कीम, जयपुर-302001 (राज.)

अभिमत

श्री सुनित कुमार जैन

दिसम्बर, 2011 की 'जिनवाणी' में प्रकाशित सम्माननीय सम्पादक महोदय डॉ. धर्मचन्द जी जैन लिखित आलेख ''भष्टाचार पर विचार'' पढ़कर लगा कि भ्रष्टाचार के हालात ऐसे हो रहे हैं कि याद आ जाती है एक शायर की पंक्तियाँ-

''बर्बादि-ए-गुलिस्तां करने को, बस एक ही उल्लू काफी था।
जहाँ हर शाख पे उल्लू बैठा है, अंजामें-गुलिस्ता क्या होगा।।''

स्वयं से आन्तरिक शुद्धि की शुरुआत करके संकल्पबद्ध हों तभी भ्रष्टाचार का खात्मा सम्भव है। बहुत शानदार आलेख के लिए सम्पादक महोदय जी का सहृदय साधुवाद। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में सम्माननीय लेखकों के आलेखों का शृंखलाबद्ध प्रकाशन ज्ञानवर्द्धक एवं प्रासंगिक रहा, बहुत-बहुत बधाई।

-जैन विहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)

संगोष्ठी–आलेख

उपनिषदों में सदसदाचार समीक्षा

डॉ. सरोज कौशल

शास्त्र का लक्षण करते हुए हमारे आचार्यों ने कहा है कि शास्त्र वही कहलाता है जो मानवमात्र को सत्कर्म में प्रेरित करता है और असत्कर्म से निवृत्ति का आदेश देता है–

प्रवृत्तिर्वा निवृत्तिर्वा नित्येन कृतकेन वा।
पुंसां येनोपदिश्येत तच्छास्त्रमभिधीयते।।[1]

उपनिषद् की सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रार्थना भी यही है–

असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

मनुष्य निरन्तर असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता है। असत् से निवृत्ति और सत् में प्रवृत्ति– यह शास्त्र का प्रयोजन है। उपनिषद्–साहित्य सिद्धान्त तथा प्रयोग, दोनों के द्वारा असत्–निवृत्ति तथा सत्–प्रवृत्ति से मानव–जीवन को अनुशासित करता है।

उपनिषद् साहित्य सदाचार को व्यापक पटल पर परिभाषित करता है। कठोपनिषद् में कहा गया है कि जो दुश्चरित्र हैं, जिनका मन अशान्त है, जो विक्षिप्त हैं, वे प्रज्ञान द्वारा भी ब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सकते हैं, ऐसे लोगों को पुनः पुनः संसार में आवागमन करना पड़ता है–

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।[2]

महानारायणोपनिषद् में कहा गया है कि पवित्र आचरण से पूत– पवित्र अन्तःकरण वाला व्यक्ति ही दुष्कृतों से पार होता है।[3]

---

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

सम्पूर्ण सदाचरण सत्यमूलक हैं। सत्यनिष्ठा, सत्यव्रत एवं सत्याचरण के अभाव में सभी व्रत, कर्म एवं आचरण निष्फल हो जाते हैं।

प्रश्नोपनिषद् अत्यन्त सरल शब्दों में सत्याचरण की महिमा को मण्डित करता है-

समूलो वा एष परिशुष्यति योऽनृतमभिवदति।[4]

सत्य जीवन का मूल है। जीवनवृक्ष को सम्वर्धित करने वाला रस है। जो अनृतभाषण करता है उसका समूल जीवन शुष्क हो जाता है। यहाँ अनृत भाषण उपलक्षण है, उसका अर्थ केवल अनृत भाषण पर्यन्त ही सीमित नहीं है, अपितु ऐसे समस्त आचरण जो शास्त्र सम्मत नहीं हैं, समाज द्वारा अनुमोदित नहीं हैं, वे सभी अनृतभाषण ही हैं। मनसा, वाचा तथा कर्मणा तीनों स्तरों पर अनृत का निषेध है।

बृहदारण्यकोपनिषद्[5] में ऋषि याज्ञवल्क्य ने मानव शरीर को अत्यन्त पवित्र माना है। नेत्र, कर्ण, नासिका, जिह्वा आदि को ऋषिरूप माना गया है। वे कहते हैं कि यह वाणी अग्निदेव है, नासिका वायुदेव है। नेत्र आदित्यदेव है, कान दिग्देव है, मन चन्द्रदेव है। इन इन्द्रियों को ब्रह्म नाम से अर्थात् अति महान् नाम से पुकारते हैं-**'वाग्वै ब्रह्मेति। प्राणो वै ब्रह्मेति। चक्षुर्वै ब्रह्मेति। श्रोत्रं वै ब्रह्मेति। मनो वै ब्रह्मेति।'**

उपनिषद् के इस महान सिद्धान्त पर विचार किया जाये तो यह कहा जा सकता है कि निःसंदेह मानवेन्द्रिय महान् हैं। जब तक हम इनकी पवित्रता और इनके गुणों के प्रति सजग नहीं होंगे तब तक आध्यात्मिक उत्कर्ष को प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

वैदिक चिन्तन में सदाचार और असदाचार का एकत्र कथन किया गया है-

ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतु,
स्त्रीषपवित्रा हृद्यन्तरादधे।
विद्वान् त्स विश्वा भुवनाभि,
पश्यत्यवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान्।।[6]

सत्य का रक्षक सुक्रतु अर्थात् सुकर्मा किसी से दबने वाला नहीं है। तात्पर्य यह है कि सदाचार के पथ पर चलने वाला सदा अदब्ध अर्थात् अदम्य रहता है। कनक और कामिनी उसके ईमान को डिगा नहीं सकते। तात्पर्य यह है

कि वह प्रत्येक अवस्था में अचल तथा निर्द्वन्द्व रहता है।

वह सर्वज्ञ प्रभु सब स्थानों को देख रहा है। वह असेवनीय, असदाचारी और अव्रतियों को गर्व में गिरा देता है।

इस प्रकार अर्थवाद का आश्रय लेकर सदाचार और असदाचार की फलश्रुति का शास्त्र में स्पष्ट कथन किया गया है।

अदम्यता, सुकर्म और पवित्रता – इन तीनों के संयोग का ही नाम ऋत अथवा सदाचार है। यद्यपि सदाचार की रक्षा सर्वातिशय कठिन है तथापि जो इस साधना को आचरण बना लेता है वह सत्य को प्राप्त करता है। सत्य तो परम तत्त्व है।

शास्त्र असदाचरण और सदाचरण के आधार पर ही दस्यु, आर्य और देव का लक्षण प्रस्तुत करता है–

दस्यु– अनृत दुराचार है। ऋत सत्य या सदाचार है। अनृत अथवा दुराचार का जो व्यवहार करते हैं वे दस्यु हैं।

आर्य– ऋत अथवा सदाचार का जो व्यवहार करते हैं वे आर्य हैं।

देव– सत्य अथवा परम तत्त्व में संस्थित होकर जो व्यवहार करते हैं वे देव हैं।

अथर्ववेद में पाप के परित्याग हेतु ईश्वर की उपासना का विधान है–

व्यूहं सर्वेण पाप्मना वियक्ष्मेण समायुषा।[7]

क्योंकि दुष्कर्मी व्यक्ति सत्य का पथ पार नहीं कर सकते– 'ऋतस्य पन्था न तरति दुष्कृतः।' जबकि मनुष्य की यह तीव्र इच्छा होती है– 'एनो मानिमाम्'[8]। मैं पापों से लिप्त न होऊँ। इस प्रसङ्ग में यह ध्यातव्य है कि पाप का अर्थ मानसिक दुष्कर्म हैं। अतः मन से शुद्ध रहना बहुत स्वास्थ्यवर्धक प्रयोग है–

वि शक्रः पापकृत्यया[9]

वह शक्र हमें पापों से दूर रखे। बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार सत्य ही ब्रह्म है, सत्य ही धर्म है। इस सत्यधर्म से बढ़कर अन्य कुछ भी नहीं है।[10]

सत्यधर्म साक्षात्कार की विधिः– सत्यधर्म का साक्षात्कार करने के लिए प्रत्येक वस्तु में निहित निर्भ्रान्त शुद्ध सत्य को जानने के लिए, बाहर से आपाततः रमणीय एवं हितकर दिखाई देने वाले पदार्थों के प्रति आसक्ति एवं लालसा का त्याग अवश्यंकरणीय है। लोभ एवं तृष्णा से सत्य का मुख आच्छादित हो जाता है। इस आच्छादन को दूर किये बिना सत्य का दर्शन कैसे हो सकता है?

सकारात्मक भावना : पापमुक्ति का साधन

मनुष्य अहोरात्र जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति की अवस्थाओं में देवगण, पितृगण, मनुष्य तथा अन्य प्राणियों और स्वयं के प्रति भी अनेक पापकर्म करता है। उसे अहर्निश कृतपाप नाश करने की तथा स्वयं को अधिकाधिक पवित्र बनाने की आवश्यकता है। सन्ध्योपासना तथा गायित्रीजप का साधन के रूप में निर्देश है। जबकि वर्तमान काल में हम इसका अर्थ सकारात्मक भावना कर सकते हैं। सकारात्मक भावना से संरचनात्मक क्रियाविधि का पालन करते हुए पापमुक्ति का प्रयास अनवरत रूप से किया जाना अपेक्षित है-

यदहना कुरुते पापं तदहनात् प्रतिमुच्यते।
यद्रात्रियात्कुरुते पापं तद्रात्रियात्प्रतिमुच्यते।।[11]

उपनिषद् यह संकेत भी करता है कि मनुष्य में जिस दोष की प्रधानता हो उसे दूर करने के लिए उस दोष के विपरीत गुण का विस्तार करने का अभ्यास अपेक्षणीय है। यथा कामलिप्साप्रधान व्यक्ति को 'दम' (संयम) का, क्रूर प्रकृति वाले को 'दया' का एवं धनलोलुप व्यक्ति को 'दान' देने का अभ्यास करना चाहिए।

छान्दोग्योपनिषद् में स्पष्ट कहा गया है कि मनुष्य की ऊर्ध्वगति अथवा अधोगति उसके ही सुकृत एवं दुष्कृत पर निर्भर है।[12]

महानारायणोपनिषद् में यह कहा गया है कि जैसे पुष्पित वृक्ष की सुगन्ध का दूर से ही भान हो जाता है, इसी प्रकार पुण्यकर्म का भी सत्कीर्ति की गन्ध द्वारा ज्ञान हो जाता है।

'यथा वृक्षस्य सम्पुष्पितस्य दूरादवगन्धो वात्येवं पुण्यस्य कर्मणो दूराद् गन्धो वाति।'

ब्राह्मण ग्रन्थों में जब कहा गया- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'[13] अर्थात् यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है और यही सदाचार है। संसार में हो रहे यावन्मात्र कर्म का उत्तमांश यज्ञ ही है। जो यजन करता है वह पाप से मुक्त हो जाता है-

पाप्मानं ह्येष हन्ति यो यजते।
स्वर्स्मात् पाप्मनो निर्मुच्यते,
य एवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति।[14]

अतः ऋग्वेद के स्वर में स्वर मिलाकर हम यह कहें- 'स्वस्ति पन्थामनुचरेम' 5/51/15

हम कल्याणकारी पथ के पथिक बनें। यह पृथ्वी हमारे यज्ञ से, श्रेष्ठतम कर्म से तथा सुकर्म की पुण्यगन्ध से सदैव सुवासित होती रहे।

सन्दर्भ:-

1. मीमांसाश्लोकवार्तिक, काशी, 1998 पृ. 476
2. कठोपनिषद्, 1/2/24, 1/3/7
3. चरणं पवित्रं विततं पुराणं येन पूतस्तरति दुष्कृतानि।
   तेन पवित्रेण शुद्धेन पूता अतिपाप्मानमरातिं तरेम।।
4. प्रश्नोपनिषद्, 6/1
5. बृहदारण्यकोपनिषद्, 1/3, 12-16
6. ऋग्वेद, 9/73/8
7. अथर्ववेद- 3/31/11
8. ऋग्वेद - 10/128/4
9. अथर्ववेद - 3/31/2
10. सत्य ह्येव ब्रह्म, 4/1/1 बृहदारण्यकोपनिषद्
11. महानारायणोपनिषद्, 34/2
12. छान्दोग्योपनिषद्, 5/10/17
13. शतपथब्राह्मण, 1/7/1/5
14. तदेव, 2/2/3/6

-सह-आचार्य, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

Some Pearls for Life

Ms. Minakshi Jain

1. Everybody knows how to build a beautiful house, but only a few know how to live beautifully in the house.
2. Rivers never go reverse. So try to live like a river. Forget your past and focus on your Future.
3. Lead your life similar to a dictionary, providing meaning to everyone who refers you.
4. One thing I learnt from life is that getting UPSET will not help. Always getting up to set the things right will help.
5. Cold water and hot iron remove wrinkles from cloth, similarly the cool mind and warm heart remove worries of life. *-Surana Ki Badi Pole, Nagaur (Raj.)*

English-Section

Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (4)

Prof. Sagarmal Jain

(Continued from the last issue.....)

Door of Liberation Open to all

Jainism holds that the followers of other sects can also achieve emancipation or perfection, if they are able to destory attachment and aversion. The gateway of salvation is open to all. They do not believe in the narrow outlook that "only the follower of Jainism can achieve emancipation, others will not". In *Uttarādhyayana* there is a reference to anyaliṅga-siddhas i.e. the emancipated soul of other sect[23]. The only reason for the attainment of perfection or emancipation, according to Jainas, is to shun the vectors of attachment and aversion. *Haribhadra*, a staunch advocate of religious tolerance remarks : "One, who maintains equanimity of mind will certainly get emancipation whether he may be a *Śvetāmbara* or Digambara or Buddhist or any one else.[24] It is this broad outlook of the Jainas which makes them tolerant to the non-violence of thought.

About the means of liberation, the Jainas are also broad minded. They do not believe that their mode of worship or their religious practice only represents the way to reach the goal of emancipation. For them, not external modes of worship, but the right attitude and mentality are the things that make religious practices fruitful. The *Ācārāṇga-sūtra* mention that the practices which are considered to be the cause of bondage may be the cause of liberation also.[25] It is the intrinsic purity not the external practices, which make the person religious. Haribhadra propounds that neither one who remains without clothes nor one who is white clad, neither a logician nor a metaphysician, nor a devotee of personal cult will get liberation unless he overcomes his passions.[26] If we accept the existence

of the diversity of modes of worship according to the time, place and level of aspirants and lay stress on the intrinsic purity in religious matters then certainly we cannot condemn religious practices of a non-absolutist and it does not divide them into the category of true and false. They becomes false only when they reject the truth-value of others[27]. It was this broader outlook of non-absolutism which made Jainas tolerant.

While expounding this tolerant outlook of the Jainas, *Upādhyāya Yaśovijaya* (17th cent. A.D.) maintains a true non-absolutist does not disdain any faith but treats all the faiths equally as a father does to his sons, for, a non-absolutist does not have any prejudiced and biased outlook. A true believer of *'Syādvāda'* (non-absolutism) is one who pays equal regard to all the faiths. To remain impartial to the various faiths is the essence of being religious. A little knowledge which induces a person to be impartial is more worth while than the unilateral vast knowledge of scriptures.[28]

Non-personalism, A Keystone for Tolerance

Jainism opposes the person-cult (person-worship) for it makes the mind biased and intolerant. For the Jainas, the object of veneration and worship is not a person but perfectness i.e. the eradication of attachment and aversion. The Jainas worship the quality or merit of the person. In the sacred *namaskāra-mantra* of the Jainas, veneration is paid to the spiritual-posts such as *arhat, siddha, ācārya* and not the individuals like *Mahāvīra, Ṛṣabha* or anybody else. In the fifth pada we find that the veneration is paid to all the saints of the world. The words 'loye' and 'Savva' demonstrate the generosity and broader outlook of the Jainas[29]. It is not person but his spiritual attitude which is to be worshipped. Difference in name, is immaterial since every name at its best conotes the same spiritual perfection, *Haribhadra* in the *Yogadṛṣti-samuccaya* remarks that 'the ultimate truth transcends all states of worldly existence, called *nirvāṇa* and is essentially and necessarily 'single' even then it is designated by different names like

Sadāśiva, Parabrahman, Siddhātmā, Tathāgata, etc.[30] Not only in the general sense but etymologically also they convey the same meaning. In the *Lokatattvanirṇaya* he says, "I venerate all those who are free from all vices and filled with all virtues, be they *Brahmā, Viṣṇu, Śiva* of *Jina*"[31]. This is further supported by various Jaina thinkers of medieval period as *Akalanka, Yogindu, Mānatuṇga, Hemcandra* and many others. While worshiping Lord Siva the Jaina pontiff *Hemcandra* says: " I worship those who have destroyed attachment and aversion, the seeds of birth and death, be they *Bramhā, Viṣṇu, Śiva* or *Jina*"[32]. It is important that Jains do not treat others as false. This liberalism of the Jainas on the methods of worship can be supported by the legends of the previous lives of *Mahāvīra.* It is said that *Mahāvīra* in his previous existences, was many times ordinated as a monk of other sects, where he practiced austerities and attained heaven.

As for scriptures, the Jainas outlook is like wise liberal. They firmly believe that a false scripture (*Mithyā-Śruta*) may be a true scripture (*Samyak-Śruta*) for a person of right attitude; and true scripture may turn false for a person of perverse attitude. It is not the scripture but the attitude of the follower which makes it true or false. It is the vision of the interpreter and practitioners that counts. In the *Nandīsūtra* this standpoint is clearly explained.[33] Thus we can say that the Jainas are neither rigid nor narrowminded in this regard.

References of Religious Tolerance in Jaina Works

References to religious tolerance are abundant in Jainas history. Jaina thinkers have consistently shown diference to other ideologies and faiths. In the *Sūtrakṛtānga* the second earliest Jaina work (c. 2nd cent. B.C.), it is observed that those who praise their own faith and views and discard those of their opponents, possess malice against them and hence remain confined to the cycle of birth and death.[34] In another famous Jaina works of the same period, the *Isibhāsiyāiṁ,* the teaching of the forty five renowned saints of *Śramanical* and

Brahmanical school of thought such as *Nārada, Bhāradvāja, Mankhali-Gośāla* and many others have been presented with due regards.[35] They are remembered as arhatrsi and their teachings are regarded as an *āgama.* In the history of world religions there is hardly any example in which the teachings of the religious teachers of the opponent sects were included in one's own scriptures with due esteem and honour. Evidently, it indicates the latitudinarian and unprejudiced outlook of the earliest Jaina thinkers. We also have a reference to religious tolerance in the *Vyākhyāprajñapti,* one of the early works of the Jainas, When an old friend of *Gautama,* who was initiated in some other religious sect, came to visit him, *Mahāvīra* commanded *Gautama* to welcome him and *Gautama* did so.[36] Accroding to *Uttarādhyayana,* when *Gautama,* the chief disciple of *Mahāvīra* and *Keśī,* a prominent pontiff of *Pārśvanātha's* sect met at *Kośambi,* both paid due regard to each other and discussed the various problems dispassionately and in gentle and friendly manner about the differences of both the sects.[37]

Haribhadra has not only maintained this *latitudinarian* outlook of earlier *Jainācāryas,* but lent new dimension to it. He was born in the age when the intellectuals of the India were engaged in hair-splitting philosophical discussions and in relentless criticism of one other. Though he also critically evaluated the other philosophical and religious systems, his outlook was fully liberal and attempted to see the truth of his opponent's logic also.

In the *Śāstravārtā-samuccaya,* which is one of the foremost works illustrating *Haribhadra's* liberal outlook, it is mentioned that the great saint, venerable *Lord Buddha* preached the doctrine of *momentariness* (*kṣaṇikavāda*), non-existence of soul (*anātmavāda*), idealism (*vijñānavada*) and nihilism (*Śūnyavāda*) with a particular intention to vanish the mineness and desire for worldly objects and keeping in view the different levels of mental development of his followers, like a good physician who prescribes the medicine according to the

disease and nature of the patient.[38] He has the same liberal and regardful attitude towards *Sāṁkhya* and *Nyāya* schools of Bhrahmanical philosophy. He maintains that naturalism (*Prakṛtivāda*) of *Sāṁkhya* and *Īśvara kartṛttvavāda* of the *Nyāya* school is also true and justified, if viewed from certain standpoint[39]. Further, the epithets such as the great saint (mahamuni), the venerable (arhat), the good physician (Suvaidya) used by him for Buddha and for Kapila shows his generosity and deference to other religious leaders. *Haribhadra's* crusade against sectarianism is unique and admirable in the history of world-religions.

(Continue in next issue)

References:-

23. itthi purisiddha ya taheva ya napuṁsaga/saliṁge annaliṁge gihiliṁge taheva ya/- Uttarādhyayana, 36/49.
24. seyambaro vā asambaro vā buddho vā taheva annovā samabhāvabhaviyappā lahai mukkhaṁ na saṁdeho. -Haribhadra, Quoted in Jaina, Bauddha aur Gītā ke Ācāradarśano ka Tulantmaka Adhyayan, by Dr. Sagarmal Jain. p.5. Vol. II, 1st Ed.
25. je āsavā te parissavā je parisavā te āsavā- Ācārāṇgasūtra, 1/4/2
26. nasāmbaratve na sitāmbaratve, na tarkavāde na ca tattvavāde, na pakṣasevāśrayena mukti Kaṣāya mukti kila muktireva. -Upadeśataraṅgiṇi, Haribhadra, Bhurabhai Harsacandra, Varanasi, V.S. 2437. 1/8, P. 98
27. ṇiyayavayaṇijjassaccā, savvanayā paraviyālane moha te uṇa ṇa diṭṭhasamao vibhayai sacce va aliye vā -Sanmati Prakaraṇa, 28. Siddhasena, Jñānodaya Trust, Ahmedabad, 1963.
28. yasya sarvatra samatā nayeṣu tenayeṣviva tasyānekāntavādasya kva nyunādhikasemuṣī tenā syādvādamālambya sarvadarśanatulyatāṁ/ moksoddeśāvi (dvi) śesena yah pasyati sa śastravit//70// mādhyasthyameva śāstrārtho yena taccāru siddhyati/ sa eva dharmavādaḥ syādanyadbaliśavalganam//71// mādhyasthyasahitaṁ hyekapadajñānamapi pramā/ āstrakotiḥ vṛthaivānyā tathā coktaṁ mahātamanā//73// -Adhyatmopanisat-Yośovijaya, Sri Jaina dharmarprasaraka Sabha Bhavanagar, 1st Ed., Vikram, 1965
29. namo Arahaṁtāṇaṁ/namo siddhāṇaṁ/namo Āyariyāṇaṁ/ namo

Uvajjhāyāṇaṁ/ namo loye savva sāhūṇaṁ.
-Vyakhyāprajñapti, mahāvira Jaina Vidyalaya, Bombay, 1/1.

30. Sadāśivaḥ param brahma siddhātmā tathateti ca/
'śabdaistad ucyate'navarthad ekaṁ evaiyamādibḥih//
-Yogdṛṣtisamuccaya-Haribhadra, Lalbhai Dalpatbhai Bharatiya Sanskriti Mandir, Ahmedabad, 1st Ed. 1970, 130
31. yasya nikhilaśca doṣā na santi sarve gunasca vidyante/
brahmā vā viṣṇurvā haro jino vā namastasmai//
-Lokatattvanirṇaya, Haribhdra, Sri Jainagrantha Prakaśaka Sabha, Ahmedabad, Vikram 1994, 40
32. bhavabījāṅkurajananā rāgadyaḥ kṣayamupagata yasya/
brahma vā viṣṇurvā haro jino vā namastasmai//
-Mahādeva stotra, 44 (Published in Paramarsa Svadhyaya Granth Samgraha).
33. eyāiṁ micchāditthissa micchattapariggahiyāiṁ
micchasuyaṁ, eyaṇi ceva sammadditthissa
sammattapariggahityāiṁ, Sammasuyam,
ahavā micchaditthissavi sammasuyam, Kamhā?
sammattaheuttaṇṇo, Jamhā te micchaditthiya, tehiṁ ceva
amachim coiya samaṇa kei sapakkhaditthio vamenti,
settam micchasuyaṁ.
vṛti-etāni bharatadini sāstrāni mithyadṛṣteh
mithyātvaparigrhitāni bhavanti, tato
viparītābhinivesavrddhihetutvaṁ mithyāśrutam etānyeva
ca bharatadini śastrani samyagdrsteh
samyakivaparigrhitāni bhavanti--Nandisūtra,
Sri Mahāvīra Jaina Vidyalalya, Bombay, 1st ed. 1968, 72, P.30.
34. sayaṁ sayaṁ passaṁsaṁtā garahaṁtā paraṁ vayaṁ/
je utattha visussaṁti, saṁsāraṁ te viussiya//
-Sūtrakṛtāṅga 1/1/2/23.
35. devandradena Arahata isina buiyaṁ/-Isibhāsiyaim, 1/1, See also the names of its various chapters, edited by Dr. Walther Schubring, L.D. Instt. of Indology, Ahmedabad 9, 1974.
36. he khamdaya! sagayam, Khamdaya! Susagayam-Bhagavatī, 2/1.
37. kesīkumāra samaṇe goyamaṁ dissama gayaṁ/
padirūvaṁ padivattiṁ sammaṁ sampadivajjaī//
-Uttarādhyayana sūtra, Sanmati Jñānpitha, Agra, 1st Ed. 23/16.
38. Sāstravārtāsamuccya, L.D. Instt. Ahmedabad, 1sted., 1969. 6/464, 65, 67.
39. Ibid. 3/207 and 3/237.

संगोष्ठी-आलेख

श्रावकाचार में व्याप्त विकृतियाँ एवं निवारण

श्री प्रकाशचन्द जैन

श्रावक– जो श्रद्धावान, विनय-विवेकवान तथा क्रियावान होता है वह श्रावक कहलाता है।

श्रावकाचार– ज्ञान, दर्शन, चारित्राचरित्र, श्रुत, सामायिक, 12 व्रत, 11 प्रतिमा, 3 मनोरथ, 14 नियम आदि की साधना करना श्रावकाचार है।

जैसे अन्य क्षेत्रों में विकृतियाँ बढ़ रही हैं उसी प्रकार श्रावकाचार में भी विकृतियाँ बढ़ती जा रही है, उनमें मुख्य विकृतियाँ इस प्रकार हैं:-

1. **ज्ञानाराधन में न्यूनता**– प्राचीन समय में श्रावकों के लिए अभिगयजीवा-जीवे, पवयण-कोविए, ससमयपरसमय-विसारए आदि विशेषण लगते थे जो उनकी ज्ञान आराधना के प्रतीक कहे जा सकते हैं। आज श्रावकों के जीवन में ज्ञानाराधना का स्तर बड़ा हास्यास्पद सा है। अनेक श्रावक तो नवतत्त्वों के नाम तक भी नहीं जानते। आगम-शास्त्रों की तो बात ही क्या करें। यदि कुछ लोग पढ़ते भी हैं तो ऊपर-ऊपर से, गहराई तक नहीं पहुँचते। भेद-प्रभेदों को याद करके ही इतिश्री समझ लेते हैं।
2. **दर्शन(श्रद्धा) दोष में**– श्रावकों का श्रद्धा का स्तर बहुत ऊँचा होता था। मारणान्तिक कष्ट आने पर भी धर्म से विचलित नहीं होते थे। उनके रोम-रोम, हड्डी और मिंजा तक में धर्मश्रद्धा व्याप्त रहती थी। धम्माणुरागरत्ता, अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता आदि विशेषणों से उनका शास्त्रों में परिचय प्राप्त होता है। वर्तमान में श्रावकों की श्रद्धा बड़ी डांवाडोल दिखाई देती है। दर-दर पर माथा टेकते हुए देखे जा सकते हैं।
3. **12 व्रतों में अरुचि**– भगवान के एक-एक प्रवचन को सुनकर अनेक लोग श्रावक-श्राविका के रूप में दीक्षित हो गये। भगवान महावीर के 4 लाख 77 हजार श्रावक-श्राविका व्रतधारी थे जो निरतिचार रूप से व्रतों

---

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

की पालना का लक्ष्य रखते थे। यदि कोई अतिचार लग जाता तो सुबह-शाम प्रतिक्रमण करके उसकी शुद्धि कर लेते थे। ऐसे श्रावकों की प्रशंसा समय-समय पर स्वयं भगवान ने की। आज अनेक आचार्यों एवं सन्त-सतियों के प्रभूत प्रवचन सुनने पर भी लोग व्रत अंगीकार नहीं करते। यदि कुछ लोग कर भी लेते हैं तो उनके निरतिचार पालन पर जोर नहीं देते या शुद्धीकरण के लिए प्रतिक्रमण की साधना नियमित नहीं करते। व्रतों का लेखा-जोखा नहीं रखते, जिससे जीवन में चमक नहीं आती। अहिंसा अणुव्रत की पालना करने वाले श्रावकों में आज डरपोक वृत्ति बढ़ती जा रही है।

अनेक बदमाश पूरे समाज को डराकर लूट-खसोट करके चले जाते हैं। अहिंसा की अनुपालना करने वाला समाज उनको देखता रहता है, प्रतिकार नहीं करता। क्या श्रावक का प्रथम व्रत हमें कायरता सिखाता है? अन्याय का प्रतिकार करना श्रावक का कर्तव्य होना चाहिए। आचार्य जवाहर ने कहा था-"अन्याय को सहने वाला भी उतना ही दोषी है जितना अन्याय करने वाला।"

श्रावकों में आज टेक्स चोरी की प्रवृत्ति बढ़ रही है। खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट की जा रही है। सदाचार का स्तर गिरता जा रहा है। धन को ग्यारहवाँ प्राण मानकर येन-केन प्रकारेण उसी का संचय करने में जिन्दगी के अनमोल क्षण व्यतीत किये जा रहे हैं। खाने-पीने, भोगने, घूमने आदि की स्वच्छन्दता बढ़ रही है। मर्यादा की भी जाती है तो केवल गिनती पूरी करने के लिए। भोगों की लालसा घटाने का प्रयास नहीं दिखाई देता। निन्दा-विकथा, गप्पे, ताश-खेल आदि में समय बिताकर अनर्थ का पाप इक्कट्ठा करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

सामायिक, संवर-दया, पौषध आदि में एक क्रियाकाण्ड का रूप आता जा रहा है। जीवन में समताभाव की उपलब्धि, पापभीरुता व आत्मगुणों के पौषध पर बल कम दिखाई देता है। संख्यात्मक विकास पर अधिक जोर है, गुणात्मक विकास पर कम। साधु-साध्वियों को निर्दोष आहार-पानी, स्थान आदि उपलब्ध होना कठिन होता जा रहा है। अचित्त पानी पीने पर ध्यान नहीं है। बिसलरी और फ्रीज के पानी का उपयोग अधिक होने से निर्दोष पानी मिलना मुश्किल हो रहा है। रात्रिभोजन त्याग के अभाव में खाने का समय दिन में लेट

होने से समय पर गोचरी मिलना दुष्कर हो गया है। शाम के समय तो नहींवत् मिलती है। मिलती भी है तो निर्दोष मिलना कठिन है।

प्रतिमा– प्राचीन काल में ज्यों ही श्रावक अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से निवृत्त हो जाते थे, व्यापार व्यवसाय का भार अपने पुत्रों को सौंपकर विशिष्ट धर्माराधना के लिए प्रतिमाओं की आराधना में लग जाते थे। आज प्रतिमाधारी श्रावकों का दुष्काल नज़र आता है।

मनोरथ– श्रावक के जीवन में तीन मनोरथों का चिंतन विशेष कर्मनिर्जरा का कारण है, किन्तु वर्तमान में मनोरथ वचोरथ बनते जा रहे हैं। चिन्तन का स्थान बोलने, बुलवाने ने ले लिया है। पहले मनोरथ में आरम्भ परिग्रह घटाने की बात बोलते हैं, लेकिन मन तो बढ़ाने की चाह में लगा रहता है। दूसरे में पंचमहाव्रतधारी बनने की बात कहते हैं लेकिन यदि कोई घर का सदस्य साधु बनना चाहे तो उसे रोकने के लिए कोई भी हथकण्डे अपनाने में पीछे नहीं रहते। 14 नियम की साधना में भी गिनती ही प्रमुख रहती है, आसक्ति की कमी पर जोर नहीं रहता।

इसी प्रकार जीवदया, साधर्मि-वात्सल्य, समाज-सेवा, संघसेवा, परोपकार, साधु-साध्वियों की गोचरी, विहार, चिकित्सा आदि सेवा, पशु-पक्षियों के लिए दाना-चारा, पानी, चिकित्सा सेवा, बच्चों में संस्कारों के लिए धार्मिक पाठशालाओं का संचालन जैसे कार्य भी श्रावकाचार की परिधि में ही आते हैं, उनके प्रति समाज की उदासीनता चिन्ता व चिन्तन का विषय है।

निवारण के उपाय

1. श्रावकों के लिए एक न्यूनतम आचार संहिता बनाई जाय जिसका प्रत्येक के लिए पालन करना अनिवार्य हो। संघ के पदाधिकारियों का चयन इन्हीं में से किया जाय, अन्य का नहीं।

   आचार संहिता– 1. सप्तकुव्यसन का त्याग, 2. नवकार मंत्र पर पूर्ण श्रद्धा, 3. नवतत्त्व का ज्ञान, 4. यथाशक्ति 12 व्रतों की धारणा। ये चार विशेषताएं जिसमें हो वह ही संघ का पदाधिकारी हो। इस आचार संहिता के स्टीकर बनाकर घर-घर में लगाये जायें। पत्र-पत्रिकाओं में इसे प्रचारित-प्रसारित किया जाय।

2. नवतत्त्वों के स्वरूप की सरल भाषा में जानकारी देने वाली पुस्तक तैयार कर घर-घर में वितरित की जाए।

3. नवकार मंत्र के आधार पर देव-गुरु-धर्म के सही स्वरूप को स्पष्ट करने वाले लेख, पेम्पलेट, पुस्तक आदि प्रकाशित की जाएं।
4. "धन की अपेक्षा धर्म का महत्त्व कई गुणा अधिक है।" इस तथ्य को लोगों को समझाने पर जोर दिया जाए।
5. समाज में ज्ञानवान, सदाचारी, व्रतधारी श्रावक-श्राविकाओं का आदर-सम्मान बढ़ना चाहिए।
6. 12 व्रतों के स्वरूप को समझाकर व्रती श्रावक तैयार किए जायें।
7. बच्चों में सुसंस्कारों के लिए धार्मिक पाठशाला, शिविर, संगोष्ठियाँ आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
8. समाज में सेवा के उपक्रमों को सुनियोजित ढंग से आगे बढ़ाना चाहिए। इसके लिए सेवाभावी युवकों को आगे आना चाहिए।
9. आदर्श श्रावक-श्राविकाओं के जीवन वृत्तान्त लोगों तक पहुँचाने चाहिए।
10. मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ इन चार भावनाओं को जीवन में स्थान देना चाहिए।
11. असाम्प्रदायिक वृत्ति को अपनाकर 'सच्चा सो मेरा' सिद्धान्त को स्वीकार करना चाहिए।
12. श्रावकों को श्रावक-प्रतिमाएँ स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाय तथा प्रतिमाओं का स्वरूप समझाया जाय।
13. साधु-साध्वियों की गोचरी, विहार व चिकित्सा सेवा के लिए प्रत्येक गाँव में समाज के लोगों की एक समिति बनाकर असाम्प्रदायिक वृत्ति से सेवा की जाय।
14. सामायिक, संवर-दया एवं पौषध की साधना का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे शुद्ध आराधना कर आत्मलाभ प्राप्त किया जा सके।
15. एक युवा भाई-बहिनों की टीम घर-घर में जाकर गोचरी सम्बन्धी नियमों की जानकारी दें। सचित्त-अचित्त का विवेक करावे, धोवन पानी तैयार करने की विधि बतावे जिससे साधु-साध्वियों को निर्दोष गोचरी-पानी मिल सके और हम अपने 12 वें व्रतों की पालना कर सकें।

-प्राचार्य, श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ,
गणपति नगर, जलगाँव (महा.)

संगोष्ठी-आलेख

CORRUPTION : Is it a Social Compulsion or A Way out?

Dr S.P. Gupta

Corruption is one of the greatest challenges of our age by which most of the societies of the globe are confronted with. In the new millenium, where we talk about higher G.D.P., good quality of life and good governance , almost all of us are conscious and concerned about the corruption to a greater or lesser extent. It is because, it poses multi-dimensional challenges to our environment, human rights, democratic and fundamental rights and freedom of common men. It also undermines development and tends to deepen poverty and inequality for millions of the people. When it comes to our own society, a study of Mahbubul-Haq Development Centre finds out that South Asia, as the 'Most Corrupt' region of the world and within South Asia, India and Pakistan as the 'Most Corrupt' countries. The corrupt behaviours and thinkings are not only increasing and spreading, but it has gained social acceptability. These are so deeply institutionalized that in eminent sociologist Durkheimian terminology, it has acquired the state of 'Social Fact' (which is external to individual consciousness since it represents the collective consciousness) and it constraints the individuals to behave and think in consonance of such collective consciousness.

Before proceeding to other dimensions of corruption, it is worthwhile to elaborate the meaning of corruption here. The first meaning of it is ethical and moralistic which is

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी हेतु प्रेषित आलेख।

reflected in our deviations from ethical, moral and spiritual norms of our society. The second meaning involves the idea of monopoly over a good or service with a sense of discretion whether to offer a service or not? The person holding monopoly is also not held accountable for his action. According to Klitgaard Corruption=Monopoly+Discretion-Accountability. The third and most common meaning of corruption is associated with the system of governance. This system divides citizens mainly into two categories- first those who govern and hold power and second those who are governed and have either no or less power. Obviously, this connotation is associated with the magnitude of power one enjoys in a specific context or situation.

The modern system of governance which is associated with rational, impersonalized, formal modes and hierarchy has emerged during the process of 'rationalization' or 'bureaucratization' in Weberian terminology. Such form of governance has little sensitivity with least or no human face and no place for ethical and moral values of the Society. These situations cumulatively broaden the scope of misuse of power by those who govern. Hence, the meaning and scope of corruption in terms of governance implies the misuse of public office for private gain. Public offices when misused in terms of authority, discretion and facilities narrate the story of corruption.

Though these three differing aspects of corruption exist, but in my opinion, the most crucial ingredient among these, is the moral and ethical view of corruption because it is motivating and socializing ground for individuals that whether they would choose the path of corruption in various contexts and occasions or not? As we know, corruption in all the domains highlight the erosion of ethical, moral values and human face of the society.

Since corruption is a menace which is well

understood in terms of poor or weak governance and misuse of public office for private gains, it operates and functions in three ways. In all these three forms there is involvement of at least two parties when an official makes grounds for acceptance, solicitation and extortion. The corrupt actions become effective and functional only by the desired, undesired or mute acceptance of the other party i.e. those who are governed.

The first technique of corruption is the mis-approriation where official facilities are misappropriated like official car, telephone, peon, stationery or state funds and assets etc. Though the second party may not be involved directly but because of neutral, apathetic attitude and mute acceptance and avoidance of resistence indirectly are responsible for misappropriation.

At various occasions, different officials at different hierarchical levels form a vicious cycle to make misappropriation happen at larger extent. Another technique of corruption is rampant where collaborative or exchange relations are operative between those who govern and those who are governed. Here in this form of corruption, a mutually beneficial form of exchange or transaction takes place between two parties either directly or through a third party. It may take place in the form of bribery, patronage, nepotism, sexual favour and horse-trading etc. Here rules of the governance either bent or overlooked by the officials. The third form of corruption which is most crucial to common men as they are unwilling partners who are coerced to pay the undue demands to the official even for their justified and lawful works done. It has become a common practice in modern governance where most of us are unwillingly forced to pay from the lowest ebb to highest stratum of the governance. Those who do not follow this path, either they are harrassed or their works are delayed or there may be other demaging impacts. This is the extortionist form of corruption

and it reflects the uneven power relations in governance.

Above illustrations suggest that whatever magnitude or form of corruption may exist in a society, it exists in the form of a vicious cycle where public servants and the citizens both are at the wrong track. Either of them may be motivator, victim or collaborator in the process. This process is made possible because of power structures in the governance which is linked with personal gain or greed. The play of power at different levels and at different occasions not only induces corrupt practices but it also serves as a reference condition for others and they are forced to undergo the process of professional socialization. This professional socialization of corruption keeps away the concept of ethics, morality and honesty. Those who effort to adhere to these values are counted as black sheep and are also considered as an obstacle to the institutionalization of corruption in the society. They are labelled as incapable, weak, inexperienced and Satyawadi Harish Chandra by the officials of governance and public both. The power structure in the governance further emphasizes the policy of appeasement and not on emotions and altruistic principle. Professional socialization of corruption today has reached at such juncture that most of us are not shocked by its incidence. It is so because there is complete change in our attitude on the issue of corruption. Even those ridicule it, also favour at other occasions which suit them.

There is yet another aspect of corruption as some of us link it with the process of development. one ideology says corruption is a byproduct of development while others view that development is not possible without it. There exists a mixed response to such an argument. While corruption has undermined development in Africa and has slowed the emergence of well-functioning market economies in the erstwhile USSR. The co-existence of high growth and systemic corruption in some Asian countries challenges

those who believe that corruption is always economically harmful. There may be several explanations for such a correlation between corruption and development. For instance (a) Some governments reliably deliver what is bought and gained with corruption while other governments do not, (b) there may exist an opinion that corruption percolates at the top level political system (Asian region) as less distortionary than uncontrolled corruption at lower levels, (c) if political systems are well established and the rules of games are known to most of it citizens, the transaction costs of rent seeking may be less costly than in less stable and less certain environments.

However, inspite of all these explanations and views, still most of us would not say corruption is good for development. But at the level of practice or reality we consider it as 'speed money' or 'efficiency fee' which is considered economical and less harassing than waiting for the law to take its own course. Corruption and corrupts enjoy respectable status in the society inspite of viewing it bad and against the principle of honesty. This ambivalence and confusion in our attitude may be the root cause to accept it in one form or the other. It is therefore now viewed that the causes of corruption are contextual, rooted in a country's policies, bureaucratic traditions, political development and social history. It is a problem associated with policy distortions, institutional incentives and governance. On the one hand it is flourishing because of our mind- set towards corruption and on the other hand due to systemic failure. In an article Merchant has rightly focussed that three key political reforms- police, judicial and electoral are necessary to cleanse our public institutions. Without these reforms, the standard of governance cannot be made effective. It is because the top political leadership sets the standard of governance. It is also because of systemic failure and faulty governance, that the formal rules and laws remain in place,

but these are superseded by informal rules. The rule of law is often fragile and it can be turned in their favour by corrupt interests. These instances show us that corruption has become a way of life and we are forced to live in culture of corruption and it has become a routine dealing in everyday life. One may say that it is a social compulsion to live in this cultural environment of corruption. It is on rampant increase as we move from spirituality, moral and ethical values to materialism, increasing individualism, consumerism, declining control and fear of law, scarcity of good, services and resources, culture of greed, distorted form of leadership and bureaucracy, poverty and inequality. When we come out of these situations and set our path and priorities away from these circumstances, we can hope to come out of the vicious cycle of corruption, otherwise it will remain a social compulsion.

Bibliography-

Gill, S.S. 1998, The Pathology of Corruption, New Delhi. Harper collins publication.

Merchant, Minhaz 2011 'Our Moral Universe', The Times of India, Jaipur, January-26

-Deptt. of Sociology, J.N.Vyas.University, Jodhpur (Raj.)

हास्य-व्यंग्य कणिका

धंधा

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

हमने पूछा
श्रीमान्! क्या करते हैं?
बोले- यही जन-सेवा
नहीं-नहीं, घर-गृहस्थी का
पेट भरने के लिए
क्या करते हैं धंधा?
वे हँसे और बोले- बस, यही चन्दा।

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 74)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(निर्ग्रन्थ का स्वरूप)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– एक जीव को निर्ग्रन्थपना कितने भवों में प्राप्त हो सकता है?

समाधान– एक जीव को निर्ग्रन्थपना यदि प्राप्त हो तो कम से कम एक भव में तथा अधिक से अधिक तीन भवों में प्राप्त हो सकता है। क्योंकि निर्ग्रन्थपना दो प्रकार का होता है– 1. मोह के सर्व उपशम से प्राप्त और 2. मोह के क्षय से प्राप्त।

जो निर्ग्रन्थपना मोह के पूर्णतः उपशम से प्राप्त होता है, वह कम से कम एक भव में तथा अधिक से अधिक दो भवों में प्राप्त हो सकता है। जबकि मोह के क्षय से प्राप्त होने वाला निर्ग्रन्थपना तो जघन्य-उत्कृष्ट एक ही भव में प्राप्त होता है। इस प्रकार मोह के उपशम की अपेक्षा दो भव में तथा मोह के क्षय की अपेक्षा एक भव में, इस प्रकार दोनों को मिलाकर एक जीव को अधिकतम तीन भवों में निर्गन्थपना प्राप्त हो सकता है।

जिज्ञासा– एक जीव को निर्ग्रन्थावस्था (वीतरागावस्था) जघन्य-उत्कृष्ट कितनी बार प्राप्त हो सकती है?

समाधान– एक जीव को निर्ग्रन्थावस्था एक भव में जघन्य एक बार तथा उत्कृष्ट दो बार प्राप्त हो सकती है। अनेक भवों की अपेक्षा जघन्य दो बार तथा उत्कृष्ट पाँच बार प्राप्त हो सकती है।

मोह के सर्वोपशम से प्राप्त उपशम श्रेणि की अपेक्षा एक भव में उत्कृष्ट दो बार तथा अनेक भवों में उत्कृष्ट चार बार निर्ग्रन्थावस्था (वीतरागता) प्राप्त हो सकती है। मोह के क्षय से उत्पन्न निर्ग्रन्थावस्था तो जघन्य-उत्कृष्ट एक ही बार प्राप्त होती है। अतः उपशम की अपेक्षा चार बार तथा क्षय की अपेक्षा

एक बार, इस प्रकार कुल पाँच बार निर्ग्रन्थावस्था एक जीव को प्राप्त हो सकती है।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थपने की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति कितनी होती है?

समाधान– जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि निर्ग्रन्थ साधुओं में ग्यारहवाँ तथा बारहवाँ ये दो गुणस्थान पाये जाते हैं। अतः ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती उपशान्त कषाय छद्मस्थ वीतरागी निर्ग्रन्थों की स्थिति जघन्य एक समय तथा उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त की होती है।

बारहवें गुणस्थानवर्ती क्षीण कषाय छद्मस्थ वीतरागी निर्ग्रन्थों की जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की होती है।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ साधु का अन्तर जघन्य-उत्कृष्ट कितना है?

समाधान– निर्ग्रन्थ साधु में जो बारहवें गुणस्थानवर्ती हैं, उनका तो अन्तर होता ही नहीं है, क्योंकि वे तो उसी भव में मोक्ष में चले जाते हैं। जो उपशान्त कषाय वाले ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती हैं, उनका अन्तर हो सकता है। वह एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त्त का तथा उत्कृष्ट देशोन अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल का होता है।

कोई उपशम श्रेणि में निर्ग्रन्थ बना हुआ नीचे गिरकर उसी भव में पुनः उपशम श्रेणि करके अन्तर्मुहूर्त्त में दुबारा निर्ग्रन्थ बन सकता है, इस अपेक्षा से जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त्त का कहा गया है। कोई उपशम श्रेणि वाला निर्ग्रन्थ श्रेणि से नीचे गिर जाता है, मिथ्यात्व गुणस्थान में चला जाता है। यहाँ तक कि निगोद में चला जाता है, और वहाँ देशोन अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल तक रह जाता है, उसके बाद वहाँ से निकल कर अनुक्रम से मनुष्य भव को प्राप्त कर, संयम अंगीकार कर उपशम श्रेणि कर सकता है, तब वह पुनः ग्यारहवें गुणस्थान को प्राप्त होने पर निर्ग्रन्थ बन जाता है। इस अपेक्षा से निर्ग्रन्थ का उत्कृष्ट अन्तर देशोन अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल का बतलाया गया है।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थों में कौन-कौन से समुद्घात पाये जाते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थ, ग्यारहवें तथा बारहवें गुणस्थानवर्ती अप्रमत्त अणगार

होते हैं। अतः इनमें किसी भी प्रकार के समुद्घात नहीं पाये जाते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थों में कौन-कौन से भाव पाये जाते हैं?

समाधान– भाव के यद्यपि पाँच भेद होते हैं– 1. औपशमिक, 2. क्षायोपशिमक, 3.क्षायिक, 4. औदयिक और 5. पारिणामिक। तथापि यहाँ साधुओं की अपेक्षा से कथन होने के कारण चारित्र-मोहनीय की प्रधानता से प्रथम तीन भावों की अपेक्षा से कथन किया गया है।

औपशमिक, क्षायोपशमिक और क्षायिक इन तीन भावों में से निर्ग्रन्थों में कोई एक भाव रहता है। ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थों में चारित्र-मोह के उपशम की प्रधानता से औपशमिक भाव माना जाता है। जबकि बारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थों में चारित्र-मोह के क्षय की प्रधानता से क्षायिक भाव माना जाता है।

इस प्रकार से निर्ग्रन्थों में एक जीव की अपेक्षा औपशमिक अथवा क्षायिक भाव मिलता है, जबकि अनेक जीवों की अपेक्षा से औपशमिक तथा क्षायिक, ये दो भाव पाये जाते हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

जैन छात्रों के लिए चेन्नई में आवास-व्यवस्था

जो प्रतिभाशाली जैन छात्र चेन्नई में रहकर अपना अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए चेन्नई महानगर में आवास-व्यवस्था की गई है। कमजोर वित्तीय स्थिति वाले उन धर्मनिष्ठ मेधावी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है जो अपने जीवन में पढ़-लिखकर संघ-समाज, देश व जिनशासन की सेवा के साथ अपने जीवन को संवारना चाहते हैं। चयन में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा अन्य धार्मिक जानकारी एवं योग्यता रखने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। पारिवारिक, शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और अन्य आवश्यक तथ्यों के साथ पूर्ण विवरण सहित निम्नांकित पते पर आवेदन करें। आधे-अधूरे आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

Dr. Dileep Dhing

Surana & Surana International Attorneys

61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004

Phone: 044-28120000/28120002

जन्म-दिवस पर

समय-समय पर जन्म अनेकों....।

श्री उम्मेदचन्द जैन

समय-समय पर जन्म अनेकों, पुरुष यहाँ पर पाते हैं।
चार दिनों का खेल दिखाकर, आखिर वे छुप जाते हैं।।
लेना जन्म उन्हीं का सार्थक, दुनियां भीतर आ करके।
चमक दिखा जो चाँद रवि सी, जाते जग चमका करके।।1।।

ऐसे ही युग-पुरुष श्रद्धेय, 'हस्तीमल' जी मुनि हुए।
ज्ञानी और गणिपद भूषित, परम यशस्वी गुणी हुए।।
उन्नीस सौ सड़सठ विक्रम वर्ष अनोखा आया था।
पौस सुदी चौदस के शुभ दिन, जन्म आपने पाया था।।2।।

माता रूपकंवर जी दिल में, फूली नहीं समाई थी।
पिता श्री केवलचन्द जी ने पहले जान गंवाई थी।।
जिला जोधपुर मारवाड़ में, पीपाड़ शहर सुहाना था।
जन्म लेकर बड़े प्रेम से, बोहरा कुल में आना था।।3।।

जैनागम के ज्ञाता बनकर, गुरु शोभाचन्द्र जी पाया था।
अजमेर शहर में दीक्षा लेकर, संयम पद अपनाया था।।
सामायिक स्वाध्याय का नारा, सारे भारत में गुंजा दिया।
धर्म आराधना हेतु स्वाध्यायी, पर्युषण में भिजा दिया।।4।।

मोह नींद में सोये हुए, जैन-अजैन को जगा दिया।
ग्राम सतारा में नाग बचाकर, विष अमृत में बदल दिया।।
प्रेरणा स्रोत थे संयम के, जिनशासन के रखवारे थे।
आप तिरे भवसागर से, भव्यों के तारणहारे थे।।5।।

जब भी देखो मुख-मण्डल से, शांति अद्‌भुत झरती थी।
मिश्री जैसी वाणी मीठी, जनता का दुःख हरती थी।।

प्रवचन क्या था आप श्री का, सुधा धार सी बहती थी।
धन्य गुरुवर 'हस्तीमल' जी, सुन-सुन जनता कहती थी।।6।।

एक अनोखा चमत्कार सा, नज़र आप में आता था।
दर्शन पाता आप श्री का, वो ही भक्त बन जाता था।।
रंचमात्र नहीं खुश होते थे, अपनी कभी बड़ाई से।
रहे हमेशा दूर मान से, निन्दा कलह बुराई से।।7।।

आया आखिर दो सहस्र, अड़तालीस संवत् दुःखकारी।
अष्टमी बेला निमाज ग्राम को, भूलेंगें नहीं नर-नारी।।
तेला तप कर लिया संथारा, नाम प्रभु का भज करके।
स्वर्ग सिधारे देह त्याग कर, निमाज में आ करके।।8।।

सघन बगीचे आमों के वहां, लदी केरियां भारी थी।
बच्चों ने बहुसारी खाई, फिर भी कमी न आई थी।।
रात्रि भर में दुगनी हो गई, आश्चर्य हुआ सबको भारी।
देह-त्याग की खबर सुनी जब, दौड़ गये सब नर-नारी।।9।।

बिछुड़ गये सदा के लिये, अब नजर कहीं न आ सकते।
अमर रहें इस भूमंडल पर, नहीं दिलों से जा सकते।।
जब तक रवि शशि चमकेंगे, और तारागण मुस्कायेंगे।
तब तक जगती के सब जन-जन, गुणगान तुम्हारे गायेंगे।।10।।

पन्द्रह मिनट स्वाध्याय और नित सामायिक कर पायेगें।
जन्म-जयन्ती तभी सार्थक, जीवन धन्य बनायेगें।।
यही कामना 'उम्मेद' करता, परम शान्ति सदा मिले।
श्री चरणों में अर्पित करता, श्रद्धा सुमन के पुष्प खिले।।11।।

-ग्राम-जरखोदा, जिला-बून्दी (राज.)

सूचना

जिनवाणी के जिन आजीवन-सदस्यों का स्वर्गगमन हो जाता है, उनके नाम पर जिनवाणी भेजना कार्यालय द्वारा बन्द कर दिया जाता है। अतः जिनवाणी की पुनः सदस्यता किसी अन्य नाम से ग्रहण की जा सकती है।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (12)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-**सम्पादक**

महाराज साहब,

आज के समाज का एक छोटा-सा चित्र आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।
आज जिसके घर में टी.वी. नहीं है
वह भिखारी माना जाता है।
जिसके हाथ में मोबाइल फोन नहीं है
वह कड़का माना जाता है।
जो युवा होटल में नहीं जाता,
पिक्चरें नहीं देखता,
शराब नहीं पीता,
रात्रि भोजन नहीं करता,
वह अपने साथियों के बीच 'मामा' माना जाता है।
यदि वह शादीशुदा है तो उसकी पत्नी उसे 'गँवार' मानती है और
यदि उसकी शादी नहीं हुई है तो
कोई बाप उसे अपनी बेटी देने के लिए तैयार नहीं है।
व्यापार में ईमानदारी रखने वाले को
समाज में कोई मान-सम्मान नहीं देता।
किसी भी आयोजन में कोई उसे आगे नहीं करता।
उसे प्रायः अन्य लोगों की ओर से 'आमंत्रण' नहीं मिलते।
बिना आमंत्रण वह कहीं पहुँच भी जाता है तो
वहाँ उसकी अवहेलना और उपेक्षा हुए बिना नहीं रहती।

एक ही वाक्य में कहना हो तो कहा जा सकता है कि

जैसे गेहूँ अथवा चावल के बिना बोरा अपने आप तनकर खड़ा नहीं रह सकता वैसे ही पैसे-प्रतिभा और प्रतिष्ठा के बिना आदमी आज समाज में सीना तानकर खड़ा रह सके ऐसी कोई संभावना नहीं है।

सदाचरण की बात
शब्दों में अच्छी लगती है,
सत्यनिष्ठा की बात
सुनने में आकर्षक लगती है,
मूल्यों को टिकाए रखने की बात पर
प्रभावी भाषण दिया जा सकता है, परंतु
उनको जीवन में अमल में लाते लाते तो दम निकल जाता है।
क्या लिखूँ आपको ?
आप तो खीर खाने के बाद बिना घी की सूखी रोटी
खाते समय भी स्वस्थता रख सकते होंगे,
बंगले जैसे उपाश्रय में रहने के बाद झोंपड़ी जैसे स्थान में
रहते समय भी आपकी प्रसन्नता बनी रहती होगी,
बेन्ड-बाजे से हो रहे स्वागत के बाद कुत्तों के द्वारा
हो रहे स्वागत में भी आपकी मस्ती टिक सकती होगी,
प्रशंसा के अनगिनत शब्दों को सुनने के बाद निंदा के शब्द
सुनते समय भी आप स्वस्थ रह सकते होंगे,
गुलाबी ठण्ड में विहार करने के बाद 45-46 डिग्री की गर्मी में
विहार करते समय भी आप अपने मुख पर हास्य टिका सकते होंगे।
परंतु, हमारे पास यह ताकत नहीं है।

प्रतिकूलता में,
उपेक्षा में,
रुक्ष व्यवहार में,
विरोध में
विपरीत अभिप्राय में

हमारी समस्त सम्यक् समझ मानों हवा में उड़ जाती है।
हमारे समस्त सत्त्व का मानो दिवाला निकल जाता है।
हमारी समस्त खुमारी की मानो शव-यात्रा निकल जाती है।
'सत्यनिष्ठ' अथवा 'मूल्यनिष्ठ' बनने के दुर्लभ, परंतु सम्यक्
मार्ग पर कदम बढ़ाते समय
ये प्रतिक्रिया (Reaction) आती ही हैं,
उन पर विजय प्राप्त करने का सामर्थ्य कैसे पैदा करें?
पवन बवंडर का है,
दीपक को कैसे बचाएँ?
चारों ओर कीचड़ है,
गिरने से कैसे बचें?
कोई विकल्प? कोई उपाय?
यश,
वर्तमान जगत् की बन चुकी तासीर के विषय में तुमने जो कुछ लिखा है
वह सच है।
अच्छाई की बाजार में कोई कीमत (Market Value) नहीं है।
बाजार में एकमात्र सफलता की ही कीमत है।
तुम करोड़पति बन ही जाओ
चाहे वह बनने के लिए तुम्हें घटिया से घटिया तरीके अपनाने पड़े।
सौंदर्यस्पर्धा में तुम नम्बर लगा ही दो।
चाहे उसमें विजेता बनने के लिए तुम्हें निर्णायक मंडल के
प्रत्येक सदस्य को हर तरीके से खुश करना पड़े।
तुम बोर्ड की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त कर ही लो।
चाहे उसके लिए तुम्हें पेपर आउट करना पड़े अथवा
परीक्षा में नकल करनी पड़े।
संक्षिप्त में, कहना हो तो कहा जा सकता है कि
तुम्हारे सभी अपराध माफ हैं यदि तुम सफल बन रहे हो तो
और तुम्हारी निर्दोषता की कोई कीमत अथवा महत्ता नहीं है यदि
तुम्हारी किस्मत में असफलता ही है तो!

हाँ, जगत, समाज इतना ही नहीं, परिवारजनों की भी यही
तासीर है और इसके बीच में रहकर 'सत्यनिष्ठ' बने रहना,
सत्त्व को दृढ़ रखना–यह कोई बच्चों का खेल नहीं है।
इसके बावजूद मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि
मोती प्राप्त करने के लिए कोई मरजीवा आज तक कुँए में नहीं गिरा है।
हिमालय के शिखर तक पहुँचने के लिए किसी भी पर्वतारोही ने
आज तक हेलिकॉप्टर का उपयोग नहीं किया।
अपनी प्यास बुझाने के लिए किसी चातक पंछी ने आज तक कभी
नदी के जल पर दृष्टि नहीं डाली।
अपने उदर को भरने के लिए हंस ने आज तक कभी मछलियों को
पंसद नहीं किया।
बस, इसी प्रकार जगत् अथवा समाज के बीच दृढ़ रहने के लिए एक भी
महापुरुष ने आज तक न गलत साधन का उपयोग किया है
न ही गलत मार्ग पर क़दम रखा है।
यह सही है कि चारों ओर कीचड़ है, परन्तु तुम कीचड़ के बीच
लगे उस पत्थर–जैसे क्यों न बन जाओ कि जिस
पर पाँव रखकर अनेक लोग कीचड़ से गंदे हुए बिना
सुखपूर्वक बाहर निकल जाते हैं।
यह बात सही है कि आज तुम्हारा स्वरूप 'दीपक' का है, परन्तु तुम ऐसा
दावानल क्यों न बन जाओ कि जो तूफान के पवन को
पाकर भी और ज्यादा ताकतवर बनकर चारों ओर फैलता ही जाता है।
यश,
तुम्हें एक बात याद दिलाऊँ ?
मैं स्वयं जब दीक्षा लेने के लिए तत्पर हो गया था तब
चारों ओर से विरोध की आवाज ही उठी थी;
परिवारजनों के साथ मित्र भी मना कर रहे थे।
समाज तो विरोध में था ही, किन्तु जो लोग मुझे
पहचानते भी नहीं थे वे भी मेरे परिवारजनों के पास

आकर मुझे दीक्षा के मार्ग पर जाने से रोकने का प्रयास कर रहे थे।
तुम ही जवाब दो। दीक्षा लेने के मेरे निर्णय में यदि मैं कमजोर हो गया होता,
पैदा हुए इस विरोध के प्रभाव में आकर इस मार्ग पर आने की
मेरी भावना को यदि मैंने दबा दिया होता,
''विरोध शांत होगा अथवा सब खुशी-खुशी सहमति देंगे तभी मैं दीक्षा लूँगा''
ऐसी विचारधारा का शिकार
बनकर दीक्षा लेना मैंने स्थगित कर दिया होता तो
क्या तुम मानते हो कि आज मैं जिस प्रसन्नता के गगन में
उड़ रहा हूँ, पवित्रताजन्य आनंद का अनुभव कर रहा हूँ,
निष्पापजीवनजन्य स्वस्थता की अनुभूति कर रहा हूँ
वह सब कुछ मुझे संसार में सुलभ हुआ होता? हर्गिज नहीं।
याद रखना!
सब सहमत हों तो भी जीवन में गलत कार्य से
दूर ही रहना है और नासमझ या अज्ञानी वर्ग विरोध में हो
तो भी सत्कार्य के आचरण में आगे बढना है।
प्राप्त मानव जीवन को सफल बनाने का यह राजमार्ग है।

नमक की मात्रा

भोजन में जरूरत से ज्यादा नमक की मात्रा हृदय ही नहीं, बल्कि दिमाग के लिए भी घातक हो सकती है। आमतौर पर हाई ब्लड प्रेशर से पीड़ित लोगों को भोजन में अधिक नमक के इस्तेमाल से परहेज करने की सलाह दी जाती है, क्योंकि इससे हृदय रोग या स्ट्रोक का खतरा बना रहता है। हाल ही में एक शोध से सामने आया है कि दिनभर में एक चम्मच से ज्यादा नमक का सेवन करना दिमाग की कार्यप्रणाली पर नकारात्मक असर डाल सकता है। इससे व्यक्ति के डिमेंशिया/अल्जाइमर यानी भूलने की बीमारी से पीड़ित होने की संभावना भी बढ़ जाती है।

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरांटो के डॉ. एलेक्जेंडर फिएको कहते हैं कि अधिक सोडियमयुक्त खाद्य पदार्थ का सेवन और एक्सरसाइज की अनियमितता से उम्र बढ़ने के साथ-साथ मस्तिष्क की कार्यक्षमता धीमी पड़ने लगती है।

नारी-स्तम्भ

हठवादिता : जीवन का अभिशाप

श्रीमती बीना जैन

कुछ नैतिक-गुण ऐसे होते हैं, जिनका विकास जीवन में बहुत आवश्यक है; जैसे सत्य बोलना, चोरी न करना, बड़ों का आदर सम्मान करना, सहायता करना, हिंसा न करना। इससे भी बड़ा गुण है, बड़ों की आज्ञा-पालन के प्रति तत्पर रहना। यह सद्गुण जीवन में सफलता प्राप्त करने का एक मूल-मंत्र है। खेद है कि यह गुण आजकल उपेक्षित हो रहा है, जिससे अनेक समस्याओं को जन्म मिल रहा है। फलतः वैयक्तिक- पारिवारिक व सामाजिक जीवन विघटित हो रहा है।

हमें प्रायः बाल्यावस्था से यही कहा जाता है कि बड़ों का कहना मानना चाहिए, क्योंकि उनके पास अनुभव का अतिशय भंडार है। जीवन में कौन सी आदतें लाभकारी हैं, क्या उचित है, क्या अनुचित, इसका अनुभव-सिद्ध ज्ञान उनके पास होता है। आज्ञा-पालन से जिन अच्छी आदतों का विकास हमारें बाल्यकाल में हो जाता है वे जीवन-पर्यन्त हमारे व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती हैं; जैसे- प्रातःकाल उठना, व्यायाम करना, समयबद्धता, व्यक्तिगत स्वच्छता एवं वस्तुओं को व्यवस्थित रखना आदि।

आज्ञा की अवमानना करने की आदत आगे चलकर हठवादिता में परिवर्तित होकर कभी-कभी जीवन के लिए अभिशाप बन जाती है। आरम्भ में हम सोचते हैं कि बच्चा हठी व जिद्दी हो गया है। अत्यधिक लाड़ के कारण या कभी-कभी समयाभाव के कारण हम हर ज़िद पूरी करते हैं। यह हमारी विवशता होती है। हमारी इस विवशता एवं मानसिकता को बच्चा हमारी कमजोरी समझता है, और किशोरवस्था तक वह अपने हर उचित और अनुचित व्यवहार को तर्क-पूर्ण सिद्ध कर माता-पिता से मनवाने लगता है; उदाहरणार्थ- देर रात तक घूमना, ऐसे मित्र जो परिवार में पसंद नहीं किए जाते उनके साथ घनिष्ठता बढ़ाना, रोके जाने पर क्रोधित या उत्तेजित होकर तोड़-फोड़ करना, इसका विकराल रूप है।

किशोरियों के जीवन में भी हठवादिता के भयंकर परिणाम देखने में आ रहे हैं। माता-पिता द्वारा जब उन्हें गलत मित्रों के साथ नहीं रहने अथवा मर्यादा में

रहने के लिए समझाया जाता है, तो वे उसको अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर माता-पिता की अवहेलना करती हैं। जब तक आँख खुलती है बहुत देर हो चुकी होती है। उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है।

किशोरवस्था में हर प्रशंसा करने वाले व्यक्ति से प्रभावित होना और लच्छेदार बातों में आ जाना स्वाभाविक है। पर क्या युवक/युवती यह नहीं सोच पाते कि हमारे माता-पिता आयु अनुभव में हमसे बहुत आगे हैं और उनकी अनुभवी आँखें किसी व्यक्ति को पहचानने की विलक्षण क्षमता रखती हैं।

आज समाचार पत्र ऐसी खबरों से रंगे रहते हैं कि मां-बाप की मर्जी के खिलाफ लड़की या लड़के ने घर से भाग कर मंदिर में शादी कर ली, अथवा आत्म-हत्या कर ली। मोहभंग होने के बाद हाथ मलने एवं बदनामी के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। वरन् भविष्य के लिए और कांटें बो दिए जाते है। मन सदैव शंका-आशंकाओं और भय से ग्रसित रहने लगता है। वे जीवन के उन सुखों एवं आह्लाद के उन क्षणों से भी वंचित हो जाते हैं। जिसके वे अधिकारी थे। अपराध बोध और ग्लानि जीवन भर सालने के लिए मुँह बांए खड़ी रहती है। तब अहसास होता है कि हमने यह क्या कर डाला? हठवादिता हमारे जीवन को कहाँ से कहाँ ले आई? काशः हमने माँ-बाप का कहना माना होता। समय के साथ चलना अच्छा होता है, पर समय की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करना कहाँ तक उचित है, इसका निर्णय तो आपको ही करना है।

-के/15, रामघाट रोड़, ज्ञान सरोवर कॉलोनी, अलीगढ़ (उ.प्र.)

रात्रिभोजन-त्याग-महाभियान क्यों आवश्यक?

1. आरोग्य, नीरोगता व स्वस्थता के लिए।
2. जीवन को संयमित व नियमित बनाने के लिए।
3. मनोबल व आत्मबल विकसाने के लिए।
4. रोगों से मुक्ति के लिए।
5. जीव हिंसा से बचने के लिए।
6. जीवों के अभयदाता बनने के लिए।
7. सहज ही वर्ष में 6 माह की तपस्या के लाभ के लिए।
8. पारिवारिक सहकार के लिए।
9. पारिवारिक संतुलन व समाधि के लिए।
10. धर्मसहायिका/गृहिणी को धर्माराधना में सहयोगी बनने के लिए।

युवा-स्तम्भ

सफलता के लिए संगठन और समर्पण आवश्यक

प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन

व्यापारिक क्षेत्र हो या सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र हो या राजनीतिक, प्रत्येक कार्य की सफलता हेतु संगठन और समर्पण की सर्वाधिक आवश्यकता होती हैं। क्योंकि संगठन से कार्य प्रवृति के लिए उत्साह, हौंसला और लगन जागती है, जबकि समर्पण से संजोये सपने साकार होते हैं। इसी संगठन और समर्पण के बल पर आज देश-विदेश में नित नये आविष्कार और अनुसंधान हो रहे हैं। इसी संगठन और समर्पण की शक्ति से हजारों-लाखों व्यक्तियों के समूह देश-विदेश में बड़े-बड़े कार्य अति सहजता से संपादित कर रहे हैं। यदि हम वास्तविक रूप में चाहते हैं कि हमारे संघ,समाज की स्थिति मजबूत बने, हम कुछ ठोस,बुनियादी और प्रेरक कार्य करें, आदर्श कार्यकर्ता के रूप में पहचाने जायें तो इन सभी का सरल सा उपाय है संगठन और समर्पण के प्रति हमारी गहरी रुचि एवं समझ। बचपन में पढ़ी हुई एक अति प्रेरक कहानी इस संदर्भ में प्रेरणा हेतु सेवा में निवेदन है।

घने जंगल में कबूतरों का एक समूह चुग्गे-दाने की तलाश में इधर-उधर उड़ रहा था। उस समूह का नेतृत्व एक वृद्ध कबूतर कर रहा था। उड़ते हुए समूह को एक वृक्ष के नीचे अनाज के दाने बिखरे हुए नज़र आये। भोजन की तलाश में भटक रहे कबूतरों के समूह ने बिना देर किये तुरंत वृक्ष के नीचे पहुंचकर दाना खाने का निर्णय लिया, और सभी कबूतर दाना चुगने लगे। जैसे ही उन सभी ने दाना खाना प्रारंभ किया कि शिकारी द्वारा बिछाये गये जाल में सभी कबूतरों के पंजे उलझ गये। मानों सभी शिकारी के जाल में बंदी बन गये। मुसीबत के इस समय में वृद्ध कबूतर ने हिम्मत नहीं हारी, उसने तुरंत सभी कबूतरों को निर्देश दिया-"घबराओ मत, मुसीबत में हम स्वयं उलझे हैं, तो निकलेंगे भी हम स्वयं ही, मेरी बात ध्यान से सुनो....हम सभी को एक साथ मिलकर उड़ने का प्रयास करना है और शिकारी के जाल को यहां से उड़ाकर हम सभी को ऊपर पहाड़ी पर पहुंचना है।" वृद्ध कबूतर के निर्देशानुसार कार्य हुआ, एक साथ सामूहिक रूप से संगठित होकर सभी ने प्रयास किया और शिकारी के जाल को सभी कबूतर उड़ाकर पहाड़ी के ऊपर ले गये, वहां उनका चूहा मित्र आया और उसने जाल को काटकर सभी कबूतर मित्रों को बंधन से मुक्त कर दिया।

यह छोटी सी कहानी हम सभी को बहुत बड़ी प्रेरणा देती है। जिस तरह वृद्ध

कबूतर के एक इशारे और कथन को सभी ने स्वीकार किया, किसी प्रकार का कोई विवाद या सवाल जवाब नहीं किया तो मुसीबत के समय में भी समाधान मिल गया । ठीक इसी प्रकार से जब गुरु भगवंत कोई आज्ञा फरमायें तब मुहं से निकलना चाहिए एक मात्र शब्द-तहत्ति। संघ समाज के बड़े कोई आज्ञा फरमाये तो निकलना चाहिए-तहत्ति....किंतु इसे पीड़ाजनक विड़ंबना ही कहा जायेगा कि आज संघ समाज की स्थितियां बड़ी विचारणीय हो गई हैं। हर छोटी-छोटी बात पर तू-तू मैं-मैं, आपस में आरोप-प्रत्यारोप, अपने ही अपनों पर कर रहे हैं खींचतान। शायद इसी कारण से आज युवावर्ग में संघीय प्रवृत्तियों के प्रति रुचि एवं समर्पण कम हो रहा है। अच्छे कार्यकर्ता समाज एवं सामाजिक व्यवस्थाओं से दूर हो रहे हैं। अपने प्रतिष्ठान, कारोबार में भी हजार उतार-चढ़ाव आते हैं। अपने सहयोगियों के साथ हम कितना मधुर एवं आत्मीय व्यवहार रखते हैं, ठीक इसी प्रकार से संघ-समाज में हम सभी श्रावक-श्राविकाओं का आपस में गहन आत्मीय व्यवहार एवं परस्पर एक दूसरे को सहयोगी रहना होगा। तभी हमारी सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति सुदृढ़ हो पायेगी।

मात्र नारों,जयकारों और विज्ञापन से ही काम चलने वाला नहीं है। संघ-समाज और जिनशासन की प्रभावना के लिए आवश्यकता है अपनी मानसिकता को बदलने की। अपने अन्तर में संगठन और समर्पण को बढ़ाने की। क्योंकि जहां संगठन और समर्पण है वहां वाद नहीं है,विवाद नहीं है, किसी तरह की उलझन और समस्या नहीं हैं। संगठन और समर्पणता की राह हमें ले जाती है सफलता की मंजिल पर, सुख-शांति और लक्ष्य-प्राप्ति की भूमि पर। अत: बदलते इस दौर में हम सभी को अपना आत्म अवलोकन करते हुए अच्छे कार्यो के प्रति अनुमोदना व सहयोग की भावना बढ़ानी है। आपसी खींचतान एवं वैर-विरोध से बचते हुए आत्मीयता एवं प्रमोद भावना बढ़ानी है। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो जिस तरह से सूत से सूत मिलकर धागा, ईंट से ईंट मिलकर ईमारत बनती है वैसे ही हम सभी मिलकर व्यापक रूप से जिनशासन प्रभावना एवं प्रतिभाओं को प्रोत्साहन का प्रेरक मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं....पल,पल, प्रति पल हम सभी के अन्तर में बढ़ता रहे संगठन व समर्पण का भाव, इन्हीं शुभ मंगल भावनाओं के साथ.....

आग जलती है, तो मोम को पिघलना होगा ।
रात के बीतने पर, सूरज को निकलना होगा ।।
केवल बातों से परिवर्तन नहीं होता संघ-समाज में,
परिस्थितियों को बदलने के लिए, संगठन समर्पण बढ़ाना होगा।।

- कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानी मंडी (राज.)

बाल-स्तम्भ

मैं फूलों का हूँ व्यापारी

डॉ. दिलीप धींग

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 मार्च 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

लोग पूछते क्या करते हो, चलता कैसा धंधा-पाणी।
कह देता हूँ एक वाक्य में, मैं फूलों का हूँ व्यापारी।।

श्रुत-ज्ञान के महोपवन से, चुनता तरह-तरह के फूल।
टोकरियाँ भरता चिन्तन की, उन्हें बनाता युगानुकूल।
गद्य-पद्य में ढाल-ढालकर, बेचूँ मुफत-नकद-उधारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।1।।

कभी पुष्प-बीज ही मिलते, उनको मन में बोता हूँ।
इस खेती के रखरखाव में, मैं खुद ही को खोता हूँ।
वही फूल-फल पाता मित्रों, जिसकी मिटने की तैयारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।2।।

न्याय-नीति का अनुपालन हो, करें साधना सभी सतत।
सत्य-अहिंसा की जय बोलें, ये मेरे फूलों की कीमत।
कोई समझता इन्हें मुफ्त में, किसी को लगती कीमत भारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।3।।

जिनका जीवन रंगहीन है, गंधहीन है, है बेनूर।
ज्ञान-फूल से उन्हें सजाओ, प्रेम-गंध से जो भरपूर।

इन फूलों के लिए सदा हूँ, मात-तात-गुरु का आभारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।4।।

ना गिरते हैं, ना मुरझाते, आते पतझड़, होती शाम।
खिलते और महकते रहते, बारह महीने, आठों याम।
गुणग्राही सद्राही जानें, इन फूलों की महिमा न्यारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।5।।

जीवन और जगत् की धारा, बहती अनुकूल-प्रतिकूल।
रहो अडिग फैलाओ खुशबू, झूम-झूम कर कहते फूल।
मत हारो विपरीत हवा से, हारा, जिसने हिम्मत हारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।6।।

सुरभित रंग-बिरंगे ताजा, तरह-तरह के फूल खिले।
दुर्लभ अवसर है मत चूको, अबके बिछुड़े कहाँ मिलें।
उठो करो साहस लेने का, वापस कब आएगी बारी?
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।7।।

सद्गुण असली फूल हैं मित्रों, जीवन को महकाते हैं।
सद्विवेक के घर-आंगन में, रिश्तों को चहकाते हैं।
जो अपनाता वह बनता है, मानवता का अमर पुजारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।8।।

वन-उपवन में खिलने वाले, फूल शाम को मुरझाएँगे।
मन-उपवन में खिलने वाले, सुमन कभी ना मुरझाएँगे।
भर देंगे जीवन में खुशियाँ, महकाएँगे दुनिया सारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।9।।

यह व्यापार अनूठा-अच्छा, चाहे कोई कुछ लें, ना लें।
खुशबू मिल जाती है सबको, पाते हैं रंगीन उजाले।
सुरभित साँसे और हवाएँ, बहती चहुँदिश दूषण-हारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।10।।

रंग सुहाने लगते मुझको, गंध सुहानी लगती है।
परिवर्तित जीवन का हर दिन, नई कहानी लगती है।

रंग-गंध से परे जो छटा, अन्तस् में वह छटा निहारी।
मैं फूलों का हूँ व्यापारी....।।11।।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

प्रश्नः-

1. फूलों का व्यापारी कौनसे फूल बेचता है?
2. फूलों की कीमत बताइए।
3. इन फूलों की विशेषताएँ लिखिए।
4. यह कविता क्या संदेश दे रही है?
5. सन्धि-विच्छेद कीजिए- महोपवन, युगानुकूल, दुर्लभ।
6. अर्थ बताइए- बेनूर, अनुकूल, सद्राही, गुणग्राही, प्रतिकूल।
7. मिलान कीजिए-

न्याय	-	प्रतिकूल
सत्य	-	नीति
पुष्प	-	गंध
गद्य	-	बीज
रंग	-	पद्य
अनुकूल	-	अहिंसा

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-2011] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'मिलावट का दौर' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 20 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 35 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	रत्नेश बोहरा-जोधपुर	35
द्वितीय पुरस्कार-200/-	मीनाक्षी जैन-समदड़ी,बाड़मेर	35
तृतीय पुरस्कार- 150/-	वन्दना गेलड़ा-भदेसर	33
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	रेखा सरूपरिया-भदेसर	33
	गजेन्द्र कुमार जैन-जयपुर	32
	अर्पित जैन-जोधपुर	30
	दीप्ति जैन-कोटा	30
	श्रेणिक आर. छाजेड़-जलगांव	30

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (27)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा का आयोजन सितम्बर 2010 के पश्चात् पुनः प्रारम्भ किया गया है। इस बार प्रतियोगिता 'जिनवाणी' के "नवम्बर-2011 से जनवरी-2012" के अंकों पर आधारित है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर श्री सुमतिचन्द मेहता, निदेशक-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, गजराज नेमीचंद जैन किराणा मर्चेन्ट, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601 (राज.), फोनः 94141-16766 के पते पर 5 मार्च 2012 तक मिल जाने चाहिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी अंकों में दीजिए–

1. रौद्रध्यान.....प्रकार का कहा गया है।
2. अस्थित कल्प मध्य के .....तीर्थंकरों के शासनकाल में होता है।
3. देशभर में केन्द्र सरकार में ..... कर्मचारी है।
4. काल ..... प्रकार का कहा गया है।
5. भारत के पास ऐसे .....से भी अधिक युवा हैं।
6. बौद्ध दर्शन में ..... प्रकार के राजधर्म बताए गए हैं।
7. मुनि आचार विषयक पंचम अध्याय में .....आवश्यक की प्रामाणिक चर्चा की है।
8. राणा उदयसिंह ने भारमल्ल को..... ई. में .....पट्टे की जागीरी दी।
9. आपने मुझे प्रसन्न रहने के .....सोपानों को समझाने की बात लिखी थी।
10. यदि कोई अपने आचरण में ..... प्रतिशत अभ्रष्ट है और ..... प्रतिशत भ्रष्ट है तो वह पाखण्डी है।
11. सूचना का अधिकार, 2005 में कुल ..... धारा है।
12. पातिमोक्ख में ..... अपराधों का उल्लेख है।
13. ..... सितम्बर, ... को अमेरिका में ट्विन टॉवर गिरा था।
14. जैन दर्शन में श्रावक बनने की भूमिका में मार्गानुसारी के .... गुण बताए गए हैं।

15. स्थानांग सूत्र में धर्म के ..... द्वार बताये गये हैं।

मात्रा नहीं है इसमें साहब, शीघ्र दीजिए उत्तर जनाब–

16. .... और झगड़े का वातावरण होगा तो लोग अंगुली निर्देश करते हैं। (3)
17. हमारा ज्ञान गुण ..... है। (3)
18. त्यागें ..... हम सभी, विनय, सरलता जीवन में अपनायें। (3,5)
19. ..... की अरुचि से .... की रुचि सबल बनती है। (2,1)
20. ..... पर निष्ठा होना अत्यन्त दुर्लभ है। (2)
21. मंजिल की ..... में, उलझ रहे हैं इस कदर। (4)
22. जो काम ..... से नहीं होता, वह नम्रता से हो जाता है। (2)
23. ..... उसके जीवन में कभी आया ही नहीं। (2)
24. जहाँ बच्चे माँ–बाप को प्रतिदिन लड़ते देखते हैं, वहाँ माँ–बाप की सलाह उन पर ज्यादा .... नहीं करती। (3)
25. हम दूसरों के दुःख दूर करके आगे बढ़ सकते हैं। यही अनुकम्पा है। यही..... हैं। (3)
26. ..... णं झाणस्स चतारि लक्खणा पण्णत्ता। (3)
27. शब्द ..... का रूप ले सकते हैं, तो गाली का भी। (4)
28. ..... की महाव्याधि का मूल मिटाता संयम है। (5)
29. आचार्य श्री के .... प्रयासों से लोगों में धर्म के प्रति श्रद्धा जगी। (3)

मुझे पहिचानो भाई, काटलो कर्मों की खाई–

30. मैंने पोरवाल–पल्लीवाल रूपी बाग को सिंचित कर पुनर्जीवित किया।
31. मैं हूँ तो दुःख है, मेरे विपरीत से सुख है।
32. मैं कुल मर्यादा, शिक्षा, सभ्यता आदि का मन पर पड़ने वाला प्रभाव हूँ।
33. मेरे द्वारा किसी का उपकार कर, यश–पुण्यादि कमाया कर।
34. मुझको लक्ष्य बनाना बड़ा कठिन है।
35. मेरे जीवन के दो प्रमुख लक्ष्य–भारत की स्वतन्त्रता और स्वतंत्र भारत का निर्माण।
36. मैं नवें–दसवें पूर्व तक का धारक हूँ।
37. मेरे सेवन से आचार ग्रहण, आचार ग्रहण से दृष्टि सर्जन।
38. मैं इतिहास में 'मेराथन' के नाम से प्रसिद्ध युद्ध हूँ, जिसमें भामाशाह और ताराचन्द की प्रमुख भूमिका रही।

39. मुझे अध्यात्म का चौका कहा गया है।
40. मेरी पवित्रता और निर्मलता के बिना आचार की शुद्धता नहीं आ सकती।
41. सामान्य मनुष्य मुझे सम्यक् रखने हेतु गंभीरता से प्रयत्न नहीं करता।
42. आज के तनावयुक्त वातावरण से मुक्त होने का सरलतम, सभी समय उपलब्ध एक साधन हूँ।
43. मेरा मतलब हिंसा-जगत् से पीछे हटना है।

'जिनवाणी' में आए आलेखों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

44. भ्रष्टाचार पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने क्या टिप्पणी की थी?
45. नाभि कमल किसे कहते हैं? इसकी क्या विशेषताएँ हैं?
46. भ्रष्टाचार का दलदल देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने क्या सख्त टिप्पणी की थी?
47. धर्मकथा किसे कहते हैं?
48. आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दृष्टि में 'भ्रष्टाचार' की परिभाषा लिखिए।

'पहेली' को आप बुझाओ-धर्म में ध्यान लगाओ- 'जिनवाणी' में रम जाओ। विशेष:- पहेली के जवाब मुख्य शीर्षकों से ही होंगे-

49. ऋषभ से महावीर की बातों को, हमको ये बतलाती है।
    धर्म के सन्मुख रहने का, सदा मार्ग बताती है।।
    पहेली प्रश्न का हल निकालना, उत्तर में है रम जाना।
    गुरु से है वाचित-आचरित, मुक्ति पथ दिखलाती है।।
50. तीर्थंकरों ने भी इसको गाया, गुरुओं ने भी इसको ध्याया।
    हमने भी है इसको पाया, तुमने भी इसको है पाया।।
    यातायात का भी है साधन, निधि अंक हमें सिखाया।
    शून्य से 'अनन्त' की यात्रा, संयम को आधार बनाया।।

लेखकों से निवेदन

जिनवाणी में प्रकाशन हेतु मौलिक रचनाओं का सदैव स्वागत है। आप विभिन्न स्तम्भों के अनुकूल ऐसी रचनाएँ प्रेषित करें जो ज्ञानवर्द्धक होने के साथ आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की रक्षक हों। शोधालेख एवं वैज्ञानिक आलेख भी स्वागतार्ह हैं।-**सम्पादक**

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (23)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह ग्यारहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 मार्च 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-2)

(पृष्ठ 500 से 560 तक से प्रश्न)

'प' अक्षर से प्रारम्भ शब्दों द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:-

1. वैरोट्या का.... नामक सार्थवाह के साथ पाणिग्रहण हुआ।
2. स्वर्ग की प्राप्ति अथवा इन्द्रासन के लिए ..... करना उचित है।
3. भगवान महावीर के निर्वाण के 470 वर्ष ..... विक्रमादित्य नामक एक प्रतापी राजा हुआ।
4. धन-धान्य आदि ..... के सम्पूर्ण त्यागी आचार्य ने विक्रमादित्य को कहा।
5. जिन महापुरुषों की कृपा से हमने भुलाए हुए ईश्वर और उसके.... ज्ञान को जाना।
6. बांधों के निर्माण के लिए एक.... का निर्माण किया जाता था।
7. बहुश्रुत और बहुपरिवार वाले आचार्य कालक यहां .... रहे हैं।

8. राजा तथा .... ने सम्मान पूर्वक आचार्य श्री का नगर प्रवेश करवाया।
9. विक्रम की न्यायप्रियता .... आदि अनेक वर्णन उपलब्ध होते हैं।
10. सिद्धसेन ने लम्बे समय तक .... संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया।
11. सभी तिथियों में यह 60 वर्ष का अन्तर स्पष्ट .... होता है।
12. भीषण युद्ध के पश्चात् उज्जयिनी की सेना बुरी तरह .... हुई।
13. एक दिन पहले चतुर्थी को .... कर लिया जाय तो क्या हानि है?
14. ..... स्वर में उत्तर सुन कर सिद्धसेन चौंक उठे।
15. ..... भाव से वे अपने पूर्वकृत प्रमाद की निन्दा करते रहे।

सही मिलान कीजिए:-

16. पाटली पुत्र	-	भर्तृहरि
17. आर्य मंक्षु	-	सातवाह
18. महेश प्रसाद	-	सिद्धसेन
19. शशिगुप्त	-	मुरुण्डराज
20. देववाचक	-	नागहस्ती
21. भानुश्री	-	तक्षशिला
22. स्वर्णभूमि	-	मौलवी आलम
23. वृद्धवादी	-	देवद्धिक्षमाश्रमण
24. गर्दभिल्ल	-	बलभानु
25. अमरफल	-	सागर

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (20) का परिणाम

जिनवाणी नवम्बर, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 247 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- डालचन्द जैन-जयपुर

द्वितीय पुरस्कार- पी. संगीता वैद-चेन्नई

तृतीय पुरस्कार- सुधा भंसाली-जोधपुर

सान्त्वना पुरस्कार-

1. चन्द्रकला रांका-भड़गांव (महा.)
2. रीना जैन-बालोद (महा.)

3. राखी जैन-दूनी, टोंक (राज.)

4. मंजु जैन-हिण्डौन सिटी (राज.)

5. कमला सुराणा-जोधपुर (राज.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Aastha jain-Beawar, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Anil Jain-Kota, Anita Muhnot-Ichalkaranji, Anjana Rajendra Katkani-Dewas (M P), Anu Jain-Hoshiarpur, Anurag Surana-Ajmer, Aruna Jain-Kurukshetra, Aruna Jain-Hoshiarpur, Asha Doshi-Jaipur, Atishay Jain-Dondilohara, Babulal jain-Jaipur, Balwantsingh Choradia-Jhalrapatan, Basanta Madanlalji Sankhlecha-Nandana (Dhulia), Bharti Surpure-Ichalkaranji, Bhikamchand Kothari-Chennai, Chameli Jain-Durg, Chandanmal Palrecha-Jodhpur, Chandni Jain-Indore, Chandra Muhnot-Mumbai, Chandra Pokharna-Ajmer, Chandrakala Mehta-Bangalore, Chandrakala Ranka-Bhadgaon, Chetna B Bothra-Mumbai, Chinmay Jain-Dondilohara, Dalchand Jain-Jaipur, Deepmala Singhvi-Pali, Devendranath Modi Jodhpur, Devilal Bhanawat-Kanore, Divya Daga-Jaipur, Ghewarchand chajed-Bellary, Gunmala Jain-Chittorgarh, Gyanchand Kothari-Ajmer, Hajarimal Jain-Durg, Hansadevi Suran-Bikaner, Heera Karnawat-Ahmednagar, Hema Kothari-Jaipur, HemaKishore Baghmar-Secunderabad, Hemlata kherada-Bhilwara (Raj), Hemlata Kothari-Beawar, Hemraj Surana-Jaiopur, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Janeshwardas Jain-Pilukhera mandi, Jaya Bhandari-Beawar, Jayamala Jain-Sawaaimadhopur, Jayamala Kankaria-Pali, Jethmal Jain-Jodhpur, Joharimal Chajed-Jodhpur, Kalpana Dhakad-Gurgoan (Haryana), Kamla Modi-Jodhpur, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamlesh Galada-Ajmer, kanak Bader-Delhi , Kanhaiyalal Jain-Bhilwara, Kantichand Navlakha-Jaipur, Kanwalraj Mehta-Jodhpur, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kishoremunisa-Bikaner, Komal Ankur Kothari-Baroda, Krishna Agarwal-Jaipur, Ksama Jain-Mumbai, Kuntalkumari Jain-Jaipur, Kusum Punamia-Ichalkaranji, Lalita Gadiaya-Hyderabad, Lalita Surana-Sholapur, Leena Jain-Chiplam, Madanlal Sancheti-Hyderabad, Madhubala Bohra-Ichalkaranji, Manali Pipada-Ichalkaranji, Manila Parekh-Jaipur, Manju Bhandari-Beawar, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Jain-Karauli, Manjula Vasant Jain-Mumbai, Maya Alijar-Secunderabad, Meena Choradia-Chennai, Meena Nahar-Ichalkaranji, Meena Vijay Bohra-Mumbai, Meenakshi Lodha-Gurgoan(haryana), Milap.P.Lunawat-Ahmedabad, Minu Jain-Chennai, Mrudala Kumbhat-Jodhpur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, N.M.Jain-Ajmer, Nanda Kothari-Ahmednagar, Narendra Bumb-Bhayandar, Nathmal Kothari-Balod, Neelam Jain-Gurgoan (Haryana), Neelam Chipar-Dudu, Neelam jain-Ajmer, Neelam Kankaria-Nagore, Neelima Yogesh Chopra-Ichalkaranji, Neetu Golecha-Hyderabad, Neha Jain-Sawaimadhopur, Nenchand Bafna-Jodhpur, Nirmala Chopra-Jabalpur, Nirmala Hirawat-Jaipur, Nirmala.H.Surana-Bikaner, Nirmala.R.Bohra-Ichalkaranji, Nirmala.V.Gundecha-Ichalkaranji, Nutan Bhandari-Ichalkaranji, P.Sangeeta Baid-Chennai, Parasmal Baghmar-Patodi (Barmer), Parshikha Tatia-Jalgaon, Pinky Jain-Jaipur, Pooja Bora-Ichalkaranji, Poonam Jain-Farid-kot, Prabha Golecha-Bangalore, Prabha kishan Kataria-Mumbai, Prakash Kankaria-Raichur, Pramila .S. Mehta-Bangalore, Pramila Bohra-Pali, Pramila Mehta-Ajmer, Pramila Mehta-Dudu, Pramila Jain Pokharna-Dhulia, Prasan Gang-Mumbai, Praveenji Baradia-Dhulia, Preeti Jain-Bharatpur, Preeti Khincha-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Premlata Lodha-Jaipur, Premlata Sand-Pali, Priyanka Chopra-Ichalkaranji, Pushpa Golecha-Beawar, Pushpa Jain-Jaipur, R.Chandra Bothra-Chennai, Rajendra Chopra-Jabalpur, Rajendraji Mutha-Amrawati, Rajkumar Lodha-Jaipur, Rajkumari Jain-Delhi , Rajul Kothari-Dhulia, Rakhi Jain-Dooni (Tonk), Ranulal Kochar-Nasik, Ratanchand Mehta-

Jodhpur, Reema Jain-Ludhiana, Reena Jain-Balod, Rekha Kothari-Ajmer, Rekha Surana-Nagaur, Rikhabraj Bohra-Delhi , Rishabh Jain-Sumerganj Mandi, Rohit Oswal-Jaipur, Sadhna gugale-Ichalkaranji, Sagarmalji Nahar-Chittorgarh, Sangeeta NainSukh Alijar-Challisgaon, Sangeeta Singhvi-Nasik, Sapna Jain-Gangapur city, Sapna Jain-Amrawati, Sarita Babel-Ichalkaranji, Sarla Bhansali-Durg, Sarla.Ramesh Chajer-Bhusawal, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasji Roonwal-Dhulia, Seema Dhing-Udaipur, Seema Jain-Tonk (Aligarh), Shakuntala Bohra-Secunderabad, Shakuntalbai kushalchandji khiweshra-Amalner, Shakuntla Bohra-Ichalkaranji, Shanta Pitalia-Amrawati, Shashank Chaudari-Jaipur, Shashikala .P. Lunawat-Nasik, Shashikala .Sukhlecha-Bangalore, Shilpa Priteshji Surana-Jalgaon, Shilpa Surana-Ajmer, Shobha Nahar-Secunderabad, Shobha Nandlalji Gugle-Ichalkaranji, Shobha Sagarmalji Kothari-Dhulia, Shweta Jain-Dooni (Tonk), Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Muthian-Ichalkaranji, Snehlata Jain-Ratlam, Subhash Dhariwal-Bhayandar, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Sunaina-Borawar, Sunila Doshi-Beawar, Sunita Dusaj-Jaipur, Sunita Navlakha-Kota, Sunita Oswal-Jaipur, Sunita Singhvi-Chennai, Surekhaji Nahar-Jaipur, Sureshkumar Sand-Pali, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Hirawat-Jaipur, Sushila J Begani-Bikaner, Sushila Roonwal-Pune, Suwarna Bora-Ichalkaranji, Tilak Manjari Mehta-Hospet, Ugam Mulchandji Doshi-Secunderabad, Ugamadevi Dugar-Bangalore, Upma Choudhary-Ajmer, Usha Lunawat-Ajmer, Usha Surana-Jaipur, Uttamchand Shankla-Raipur, Vandana Punamiya-Pali, Vandna Khicha-Surat, Vanita Challani-Beawar, Veemaji kimtee-Rampura(M.P.), Vidhya Singhvi-Badnawar (M .P.), Vijaylakshmi-Ajmer, Vijay lakshmi Muhnot-Ajmer, Vikas Bumb-Mumbai, Vimal.R.Kochar-Nasik, Vimala Khivmasara-Dhulia, Vimla Bohra-Jaipur, Vimla Kankaria-Jalgaon, Yugal Ranka -Ahmedabad.

24 अंक प्राप्तकर्ता– Archie Jain-Ichalkaranji, Basanti Champalal Bhatevda-Ichalkaranji, Chandanmal Gugalia-Vijaywada, Kalpana Kataria-Gurgaon (Har.), Kamal Choradia-Khedali (Alwar), Kamala Surana-Bhandara, Kusum Singhvi-Chittorgarh, Lata Satish Aanchanlia-Kolkatta, Madhu Lunawat-Jodhpur, Manju Jain-Varanasi, Manju kashtia-Jodhpur, Manju Mutha-Beawar, Manju Ostwal-Jaipur, Mohan Lodha-Jaipur, Mohanlal Bhandari-Jaipur, Mohnot .Hansraj Jain-Jaipur, Neeta Kankaria-Jodhpur, Padamchand Agarwal-Ranawas, Pista Golecha-Ajmer, Prakashbai Bhurawat-Chennai, Pramila .K. Kothari-Jaipur, Prasan Kothari-Jaipur, Pravina Kothari-Jodhpur, Prem Kanta Kothari-Jodhpur, Rajani Bhandari-Hindon city, Ratan Karnawat-Chalisgaon, Ravindra Chajed-Jaipur, Renu Hirawat-Jaipur, Sarla Golecha-Jaipur, Sugalchand Chajed-Nagpur, Suresh Jain-Dhulia, Tara Bafna-Dhulia, Trupti Pritamji Bohra-Dhulia, Urmila Mehta-Jodhpur, Vimla Mehta-Doddabalapur(Bangalore), Yashoda Gundecha-Daund.

23 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Akhilesh Jain-Gajendragadh, Anita Ashokji Khiweshra-Sultanpur, Chandralata Mehta-Mumbai, Isha Jain-Navsari (Gujarat), Kiran.P.Tated-Wardha, Monica Jain-Dewas(M.P), Pushpa Navsukhlal Pincha-Dudu, Sandhya R. Daga-Jodhpur, Vijayadevi Baghmar-Goti Agra Road, Kamala Singhvi-HSP, Manju Jain-Jaipur, Rajkumar Navlakha-Jodhpur, Renumal Jain-Bhadgaon.

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (21) का परिणाम

जिनवाणी दिसम्बर, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 265 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया

गया है।

प्रथम पुरस्कार- बाबूलाल कटारिया-हैदराबाद

द्वितीय पुरस्कार- आशा डोसी-जयपुर

तृतीय पुरस्कार- राजकुमार जैन-दिल्ली

सान्त्वना पुरस्कार-

1. सुनीता डोसी-ब्यावर (राज.)
2. शिल्पा सुराना-अजमेर (राज.)
3. मनोज कोठारी-उदयपुर (राज.)
4. किरण जैन-होशियारपुर (पंजाब)
5. चन्दनमल्ल गुगलिया-रानावास

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Aabha Jain-Kherli (Raj), Abhilasha Hirawat-Mumbai, Anita Atulji Munot-Ichalkaranji, Anurag Surana-Ajmer, Asha Doshi-Jaipur, Babulal Kataria-Hyderabad,Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Bhawanrajji Singhvi-Pali, Chandrakala Dilipji Ranka-Bhadgaon, Chetna B Bothra-Mumbai, Devilal Bhanawat-Kanore (Udaipur), Divya Daga-Jaipur, G.C.Kothari-Ajmer, Gunmala Jain-Chittorgarh, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Jyoti Bhansal-Bangalore, Kamala Devi Sethia-Ajmer, Kamala Surana-Jodhpur, Kamlesh Galada-Ajmer, Komal Ankur Kothari-Baroda, Krishna Agarwal-Jaipur, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Kusum Punamia-Ichalkaranji, Lalita Gadia-Hyderabad, Madhubala Pramodji Bohra-Ichalkaranji, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manjula Vasantji Jain-Mumbai, Manoj Babel-Ichalkaranji, Manoj Kothari-Udaipur, Meena Choradia-Chennai, Meena Vijay Bohra-Mumbai, Meenabai Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji,Mrs. Yugal Nemichand Ranka-Ahmedabad, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Neelam Chipad-Dudu, Jaipur, Neelima Yogesh Chopra-Ichalkaranji, Nemchand Bafna-Jodhpur, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Padamchand Munoth-Jaipur, Padma Bohra-Raichur, Parasmull Doulatraj Bagmar-Patodi (Barmer), Prabha Golecha-Bangalore, Pramila Kailash Kothari-Jodhpur, Pramila Mehta-Ajmer, Pramilla Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Priyanka Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pushpa Kankaria-Raichur, Pushpa Nawlakha-Jaipur, R.Chandra Bothra-Chennai, Rajkumar Jain-Delhi ,Rajkumari Lodha-Jaipur, Rekha Kothari-Ajmer, Roopa Jain-Bajaria, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sagarmalji Nahar-Chittorgarh, Sangeeta Baid-Chennai, Sangeeta Ravindra Chajed-Chalisgaon, Seema Dhing-Udaipur, Shilpa Surana-Ajmer, Shoba Gugale-Ichalkaranji, Shobha Rajendra Chajed-Bhusawal, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Muthian-Ichalkaranji, Smt. Narendra Gopichand Bomb-Bhayandar, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sunita Doshi-Bewar, Sushila J Begani-Bikaner, Sushila Tated-Bhilwara, Tilak Manjari Mehta-Hospet, Urmila Mehta-Jaipur, Usha Surana-Jaipur, Varsha Doshi-Merta City, Vijaya Devi Rikhabchandji-Gajendragad, Vikas Bomb-Mumbai, Vimla Mehta-Jodhpur.

24 अंक प्राप्तकर्ता- Anjana Rajendra Jain-Devas (M.P), Arpit Jain-Jodhpur, Aruna Sanjeev Jain-Hoshiarpur (Punj), Balwan Singh Choradia-Jhalarapatan, Bhavika M Shah-Belgaum, Bhikamchand Kothari-Chennai, Chameli Jain-Durg,

Chandanmull Gugaliya-Ranawas, Chandanmull Palrecha-Jodhpur, Chinmaya Jain-Durg (C.G.), Chirag Jain-Gangapur City, Dalchand Jain-Jaipur, Davendranath Modi-Jodhpur, Deepmala Singhvi-Pali, Dharmesh Poonamia-Pali, Hema Kishore Bagmar-Secunderabad, Hemlata Kerda-Bhilwada, Hemlatha Jain-Beawer, Isha Padamchand Jain-Navsari, Javer M Shah-Belgaum, Jayamala Kankaria-Pali, Kalpana Dhakad-Gurgaon (Haryana), Kamal Choradia-Jaipur, kamala Singhvi-Jaipur, Kamla Modi-Jodhpur, Kiran Jain-Hoshiarpur (Punj), Kiran Kothari-Jaipur, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lalita Surana-Sholapur, Leena Mahendra Jain-Chiplun, Madanlal Bagmer-Gangavati, Madanlal Sancheti-Hyderabad, Madhu Loonawat-Varanasi, Madhubala Osatwal-Nasik, Mamta Jain-Gangapur City, Manju Kashtiaya-Kolkata, Manju Palrecha-Jodhpur, Manju Sandeep Mutha-Ichalkaranji, ManjuNihalchandji Janged-Jaipur, Meenakshi Lodha-Gurgaon (Haryana), Meenu Jain-Chennai, Mohani Kumari Lodha-Ajmer, Moonali Misrilal Pipadu-Ichalkaranji, Nathmull Kothari-Balod (Durg), Nawratmull changairiya-Ajmer, Nirmala Chopda-Jabalpur, Nirmala Hameermul Surana-Bikaner, Nirmala Kumari Hirawat-Jaipur, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Pooja Nitin Bohra-Ichalkaranji, Poonam Jain-Faridkot (Punj), Prabha Kishan Kataria-Mumbai, Pramila Mehta-Dudu, Pramila Vinod Kumar Bohra-Jetaran, Prasan Kothari-Jodhpur, Praveena Kothari-Jaipur, Prem Kushal Sacheti-Alwar, Premlata Shand-Pali, Puspa Hastimul Golecha-Beawer, Puspa Mehta-Ajmer, Rajeev Mehta-Ajmer, Rajendra Kumar Chopda-Jabalpur, Rakesh Kumar Jain-Jaipur, Rakhee Jain-Dooni (Tonk), Reenu Hirawat-Jaipur, Rikhabraj Bohra-Delhi, Rohit Oswal-Jaipur, Sangeeta Alizar-Chalisgaon, Sangeeta Jain-Faridabad, Sarla Bhansali-Dondilohara (Durg), Sarla Golecha-Beawer, Sarla Kankaria-Jalgaon, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasmullji Roonwal-Dhulia, Shanta Chamenji Pitaliya-Amrawati, Shashank Chowdry-Jaipur, Subash Mohanlalji Dhariwal-Bhayandar (Mumbai), Sudha Daga-Bikaner, Suganchand Chajed-Jodhpur, Suneeta Dusag-Jaipur, Suneeta Oswal-Jaipur, Suneeta Singhvi-Chennai, Surbi Nahar-Bhopal (M.P.), Surekha Bhandari-Peepalgaon, Suresh Kumar Sand-Pali, Susheela Surana-Nasik, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Ranka-Jalgaon, Suvarana Nitin Bohra-Ichalkaranji, Swetha Jain-Dooni (Tonk), Swetha Mahendra Bafna-Nasik, Trupti Preetamji Bohra-Ichalkaranji, Ugma Devi Digar-Bangalore, Usha Loonawat-Ajmer, Vandana Poonamia-Pali, Veena Tarunji Kimtee-Rampura, Vijaylakshmi-Ajmer, Vimlabai Kankaria-Jalgaon, Anu Jain-Hoshiarpur (Punj), Ugam Doshi-Secunderabad, Neetu Golecha-Secunderabad, Prasan Garg-Mumbai.

23 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Anilkumar Jain-Kota, Arti Rajendrakumarji Mutha-Amrawati, Atishay Jain-Dondi Lohara, Basanta Madanlalji Saklecha-Nandana, Chandra Munot-Mumbai, Chandrakala Mehta-Bangalore, Ghewarchad Chajed-Bellary, Hira Karnawat-Ahmednagar, Jaya Bhandari-Beawar, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Manila Parekh-Jaipur, Maya Alizar, Secunderabad, Monika Jain-Kapurtala, Neelam Jain-Gurgaon, Nikhil Bhandari-Jodhpur, Nisha Jain-Aligarh (Tonk), Pista Golecha-Jaipur, Premlata Lodha-Jaipur, Pushpa Navshuklal Pincha-Ghoti (Maharashtra), Rajni Bhandari-Gurgaon, Ratan Karnawat-Jaipur, Reema Dinesh Jain-Ludhiana, Sandya Rajendra Daga-Hinganghat, Shakuntala Bohra-Secunderabad, Smt. Milap Loonawat-Ahmedabad, Suneeta Nawlakha-Kota, Sureshchand Jain-Alwar, Susheela Hirawat-Jaipur, Sushma Dhariwal-Jaipur, Upama Chowdary-Ajmer, Vidya Sanghvi-Badnawar (MP), Vimla Bohra-Jaipur, Vimla Khimsura-Dhulia, Yoshada Manakchandji Gundecha-Nagpur, Shoba Nahar-Secunderabad, Manjula Jhamad-Jaipur, Akhilesh Jain-Jodhpur, Babulal Jain-Jaipur, Gargi Kataria-Bhilwara, Hansraj Jain-Jaipur, Hazarimull Jain-

Dondilora, Hemlata Kothari-Dhulia, Janeshwardas Jain-Pilukhera Mandi, Jhorimul Chajed-Jodhpur, Kanak Bader-Delhi, Kiran Pramod Tated-Devas (MP), Lata Anchalia-Dhulia, Manju Bhandari-Beawar, Manju Jain-HSP, Manju Satish Jain-Karoli (Raj), Mitali Gandhi-Bhilwara, Neelam Jain-Ajmer, Nirmala Rajendraji Bhora-Ichalkaranji, Padamchand Agarwal-Jaipur, Paras Kataria-Bhilwara, Prakash Bai Bhurawat-Bhandara, Pramila Babulal Pokarna-Dhulia, Preeti Khincha-Jaipur, Premlata Jain-Gangapur City, Rajkumari Nawlakha-Jaipur, Ranulal Kochar-Nasik, Rishab Jain-Sumerganj Mandi, Sashikala Pradeepji Loonawat-Nasik, Shanta Kataria-Bhilwara, Shivangi Gandhi-Bhilwara, Sunayna Getra-Borawar, Suneeta Gandhi-Bhilwara, Susheela Kantilalji Roonwal-Poona, Vijaylakshmi Munot-Jaipur, Aditya Kumar Jain-Nagpur, Ajit Ranka Dr.-Bhadgaon, Arti Jain-Chittorgarh, Asta Jain-Beawar, Bvanita Challani-Beawar, Chanchal Sen-Beawar, Hemraj Surana-Jaipur, Jyoti Jain-Baran (Raj), Kanwalraj Mehta-Jodhpur, Lalita Devi Roonwal-Bijapur, Nandalal Jeetmulji Roonwal-Bijapur, Neeta Kankaria-Doddaballapur (Bangalore), Pinky Jain-Jaipur, Ratachand Mehta-Jodhpur, Sashi Saklech-Bangalore, Shakuntala Khivsara-Jalgaon, Shiromani Jain-Shajapur (MP), Urmila Kankaria-Chennai, Vimal Kochar-Nasik.

प्रेरक-प्रसंग

अत्याचारी तानाशाह का अंत

श्री प्रेमचन्द बापना

इस जीवन तथा संसार में कुछ भी निश्चित एवं स्थायी नहीं है। कई तानाशाह और जालिम हुक्मरान व्यक्तिगत लालच, दम्भ और धन-सम्पत्ति की भूख के कारण अपने शासन काल में प्रजा का शोषण करते रहे और अन्त में उनको वह सब कुछ छोड़कर जाना पड़ा जो उन्होंने अत्याचार-अनाचार के बल पर अर्जित किया था। ऐसा हाल ही में लीबिया के तानाशाह मुअम्मर अल गद्दाफी के साथ हुआ। कर्नल गद्दाफी ने राजशाही समाप्त कर लीबिया की सत्ता संभाली। वे 42 वर्ष तक वहाँ के राष्ट्रपति रहे। अपने शासन के दौरान गद्दाफी ने 143 हजार किलो सोना एकत्रित कर रखा था। उनकी पत्नी साफिया 30 अरब डालर और 20 हजार किलो सोने की मालकिन बन गई थी। गद्दाफी ने अय्याशी, ऐशो आराम और विलासिता के लिये इतना कुछ किया कि इतिहासकारों को लिखने में पृष्ठों की कमी पड़ जाएगी। जो व्यक्ति हिंसा, क्रूरता और आतंक का पर्याय बना हुआ था वह अपने अन्तिम समय में ज़िन्दगी के लिये गिड़गिड़ा रहा था, भीख मांग रहा था, परन्तु वह जिन्दगी नहीं बचा पाया और भयावह मौत का शिकार हुआ। तानाशाही, अत्याचार और हिंसा का यही हश्र होता है।

-85, संतनगर, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(1 फरवरी,2012)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	: भोपालगढ़ से विहार कर नाडसर, बारनी होते हुए असावरी पधारे हैं। हरसोलाव होते हुए गोटन की ओर विहार संभावित है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	: बीकानेर से विहार कर गंगाशहर पधारे। यहाँ से नागौर की ओर विहार संभावित है।
सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा 5	: भोपालगढ़ से गोटन, रणसीगाँव फरसते हुए बोरून्दा पधारे है। अग्र विहार गोटन की ओर चल रहा हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 8	: शक्तिनगर, जोधपुर विराज रहे हैं। उपनगरों में विहार की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: गुलाबपुरा से विजयनगर पधारे है। कंवलियास की ओर विहार संभव है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9	: आष्टा में आचार्य हस्ती जन्म-दिवस मनाकर हाटपीपलिया पधारे है। यहाँ विराजने की संभावना है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	: जोधपुर के शास्त्रीनगर में विराज रहे है। उपनगरों में विहार संभावित है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	: मानसरोवर, जयपुर विराज रहे है। उपनगरों में स्पर्शना संभव है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	: असावरी से गोटन की ओर विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	: असावरी से गोटन की ओर विहार संभावित है।

सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9	:	श्याम नगर में विराज रहे है। जोधपुर के उपनगरों में विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11	:	वडपल्ली विराज रहे है। चेन्नई के उपनगरों में विचरण संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	इन्दौर से विहार कर बलकवाडा पधारे हैं। खरगोन की ओर विहार संभावित है।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	हिण्डौन सिटी से मलोनी पधारे हैं तथा भरतपुर की ओर विचरण चल रहा है।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	करडावद पधारे हैं। यहाँ से हाट पीपलिया की ओर संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	भोपालगढ़ से असावरी होते हुए गोटन की ओर विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	रत्न स्वाध्याय भवन, जयपुर विराज रहे हैं। उपनगरों में विहार संभावित है।

तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया की मदनगंज श्री संघ को स्वीकृति

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन श्री चरणों में स्थान-स्थान के श्री संघ व श्रद्धालु शेखेकाल क्षेत्र फरसने व अक्षय तृतीया का लाभ देने की निरन्तर विनतियाँ रख रहे हैं। आचार्यप्रवर ने 29 जनवरी, 2012 को बारनी में मदनगंज श्री संघ के पदाधिकारियों एवं संघ सदस्यों की पुरजोर विनति का समादर करते हुए साधु-मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ तप व दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया की स्वीकृति मदनगंज श्री संघ को प्रदान की।

अक्षय तृतीया (24 अप्रेल, 2012) पर तप साधक जहाँ पूज्य आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर मदनगंज श्री संघ के तत्त्वावधान में आयोजित तप पूर्णाहुति कार्यक्रम में भाग लेंगे वहीं नवीन तप अंगीकार करने वाले श्रद्धालु एकान्तर तप का शुभारंभ भी करेंगे। तप साधकों एवं नवीन तप अंगीकार करने वालो से निवेदन है कि वे निम्न

महानुभावों में से किसी को भी अपने कार्यक्रम की अग्रिम सूचना करने का कष्ट करें:- (1) श्री सुरेन्द्र कुमार संकलेचा, अध्यक्ष-99295-91180, (2) श्री भागचन्द जी कोचेटा, मंत्री- 97992-99746, (3) श्री राजेन्द्र कुमार जी डांगी, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर-305801 (राज.), फोनः 01463-242086, 245523, 94140-12286 (मोबाइल)

फाल्गुनी चौमासी का लाभ मेड़तासिटी को

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 102 वें जन्म-दिवस के पावन प्रसंग पर विभिन्न श्री संघों की विनति के चलते भक्ति नगरी मेड़ता श्री संघ को फाल्गुनी चौमासी (7 मार्च 2012) की साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ स्वीकृति प्रदान की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के असावरी, हरसोलाव, गोटन आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को पावन करते हुए मेड़ता शहर की ओर विहार की संभावना है।

गोटन में 6 फरवरी से 15 फरवरी 2012 तक ध्यान-साधना शिविर रखा गया है। मेड़तासिटी का सम्पर्क-सूत्रः- श्री जबरचन्द जी चोरडिया-अध्यक्ष, श्री हस्तीमल जी डोसी-मंत्री, डोसी ब्रदर्स, डी-3, कृषि मण्डी, मेड़तासिटी-341510, जिला-नागौर (राज.), फोनः 01590-220181, 94133-68997, 94141-19152, श्री विमलचन्द जी बाघमार-94137-59647

आचार्य हस्ती का 102 वां जन्म-दिवस देशभर में तप-त्यागपूर्वक मनाया

उस महनीय महापुरुष के जीवन से मिलती है प्रेरणा -आचार्य हीरा

क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में गुरु हीरा के सान्निध्य में आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज के 102 वें जन्म-दिवस पर सामायिक-स्वाध्याय भवन, भोपालगढ़ में त्याग-तप, जीवदया और स्वधर्मि-वात्सल्य सेवा के क्षेत्र में आबाल-वृद्ध सबके उत्साह से गुरुभक्ति की भावना मानो हिलोरें ले रही थीं। पौष शुक्ला चतुर्दशी के दिन भीषण ठण्ड थी, पर भक्ति की शक्ति के आगे ठण्डी हवाओं के चलते भी जन-मानस में गुरु हस्ती के जन्म-दिवस को उनके पट्टधर के पावन सान्निध्य में मनाने का जज्बा ही कुछ ऐसा था कि जोधपुर, पीपाड़, मेड़ता, बालोतरा, ब्यावर, जयपुर, विजयनगर, बारनी,

अरटिया, नाडसर, हीरादेसर, सवाईमाधोपुर, हाउसिंग बोर्ड (सवाईमाधोपुर) तक के ही नहीं, अपितु बैंगलोर-चैन्नई तक के सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा की चरण-सन्निधि में पहुँचकर युगद्रष्टा-युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के गुणकीर्तन-गुण स्मरण तो किए ही, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा., महासती श्री शशिकलाजी म.सा. आदि ठाणा 14 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति का लाभ लिया।

प्रातः करीब 9.15 बजे प्रवचन सभा का शुभारम्भ **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.** ने किया। मुनिश्री ने गुरु-शरण और गुरु-चरण दोनों की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में कहा कि गुरु की शरण शांति देती है तो गुरु के बताये मार्ग पर चरण बढ़ाने से सिद्धि प्राप्त होती है। मुनिश्री ने गुरु हस्ती के व्यक्तित्व-कृतित्व पर सधे शब्दों मैं गुणगान कर उपस्थित जनसमुदाय को गुरु हस्ती-गुरु हीरा के बताये मार्ग पर बढ़ते रहने की प्रभावी प्रेरणा की।

महासती श्री रिद्धिप्रभाजी म.सा., महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा., महासती श्री विमलावतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. ने गद्य-पद्य भाषा-भाव में गुरु गुणगान कर अपनी-अपनी श्रद्धा उस दिव्य-दिवाकर के प्रति व्यक्त की। प्रवचन के मध्य भजनों एवं गुणमहिमा के प्रस्तुतीकरण से जनसमुदाय प्रमुदित हो महासती मण्डल के प्रवचन की रसधारा में डुबकियां लगाता रहा। बहिनों ने पद्यों में स्वर से स्वर मिलाया तो समूचा सामायिक-स्वाध्याय भवन भक्तों के मंगल गीतों की स्वर लहरियों में मानो एकाकार हो गया। भजन-गीत के कतिपय बोल थे-

करती हूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान.....।
हस्ती तेरी याद हमको बार-बार आती है.....।
हो....हो....हो....जन्म-दिवस सुहावणो.....।
चमकिया म्हारा गुरुवरसा, तारा बिच चाँद ज्यूँ.....।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने हस्ती गुरु के सुशिष्य और

पट्टधर गुरु हीरा की ओर जनसमुदाय का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि आप-हम-सब गुरु को तो मानते हैं, ठीक उसी तरह हम-सबको गुरु की भी माननी है और पूर्ण समर्पण के साथ गुरु वचनों को चरितार्थ करना है। आप-हमने कई बार सुना है कि गुरु नहीं तो जीवन शुरू नहीं। गुरु की मानने पर हम गुरु के हैं कहा जा सकता है, इसलिए हम रोम-रोम से गुरु के प्रति समर्पित हों, यही गुरु जन्म-दिवस पर हमारी सच्ची भक्ति होगी।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने अपने मंगल प्रवचन के शुभारम्भ में नववर्ष के उपलक्ष्य में 01 जनवरी को आचार्य श्री हीरा ने भोपालगढ़ की पावन धरा पर आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया था कि जीवन को रम्य, दिव्य, भव्य और सुरम्य बनाना है तो दान, शील, तप और भावना का समाचरण करें। गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा का नववर्ष में प्रदत्त सन्देश इसलिए उद्धृत कर रहा हूँ कि हम आज जो आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 102 वाँ जन्म-दिवस मनाने उपस्थित हुए हैं, आज का मंगल प्रभात कह रहा है कि अनन्त-अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त का जीवन ज्ञान-दान के कारण दानेश्वर, शील-सुरभि के कारण सर्वेश्वर, तप के कारण तपेश्वर और भावना के कारण भावेश्वर रूप रहा है, हम आराध्य गुरुवर्य के जीवन से प्रेरणा लें।

मुनिश्री ने कहा- हम उस दिव्य-दिवाकर के ऋणी हैं। उस महापुरूष का ज्यों ही नाम स्मृति-पटल पर आता है, जीवन का कण-कण और रोम-रोम उस महापुरुष के उपकारों की याद दिलाता है। क्यों? तो, हमने जो पाया है, वह उस महापुरुष की कृपा का फल है। मैं आपके लिए नहीं, अपने लिए कहूँ गुरु नालायक को लायक बनाता है। गुरु पत्थर को प्रतिमा बनाता है। गुरु असक्षम को सक्षम करके दिखाता है। अयोग्य को योग्य बनाने वाले गुरु हस्ती ने कितनों को योग्य बनाया, मुझे कहने की जरूरत नहीं, आप-हम सब जानते हैं। आज वो गुरु तो नहीं रहे, पर बागडोर सुयोग्य गुरु के हाथ छोड़ गये। आचार्य भगवन्त पाली से सोजत पधारे तब हम-सबके सामने कहा- संघ सुरक्षित रहे, संघ की एकता रहे। इस बाबत उस महापुरुष ने अपनी ओर से भोलावन दी। पूज्य गुरुदेव ने पं. रत्न मानमुनिजी महाराज की ओर इंगित हो फरमाया कि जैसे बाबाजी सुजानमलजी महाराज ने सहयोग दिया, आप सेवा और साधना में वैसा ही सहयोग बनाए रखें। वे महापुरुष तो योगी से महायोगी बन गये, पर उन्होंने अपनी

प्रतिकृति जो हमारे बीच है, हम हस्ती की प्रतिकृति हीरा को देखते हैं तो मन बाग-बाग हो जाता है।

महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने कहा उस दिव्य-दिवाकर के अनेकानेक गुण थे, सब गुणों का कथन सम्भव नहीं, पर वे शील के सर्वेश्वर थे, ब्रह्मचर्य की आराधना उनके मुख मण्डल पर झलकती थी इसीलिए विवाद करने वाले यह सोचकर आते कि हम उनसे तर्क करेंगे, पर आचार्य भगवन्त के ब्रह्मचर्य के तेज की तेजस्विता, मुख मण्डल की ओजस्विता देखकर तर्क करने वाले तर्क करना भूल जाते थे।

आचार्य भगवन्त तपेश्वर थे। जीवन में उस महापुरुष ने भले की दीर्घ तपश्चर्या नहीं की, किन्तु तपाराधन में वे कभी भी पीछे नहीं रहे। वे तपस्वी थे, मनस्वी थे। लघुता में प्रभुता उस महापुरुष की विशेषता रही।

आचार्य भगवन्त साधना के सर्वेश्वर थे तो भावना के भावेश्वर भी थे। उस महापुरुष की शुभ-भावना की सुपरिणति कहें तो भगवन्त जहाँ भी पधारे, वहाँ का मनोमालिन्य शान्त हुआ। सिवांची-मालानी के भक्त यहाँ बैठे हैं, आज भी उस महापुरुष के प्रति पूरा क्षेत्र श्रद्धावान है कि आचार्य भगवन्त की भावना से ही वर्षों का कलह स्नेह-सौहार्द में बदला।

आप उस यशस्वी गुरु के जन्म-दिवस पर श्रद्धा समर्पित करने के लिए उपस्थित हुए हैं तो एक बात जरूर लेकर जाना कि चाहे घर-परिवार हो या संघ-समाज अथवा ग्राम-नगर जहाँ कहीं भी विवाद हो, उसका निवारण कर लेना। आचार्य भगवन्त बोला करते थे-दयामय ! ऐसी मति हो जाय। आप बोलकर ही न रहें, परस्पर जहाँ भी मनोमालिन्य है उसे मिटाकर, कषायों को उपशान्त करें तभी आपका यहाँ आना सार्थक होगा।

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपनी बात यह कहते प्रारम्भ की कि अब ध्यान-मौन का समय होने को आया है और कहने से गुरु भगवन्त के गुणों की पूर्ति नहीं होगी। कहने के साथ करने से जीवन का निर्माण होता है। भगवान महावीर के शासन में गणधर गौतम-सी लब्धि रखने वाले लब्धिधर हुए हैं तो जम्बू जैसे त्यागी भी हुए हैं। सुधर्मा की वाचना को हृदयंगम कर देश-विदेश में स्वाध्याय की प्रभावना करने वाले, आचार्य देवर्धिगणि की भांति श्रुत का संवर्धन करने वाले, आचार्य श्री धर्मदासजी महाराज की तरह धर्म का शंखनाद करने वाले, कुशलवंश परम्परा के

पट्ट को कुशलता से सुशोभित करने वाले, रत्नसंघ परम्परा में आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की तरह चमकते रत्न स्वरूप, बहुश्रुत विनयचन्द्रजी महाराज की तरह विनयवान तथा आचार्य श्री शोभा की शोभा बढ़ाने वाले पूज्य गुरुवर्य का आज 102 वाँ जन्म-दिवस है।

जन्म क्या? जीवन का आदिकाल जन्म है। जन्म है-जीवन रूपी सरिता का उद्भव स्थान। जन्म है संग्राम के मोर्चेका अग्रिम स्थान। जन्म है करणी करने का प्रारम्भ काल।

जन्म किस लिये? जन्म है ज्ञान-क्रिया की करणी के लिए। जन्म है हर परिस्थिति में ज्ञाता-द्रष्टा बनकर रहने के लिए। जन्म है सुख-दुःख में सम रहने के लिए। जन्म है शेष रहे कर्म काटने के लिए। जन्म है लक्ष्य की और अतुल पुरुषार्थ करने के लिए।

जन्म क्या और जन्म किसलिए ये दो बातें आपने समझ ली तो अब सोचना है जन्म पाकर हमने क्या किया? हमने कर्म काटने का काम किया या कर्म बढ़ाने का ? कर्म बन्धन आश्रव से होंगे और संवर से कर्म कटेंगे। मतलब क्या ? जन्म मिलाने वाला संवर और निर्जरा की करणी करता है तो वह कर्म काटता है। साधना करे तो सब कुछ है। माता, पिता, शरीर, जाति, कुल वर्ण, गंध, क्षेत्र आदि पूर्व कर्म के आधीन हैं, फिर भी सदुरु की संगति, धर्म-साधना में पुरुषार्थ करते रहने से जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

मैं पहले कह गया हूँ कि महापुरुषों के गुण गाने मात्र से जीवन का निर्माण होने वाला नहीं है। महापुरुषों के गुण जीवन में उतारने से जीवन का निर्माण होता है। आपके घर पर चार-पाँच तरह की मिठाइयाँ हैं, हलवाई की दुकान पर पचासों तरह की मिठाई है, आप उन मिठाइयों को देख लें, उनके नाम बोल दें, गुणगान कर लें उससे पेट नहीं भरता। पेट कहने से नहीं, खाने से भरता है, इसी तरह गुण गाने के साथ गुणों का आचरण किया जाय तो ही जीवन का निर्माण सम्भव है।

आप और कुछ कर सकें या नहीं कर सकें, इतना तो करें कि जिन-जिन पाप कर्मों का सेवन नहीं किया जाता, कम-से-कम उनका तो त्याग करें। आप दुनियाँ के सारे पाप नहीं करते। जिन पापों का आपसे वास्ता तक नहीं, उनका त्याग क्यों भारी लगता है ? आप जानते हैं, मानते हैं कि दुनियाँ की सारी दौलत आपको मिलने वाली नहीं है तो फिर परिग्रह की मर्यादा करने में क्या

दिक्कत है? आप यह समझते हैं कि दुनियाँ की सारी औरतें आपके भोग में आने वाली नहीं हैं। फिर शील की मर्यादा में क्या परेशानी है ? आप क्यों अब तक खुले बैठे हुए हैं ? अनर्थ से बचने में क्या मुश्किल है ? आप सोचकर ही न रहें, अनर्थ से लगने वाले पाप छोड़ने में तत्पर बनें।

आचार्य श्री ने कहा-जन्म लेने वाले का मरण होता ही है। मरण किसी का रुकता नहीं। जन्म के साथ मरण निश्चित है। जन्म में पहला अक्षर ज है तो अन्तिम अक्षर म। मतलब क्या ? जन्मने वाला मरेगा। जन्म के साथ मरण निश्चित है, पर मरने वाला जन्म लेगा ही, नहीं कहा जा सकता। जन्म पाकर जिसने जीवन बना लिया, वह फिर जन्म ग्रहण करेगा ही, यह जरूरी नहीं है।

आप आराध्य आचार्य भगवन्त के जन्म-दिवस के प्रसंग से यहाँ आए हैं तो चारित्र में चरण बढ़ाने में कोई पीछे न रहे। आप व्रती श्रावक बनें। राजा-महाराजा व्रती श्रावक बन सकते हैं तो आप व्रताराधन से सूने न रहें। सर्वविरति के जन्म-दिवस पर देशविरति बनें। व्रत लेने और पालने में कोई दिक्कत आने वाली नहीं है।

आप-सबने जन्म लिया है तो सबको जीवन बनाने का लक्ष्य लेकर चलना चाहिये, अन्यथा जन्म का कोई मतलब नहीं है। भोपालगढ़ में कितने कीडे़-मकोड़े पैदा होते हैं ? मच्छर-मक्खियों की कोई गिनती है क्या? हर जानवर चाहे वह कीड़ा हो, मकोड़ा हो, मक्खी हो, मच्छर हो सबमें आयुष्य बल प्राण है, इन्द्रिय बल प्राण है, परन्तु वे जीवन का निर्माण नहीं कर सकते। हर मनुष्य जीवन बना सकता है, कर्म काट सकता है। पर हर मनुष्य का जीवन गाया नहीं जाता। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती हुए, पर उनको याद नहीं किया जाता, जब कि पूणिया श्रावक याद किया जाता है, गाया जाता है। चक्रवर्ती के पास धन-सम्पदा की कमी नहीं। छः खण्ड का स्वामी नहीं गाया जाता, जब कि पूणिया श्रावक की सामायिक-आराधना आज भी याद की जाती है।

हम आचार्य भगवन्त के गुण गायें, जरूर गायें, पर केवल गुणगान करके ही न रहें। महापुरुषों के गुणगान कभी पूरे हुए नहीं, होंगे नही। मैं भी पूज्य आचार्य भगवन्त के गुणगान गाऊँ तो दिन-रात गुण गाने पर भी गुणों का अन्त आने वाला नहीं है। आप-हम-सब ज्ञानवान हैं, श्रद्धावान हैं, भक्तिवान हैं इसलिए सुनने के साथ ग्रहण करने का भाव रखें। आप नहीं लगने वाले पापों का त्याग करने की कोशिश करेंगे तो हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह, क्रोध,

मान, माया, लोभ, राग-द्वेष से बच सकेंगे।

आचार्य भगवन्त का जीवन आपने देखा है। वे गर्भ से त्यागी थे। उनका आहार सीमित था, वचन सीमित थे, निद्रा सीमित थी, कषाय सीमित थे। विक्रम संवत् 2020 में जब मैं पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में दीक्षित हुआ, तब सुनता था कि पीपाड़ के देवराजजी को देवता आते थे। लोगों ने देखा, अनुभव किया कि जिनको देवता आते थे उनके देखते-देखते देवता चले गये। क्यों ? आप जानते हैं कोई सांड पूँछ हिलाकर कब जायेगा ? जब दूसरा सांड जो उससे सवाया है आयेगा तो पहले वाला सांड पूँछ हिलाकर चल देगा।

सवाईमाधोपुर वाले यहाँ बैठे हैं। आचार्य भगवन्त वहाँ विराज रहे थे। तब किसी व्यक्ति को सांप ने काट खाया। उसे झाड़ेगर के पास ले जाया गया। झाड़ागर वाला कहता है-यहाँ क्यों लाए हो ? इसे हमारे नगर में विराजमान देव के पास ले जाओ, वह ठीक हो जायेगा। माधोपुर वाले जानते हैं भगवन्त की एक मांगलिक से वह स्वस्थ हो गया। माधोपुर की वह घटना शायद है सबके सुनने में न आई हो, किन्तु माधोपुर में पर्युषण में रोठ बनाने की परम्परा वर्षों से चल रही थी। रोठ नहीं करेंगे तो देवी रुष्ट हो जायेगी, यह मान्यता व्यक्ति-व्यक्ति के मन में जमी हुई थी। परम्परा के कारण लोग पर्वाराधन पर उस दिन त्याग-प्रत्याख्यान नहीं कर पाते थे। गुरुदेव ने कहा-आप लोग मिथ्या मान्यता में रहकर पर्व की साधना से वंचित रहें, यह उचित नहीं है। गुरुदेव ने खुले रूप से कहा-मेरे रहते किसी देवी-देवता के कारण तकलीफ नहीं होगी, आप निश्चिंत रहें। आचार्य भगवन्त की साधना से कहो या सद्शिक्षा से पर्युषण में माधोपुर की रोठ प्रथा बन्द हुई।

आचार्य भगवन्त जयपुर विराज रहे थे, तब पंजाबी सम्प्रदाय के एक आचार्यश्री का जयपुर पधारना हुआ। उनका चेला कहीं चला गया। चेला चला जाय तो मन में उदासी छा जाना सहज है। पंजाब से पधारे आचार्यश्री को किसी भाई ने कह दिया कि आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज से पूछ कर देखो। आचार्य भगवन्त से पृच्छा की गई-हमें क्या करना चाहिये ? भगवन्त माला से उठे और कहा कि आपका शिष्य फलां जगह उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठा हुआ है मिल जायेगा, भगवन्त के कहे अनुसार ढूंढा गया तो गुम हुआ चेला मिल गया। उसे सायं लाकर पंजाबी सम्प्रदाय के आचार्यश्री को संभलाया गया।

ऐसा कब होता है ? यह साधना का बल है। आप आचार्य भगवन्त के

जन्म-दिवस के प्रसंग से यहाँ आए हैं तो कम-से-कम इतना संकल्प लेकर जायें कि अनर्थ से होने वाली हिंसा तो न हो, बात-बात में झूठ नही बोलें। आप साधना में कुछ करेंगे तो जीवन सफल बना सकेंगे।

मैं ये जो बातें कह रहा हूँ वे आप जीवन-व्यवहार में सहज ला सकते हैं। त्याग करने वाला मेरू जितने पाप को राई जितना कर लेता है इसलिए आप सुनकर ही न रहें, कुछ करने का पुरुषार्थ भी करें।

आचार्य भगवन्त ने सामायिक-स्वाध्याय का शंखनाद करके एक पहचान बनाई। जीवन भर तक जिस महापुरुष ने साधना-आराधना का आदर्श उपस्थित किया, उनके भक्त जितना बन सकें पाप छोड़ने के प्रत्याख्यान करके चलेंगे तो आचार्य भगवन्त का जन्म-दिवस मनाना सार्थक होगा।

पूज्य आचार्यप्रवर के प्रेरक प्रवचनामृत का पान कर जनसमुदाय में से अनेक श्रद्धालुओं ने उपवास, एकासन, दया-संवर जैसे व्रत-नियम अंगीकार किए। प्रवचन सभा के अन्त में स्थानीय श्रीसंघ की ओर से दर्शनार्थियों के स्वागत में दो शब्द रखकर संचालक श्री नेमीचन्दजी कर्नावट ने कहा कि आचार्य भगवन्त के 102 वें जन्म-दिवस पर 'गुरु हस्ती-गुरु हीरा के अनमोल भजन' पुस्तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सौजन्य से प्रकाश में आई है। पुस्तक में गुरु हस्ती के देव स्तुति, गुरुभक्ति, आत्म-जागृति, जीवन-ज्योति, सन्देश-उपदेश रूप 102 भजनों को अनुक्रमित किया गया है, साथ ही गुरु हीरा के 25 भजन जो मुख्यत: गुरु गुणगान रूप हैं, पुस्तक में समाहित हैं। पुस्तक में प्रकाशित भजनों का संकलन श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया है। गुरु हस्ती, गुरु हीरा के अनमोल भजन पुस्तक जो भी लेना चाहे, प्रवचन पश्चात् बाहर लगे काउण्टर से ले सकता है।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ की आवास एवं भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था के साथ अपनत्व प्रेरणादायी रहा।

मध्याह्न में 2 से 4 बजे तक गुरु हस्ती के भजन-गीत का कार्यक्रम भी श्रावक-श्राविकाओं द्वारा आयोजित किया गया। पूरे दिन सामायिक-स्वाध्याय-साधना और सेवा के कार्य व्यवस्थित चले। सर्दी के पश्चात् भी संवर-पौषध की आराधना में लोगों का अच्छा उत्साह रहा।

भोपालगढ़ की तरह बीकानेर और गोटन में उपाध्याय प्रवर एवं संतप्रवर के सान्निध्य में आचार्य भगवन्त का जन्म-दिवस त्याग-तप के साथ

उत्साहपूर्वक मनाया गया। जोधपुर में विराजित साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका के सान्निध्य में यह दिवस गुणानुवाद एवं तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। देशभर में स्व-प्रेरित भावना से गाँव-गाँव, नगर-नगर ही नहीं, महानगरों में त्याग-तप, साधना-आराधना एवं परोपकार के विविध कार्यक्रमों की सफल क्रियान्विति उमंग-उल्लास से हुई। *-रिपोर्ट : नौरतन मेहता*

आचार्य हस्ती के 92 वें दीक्षा-दिवस पर तप-त्याग

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 92 वां दीक्षा-दिवस माघ शुक्ला द्वितीया, 25 जनवरी 2012 को नाडसर, जिला-जोधपुर में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। इस दिन आचार्यप्रवर से आठ दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर निवृत्तिपथ का सच्चा समर्थन किया। श्री प्रकाशचन्द जी लोढ़ा ने अठाई की तपस्या कर गुरुभक्ति का परिचय दिया। इस अवसर पर पीपाड़सिटी, भोपालगढ़, वारणी, धनोप आदि स्थानों से श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर गुरु गुणगान का तन्मयता से श्रवण कर यथाशक्य त्यागतपपूर्वक श्रद्धा समर्पित की। प्रवचन सभा में जैन एवं जैनेतर बन्धुओं की उपस्थिति सराहनीय थी।

प्रवचन सभा में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने गुरु पूज्य आचार्य हस्ती का स्मरण करते हुए फरमाया- इस पंचमकाल में गुरु गुणों का दर्शन कराते हैं, वे ब्रह्मा की तरह गुणों का सर्जन करते हैं तथा हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापों से निवृत्त करते हैं। गुणों का दर्शन गुरु में है। गुरु नहीं होते तो आज यह धरती नरक हो जाती। सीखी हुई शिक्षा को जीवन में उतारना दीक्षा है। गुणों को जीवन में उतारना महत्त्वपूर्ण है। पूज्य गुरुदेव (आचार्य हस्ती) स्वयं ब्रह्मचारी थे। उन्होंने सैकड़ों ब्रह्मचारी बनाए। बल्लारी में 35 आजीवन खंध हुए। 'खण निकम्मो रहणो नहीं, करणो आतम ज्ञान' आदि उन्होंने अनेक शिक्षाएँ दीं।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी, महासती श्री सरलेशप्रभा जी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी आदि ने भी पूज्य भगवन्त आचार्य हस्ती के गुणों का अनुकथन करते हुए अनेक महत्त्वपूर्ण बिन्दु कहे, यथा-

1. आज आदमी स्वयं के दोष तो नहीं देख रहा, दूसरों के दोष देख रहा है।
2. जीवन में दस प्रतिशत प्रभाव जन्म का होता है तथा नब्बे प्रतिशत पुरुषार्थ का।
3. त्यागमार्ग में आगे बढ़ने वालों के गुण गाये जाते हैं।

नाडसर से विहारकर आचार्यप्रवर बारनी पधारे, जहाँ आपके मुखारविन्द

से पाँच दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। बारनी मुमुक्षुरत्नों की धरा है, जहाँ से संघ में 6-7 दीक्षाएँ हो चुकी हैं। यहाँ पर आचार्य भगवन्त पाँच दिन विराजें। श्रावकरत्न श्री प्रेमचन्द जी सिंघवी एवं वीर परिवारों ने खूब धर्मलाभ लिया। 31 जनवरी को आचार्यप्रवर असावरी श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी का सांसारिक ननिहाल है। यहाँ वीर पिता श्री अमरचन्द जी लोढ़ा ने शीलव्रत अंगीकार किया। असवारी में 1 फरवरी को तमिलनाडू के विल्लीपुरम् के एस.एस. जैन संघ की ओर से अध्यक्ष श्री रिखबचन्द जी बम्ब आदि श्रावक पधारे तथा व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा की चातुर्मास हेतु आचार्य भगवन्त के चरणों में विनति प्रस्तुत की। यहाँ श्री सुगनचन्द जी, कांतिलाल जी छल्लाणी एवं समस्त छल्लाणी परिवार सेवाभक्ति का लाभ ले रहा है। नाडसर, बारनी एवं असावरी में जैनेतर बन्धुओं की उपस्थिति खूब सराहनीय रही। गांवों में 2 से 3 बजे तक प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी एवं आचार्य भगवन्त स्वयं अमृतपान करा रहे हैं।

उपाध्यायप्रवर का बीकानेर प्रवास रहा उपलब्धिपूर्ण

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा की पावन सन्निधि में गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 102वाँ जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी, 8 जनवरी 2012 को तप-त्याग के साथ मनाया गया। प्रवचन सभा में इस अवसर पर दिल्ली, सवाईमाधोपुर, भोपाल, पीपाड़, नागौर एवं समीपवर्ती क्षेत्रों से श्रद्धालु गुरुभक्तों ने पधारकर प्रेरणा एवं प्रत्याख्यान ग्रहण किए। प्रवचन सभा में सम्वत्सरी जैसा नज़ारा देखने को मिला। उपवास, बेले, तेले की तपस्या तो बहुत संख्या में हुई, साथ ही 4 व 5 की तपस्या के भी प्रतयाख्यान हुए। गुरु भक्त श्री अरविन्द जी सुराणा ने अठाई तप किया। उपाध्यायप्रवर एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती के त्याग-तप, संयम-साधना, करुणा आदि विभिन्न गुणों पर जीवन्त प्रकाश डाला। पूज्य गुरुदेव विषय-कषायों की धूलि एवं मोह के बवण्डर से प्रायः दूर ही रहा करते थे। जीवन के संध्याकाल में उन्होंने समस्त बहिरंग और अन्तरंग परिग्रह का त्याग कर उत्कृष्ट आराधनापूर्वक दीक्षा पर्याय को सफल बनाया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव के जीवन परिचय पर आधारित प्रतियोगिता

का भी आयोजन किया गया, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। दया एवं संवर की साधना में भी युवाओं की भागीदारी प्रशंसनीय रही। दूसरे दिन 9 जनवरी को स्व. छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. की पुण्यतिथि धार्मिक आराधना के साथ मनाई गई।

13 जनवरी, माघ कृष्णा 4 को उपाध्यायप्रवर का 78वाँ जन्म-दिवस मनाने का सौभाग्य भी बीकानेर क्षेत्र को प्राप्त हुआ। श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी क्षमता के अनुसार त्याग-तप एवं ज्ञानाराधन कर उपाध्यायप्रवर के चरणों में श्रद्धा-भक्ति अर्पित की। तेला, सामायिक की पचरंगी, उपवास, दया, संवर, एकाशन आदि का ठाट रहा।

उपाध्यायप्रवर के बीकानेर प्रवास में धार्मिक आराधना का ठाट लगा रहा। प्रवास काल में एक मासखमण एवं ग्यारह अठाई तप पूर्ण हुए हैं। छः, पांच, चार, तेला, बेला, उपवास, एकाशन आदि तपस्याओं की तो गिनती ही नहीं है। गुरुदेव के अतिशय से उपवास की लड़ी निरन्तर चली। श्रद्धालु भक्तों का आवागमन निरन्तर बना रहा। अजमेर संघ के श्रद्धालुओं ने उपाध्यायप्रवर के चरणों में चातुर्मास की विनति प्रस्तुत की है।

बिना चातुर्मास के भी उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में बीकानेरवासियों को चातुर्मास जैसा धर्माराधन का माहौल प्रतीत हुआ। हर किसी ने अपनी क्षमता के अनुसार धर्मलाभ लिया। दिनभर भक्तों की उपस्थिति बनी रही।

आचार्य हस्ती के 102वें जन्म-दिवस पर देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में गुणानुवाद एवं तप-त्याग

जयपुर- चारित्रचूड़ामणी, इतिहास मार्तण्ड, अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 102वाँ जन्म-दिवस 8 जनवरी को विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में महावीर भवन, मानसरोवर में तथा व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 की सन्निधि में लाल भवन, चौड़ा रास्ता में दया, उपवास, संवर, पौषध, सामायिक-स्वाध्याय आदि विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के साथ मनाया गया। पूज्य गुरुदेव के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुए। 6 जनवरी को दोनों स्थानों पर पूज्या महासती जी के प्रवचन श्रवण का लाभ लेते हुए उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने 5-5 सामायिकें की। 7 जनवरी को प्रवचन-श्रवण के साथ दया-उपवास, बेला, आयम्बिल आदि तपस्याएँ की गई। 8 जनवरी को प्रातः 8 से 9

बजे तक सामूहिक नवकार मंत्र का जाप किया गया। लाल भवन एवं मानसरोवर दोनों स्थानों पर लगभग 800 धर्मानुरागी बन्धुओं की उपस्थिति रही। लाल भवन में संघमंत्री श्री विमलचन्द जी डागा ने एवं मानसरोवर में श्री राजेन्द्र जी जैन 'राजा' ने सभा का संचालन किया। पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा ने आचार्यश्री के संयमी जीवन का जीवन्त वर्णन किया। इस अवसर पर 105 पौषध, 120 एकाशन, 85 उपवास, 98 दया तथा 100 संवर हुए।

युवक परिषद् के द्वारा यहाँ एक सेवा-निधि योजना चालू है। जिसके अन्तर्गत आचार्य श्री के जन्म-दिवस पर परिवार के प्रत्येक सदस्य के द्वारा वर्षभर में गुल्लक में डाली गई राशि का सदुपयोग किया जाता है। 7 जनवरी को लाल भवन एवं अवेदना आश्रम संतोकबा दुर्लभ जी मेमोरियल अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 500 व्यक्तियों ने भाग लिया तथा 300 से अधिक युनिट रक्तदान किया गया।

ब्यावर- आचार्य हस्ती के 102वें जन्म-दिवस पर यहाँ बरेली के नोहरे स्थानक में प्रातः सामूहिक सामायिक की गई। दोपहर में आयोजित धार्मिक कार्यक्रम में बच्चों ने भाग लिया तथा महिलाओं ने दिन में 2 बजे से सामूहिक सामायिक की। सायंकाल वृद्धाश्रम, विनोद नगर में वृद्धों को तथा अन्यत्र गरीबों को फल वितरित किए गए। उपाध्यायप्रवर के जन्म-दिवस पर 13 जनवरी को सामूहिक सामायिक की गई तथा उपाध्यायप्रवर के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

सूरत- यहाँ आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिश्रेष्ठ श्री प्रेम मुनि जी, श्री जितेश मुनि जी आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्य हस्ती के गुणों का स्मरण किया गया। मुनिश्रेष्ठ एवं प्रज्ञारत्न श्री जितेश मुनि जी ने अपने संस्मरणों का जो वर्णन किया, उससे श्रोता रोमांचित हो गए। श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री लाभचन्द जी नाहर ने भी आचार्यप्रवर के जीवन पर प्रकाश डाला। लगभग 300 श्रावक-श्राविकाओं ने 3 से 5 सामूहिक सामायिक की आराधना करने के साथ आयम्बिल, उपवास, एकाशन आदि की यथाशक्य साधना-आराधना की।

पाली-मारवाड़- आचार्य हस्ती के 102वें जन्म-दिवस पर यहाँ दया-संवर, उपवास-पौषध व्रत-प्रत्याख्यान का आराधन हुआ। आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सन्त श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनि जी, श्रद्धेय श्री सुमतिमुनि जी तथा साध्वी श्री पूरिमाश्री जी आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आचार्य हस्ती के गुणों का स्मरण किया गया। श्री सुमतिमुनि जी म.सा. की प्रेरणा से अनेक

भाई-बहिनों ने छोटे-बड़े व्रत अंगीकार किए। उन्होंने गीतिका के माध्यम से कहा कि महापुरुषों के गुणों को अपने भीतर उतारने का प्रयास करें। श्री मांगीलाल जी चौपड़ा, श्री पारसमल जी चौपड़ा, श्री उम्मेदराज जी उत्पल, श्री मंजू जी गांग आदि ने भी श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रूपकुमार जी चौपड़ा के अनुसार मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. का पुण्य-दिवस भी उस दिन मनाया गया। श्रावकरत्न श्री लाभचन्द जी गोलेच्छा ने अपनी माता श्रीमती अणचीबाई की पावन स्मृति में 102 गायों को छः माह के लिए गोद लेने तथा 102 गरीब असहायों को कंबलें वितरित करने की घोषणा की। कोढ़ी आश्रम, अंधता निवारण विद्यालय, बांगड़ अस्पताल आदि स्थानों पर मधुर भोजन एवं फलों का वितरण किया गया।

चेन्नई- आचार्य हस्ती के 102वें जन्म-दिवस तथा मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. की 28वीं पुण्य-तिथि पर सामूहिक एकाशन, तीन सामायिक, विशेष तप-त्याग एवं रचनात्मक कार्यों के कारण जैन भवन, एकाम्बरेश अग्रहारम स्ट्रीट में धर्माराधन का वातावरण बना रहा। इस अवसर पर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। 8 जनवरी को प्रातः 8 बजे "एक कदम धर्म की ओर" युवा जागृति अभियान की विशेष कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका विषय था 'अहोशरणम्'। महासती श्री भाग्यप्रभा जी ने कहा कि किसी के विश्वास पर विश्वसनीय हो जाना ही सच्ची शरण है। सांसारिक एवं भौतिक साधन जीवन की शरण हो सकते हैं, किन्तु जीव की सच्ची शरण देव, गुरु एवं धर्म ही है। महासती श्री भावना जी, महासती श्री संगीता जी, महासती श्री निष्ठाप्रभा जी, महासती श्री भाग्यप्रभा जी एवं व्याख्यात्री तपस्विनी महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में आचार्य भगवन्त के गुणों से सीख लेने की प्रेरणा की। अंत में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ने अमृतमयी वाणी फरमाई। कार्यक्रम का संचालन श्री जवाहरलाल जी कर्णावट ने किया। इस अवसर पर सिलाई मशीन एवं रोटी मेकर वितरित किए गए तथा सेवा के विभिन्न कार्य संपादित किए गए।

सवाईमाधोपुर- यहाँ प्रातः 8.45 से 12.45 बजे तक आयोजित गुणगान सभा में संघ समुत्कीर्तन के साथ आचार्य हस्ती द्वारा रचित काव्य-भजन एवं गुरु गुणगान भजन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 32 प्रतियोगियों ने भाग लिया। सारस्वत अतिथि श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार ने आचार्य हस्ती के विराट्

व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सारगर्भित चित्रण किया। विशिष्ट अतिथि श्री गोपाललाल जी वैद्य, अलीगढ़ ने गुरुदेव के उपकारों का स्मरण करते हुए कृतज्ञता प्रकट की। विशिष्ट अतिथि श्री पारसमल जी जैन-चौथ का बरवाड़ा ने आचार्य हस्ती के गुणों पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा-ब्यावर ने युगनिर्माता, युगमनीषी, युगप्रवर्तक श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-दर्शन के विशिष्ट एवं संघ-समाज के आध्यात्मिक उन्नयन में योगदान का स्मरण कराते हुए गौरवशाली रत्नसंघ की गरिमा को ओजस्वी शब्दों में अभिव्यक्ति दी। लगभग 11.30 बजे भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई। विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। समारोह की अध्यक्षता श्री सुरेशचन्द जी जैन, कुश्तला, महामंत्री पोरवाल संघ ने की तथा रात्रि भोजन त्याग महाअभियान में सभी से सक्रिय योगदान का आह्वान किया। इस अवसर पर निकटवर्ती विभिन्न ग्राम-नगरों के श्रावक-श्राविकाओं सहित लगभग 800 भाई-बहिनों ने सामूहिक साधना में भागीदारी की तथा 1500 से अधिक सामायिक की आराधना हुई। प्रतियोगिताओं का संचालन श्री त्रिलोकचन्द जी जैन ने तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन श्री कुशलचन्द जी जैन गोटेवालों ने किया।

जलगाँव- अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 102वाँ जन्म-दिवस यहाँ अरिहन्तमार्गी आचार्य श्री ज्ञानचन्द्र जी म.सा. एवं महासती वृन्द के सान्निध्य में तप-त्याग के साथ जैन भवन, हस्ती-हीरा नगर, एम.आई.डी.सी. में मनाया गया। आचार्य श्री की विशेष प्रेरणा एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के विशेष प्रयासों से 102 तेले, 102 दया-पौषध, एकाशन आदि तपाराधना का कीर्तिमान स्थापित हुआ। आचार्य श्री ज्ञानचन्द जी म.सा. ने भोपालगढ़ में आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मिलन एवं आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. के जेठाणा ग्राम में मिलन का उल्लेख किया। सांसद श्री ईश्वरबाबू जी ललवाणी, विधायक श्री सुरेश दादा जैन, विधायक श्री मनीष बाबू जैन, महापौर श्री सदाशिव ढेकले, संघाध्यक्ष श्री दलुभाउ जैन, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, श्री अजय जी ललवाणी आदि अनेक महानुभाव की उपस्थिति से कार्यक्रम सुशोभित था। सभा का संचालन प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन ने किया तथा आभार प्रदर्शन श्री महावीर जी बोथरा ने किया। महावीर जैन युवा मंच का सक्रिय सहयोग रहा।

बड़ावाह- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के

सान्निध्य में आचार्य हस्ती के 102वें जन्म-दिवस पर एकाशन, उपवास, दया-पौषध अच्छी संख्या में हुए। दोपहर में आयोजित प्रश्नमंच प्रतियोगिता में बहनों ने भी अच्छा लाभ लिया।

आष्टा- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आष्टा नगर में आचार्य हस्ती का जन्म-दिवस अपार उत्साह पूर्वक सामायिक-स्वाध्याय एवं एकाशन की आराधना के साथ मनाया गया। गुरुवर्या श्री की महती प्रेरणा से 350 से भी अधिक एकाशन एवं उपवास तथा 5-5 सामायिक की साधना सम्पन्न हुई। उज्जैन, कोटा एवं मूंदी श्रीसंघ के सदस्यों ने आगामी वर्षावास की विनति रखी तथा भोपाल श्रीसंघ ने गुरु-गुणगान का लाभ लिया। इस अवसर पर 3 आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए- 1. श्रीमती अयोध्याबाई-सुगनलाल जी शर्मा-कन्नौद मिर्जी, 2. श्रीमती मनुबाई-शंकरलाल जी टेलर-कन्नौद मिर्जी, 3. श्रीमती रामकुंवरबाई-हीरालाल जी पाटीदार-पगारिया हाट।

हिण्डौन सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में आचार्य हस्ती के जन्म-दिवस पर जैन स्वाध्याय भवन, नई मण्डी में लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, आयम्बिल, एकासन, दया, पौषध-संवर किया तथा लगभग 2100 सामायिक-साधना हुई। 3 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया- 1.श्रीमती उनतरो देवी-घेवरचन्द जी जैन, 2. श्रीमती मायादेवी-कपूरचन्द जी जैन, 3. श्रीमती शकुन्तलाबाई-मोहनभाई जी अग्रवाल। आचार्य हस्ती के जीवन पर एक प्रतियोगिता काआयोजन किया गया, जिसमें 52 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया तथा कु. मोक्षिका, कु. श्वेता एवं कु. अंजलि ने पुरस्कार प्राप्त किए। यहाँ आचार्य हस्ती के जन्म-दिवस पर पहली बार स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 82 युवकों ने रक्तदान किया। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का जन्म-दिवस ज्ञान-दिवस के रूप में मनाया गया। इस दिन पांच दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया- 1. श्रीमती कुसुमलता-पूरणचन्द जी जैन, 2. श्रीमती सरस्वती देवी-रमेशचन्द जी जैन, 3. श्रीमती कुसुमलता-रामेश्वर जी जैन, 4. श्रीमती कान्तादेवी-देवीलाल जी जैन, 5. श्रीमती पुष्पाबाई-रमेशचन्द जी जैन।

बैंगलोर- शूले जैन स्थानक में आचार्यप्रवर श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 की सन्निद्धि में आचार्य हस्ती की102वाँ जन्म-दिवस तथा मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा.

की 28वीं पुण्य तिथि 2-2 सामायिक की साधना, तप-त्याग तथा व्रत-प्रत्याख्यान के साथ उत्साह से मनाई गई। वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं पत्रकार श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल, पूर्व संघमंत्री श्री रमेश जी गुन्देचा, गुरुभक्त श्री विनोद जी गुन्देचा, श्री मोहनलाल जी चौपड़ा आदि ने भी इस प्रसंग पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री यशवंतराज जी सांखला ने की। संचालन संघ मंत्री श्री निर्मल जी बंब ने किया।

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान का लोकार्पण तथा पूर्व छात्र सम्मेलन सम्पन्न

महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर में आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पूर्व एवं नये छात्रों का स्नेह मिलन समारोह 21 जनवरी, 2012 को तथा पुनःनिर्मित नव्य भव्य भवन का लोकार्पण समारोह 22 जनवरी, 2012 को सोत्साह सम्पन्न हुआ।

रविवार 22 जनवरी को प्रातः 11.45 बजे संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं संघ-सेवा शिरोमणि श्री मोफतराज जी मुणोत, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, प्राणिमित्र पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता, श्रावक रत्न श्री प्रमोद जी महनोत, उदारहृदय श्री सुरेशकुमार जी जैन, संस्थान के पूर्व अधिष्ठाता श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा आदि महानुभावों के कर कमलों से नूतन भवन का औपचारिक लोकार्पण हुआ। इस भवन में संस्थान के अभी 21 छात्र अध्ययनरत हैं। श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान का नया नामकरण अब आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान हो गया है तथा अब इसमें कला संकाय के साथ वाणिज्य एवं विज्ञान के छात्रों को भी प्रवेश दिया जाएगा। प्रोफेशन पाठ्यक्रम के छात्र भी यहाँ रहकर अध्ययन कर सकेंगे।

चार मंजिले भवन के भूतल पर आयोजित लोकार्पण-समारोह में सर्वप्रथम सुश्री प्रभा जैन ने मंगलाचरण तथा संस्थान के छात्र गजेन्द्र एवं सचिन जैन ने स्वागतगीत प्रस्तुत किया। गजेन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सरदारसिंह जी कर्नावट ने स्वागत भाषण तथा संस्थान के संयोजक श्री विनय जी डागा ने संस्थान का विस्तृत परिचय दिया। अतिथियों का माल्यार्पण, शाल आदि से भी स्वागत किया गया तथा दानदाताओं का सम्मान किया गया। दानदाताओं में प्रमुख थे- श्री सरदारसिंह जी कर्णावट, श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, श्री मोफतराज जी मुणोत, श्री विनयचन्द जी कोठारी, श्री सुरेश कुमार जी जैन, श्री प्रमोद जी महनोत, श्री

सुमेरसिंह जी बोथरा आदि।

संस्थान के पूर्व छात्रों में डॉ. धर्मचन्द जैन, प्रोफेसर, संस्कृत-विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि संस्थान का अतीत स्वर्णिम रहा है। यहाँ से अध्ययन कर निकले छात्रों में कई छात्र वरिष्ठ स्वाध्यायी होने के साथ संघ-समाज के कार्य के लिए तत्पर रहते हैं तथा सन्त-सतियों के अध्ययन-अध्यापन में भी सहायक बनते हैं। श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन संस्कृत के व्याख्याता हैं, श्री सुशील कुमार जैन हिन्दी के व्याख्याता हैं। श्री जम्बूकुमार जैन सहायक लेखाधिकारी होने के साथ संस्कृत-प्राकृत का ज्ञान रखते हैं तथा शिविरों में एवं संत-सतियों को भी अध्यापन में सहयोगी बनते हैं। श्री गौतमचन्द जैन, जिला रसद-अधिकारी होने के साथ वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं, रात्रि-भोजन के त्यागी हैं तथा आजीवन शीलव्रती हैं। पुत्र का विवाह दिन में आयोजित करने जा रहे हैं। श्री पवनकुमार जैन उपअधीक्षक, राजस्थान पुलिस अपनी सेवाओं में नैतिकता को महत्त्व देते हैं। रतीश जैन सहायक वाणिज्यिक कर-अधिकारी हैं। संस्थान के प्रतिभा सम्पन्न छात्र श्री लोकेशकुमार जैन भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी के रूप में मुम्बई में कार्यरत हैं। संस्थान के वरिष्ठतम छात्र श्री पारसमल जी जैन (सी.ए.), वेलस्पन कॉर्प लिमिटेड में वित्त के उपाध्यक्ष हैं तथा ध्यान साधक हैं। श्री श्रीपाल देशलहरा अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के आन्ध्रप्रदेश सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान हैं तथा हैदराबाद में संघ एवं समाज की विभिन्न गतिविधियों में अग्रणी हैं। श्री मनोज कांकरिया अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के महासचिव हैं। श्री अशोक कुमार जैन स्वाध्याय संघ की जयपुर शाखा के संयोजक रहे हैं तथा वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं। श्री सुभाष बोरदिया, राजकुमार धूपिया, श्री पवनकुमार गोयल, श्री अमरचन्द बाफना आदि अनेक छात्र सी.ए. हैं। श्री मांगीलाल हिरण, श्री मनोज नागौरी आदि छात्र जवाहरात के पेशे में संलग्न होकर संघ-समाज को सेवा दे रहे हैं। इस प्रकार संस्थान से अधिष्ठाता गुरुजी श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा के सान्निध्य से जो छात्र निकले हैं वे अपने जीवन-निर्वाह के साथ आध्यात्मिक एवं धार्मिक गतिविधियों में भी संलग्न हैं। अब संस्थान का लक्ष्य व्यापक हो गया है। नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का वपन करने के साथ अब अधिक संख्या में छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा के अवसर प्रदान किये जायेंगे, जिससे संस्थान की महक दूर-दूर तक व्याप्त हो सकेगी। मनुष्य जीवन का सार ज्ञान है तथा ज्ञान का सार आचरण है। आचरण अच्छा होने पर संस्थान के

छात्रों की मांग सर्वत्र रहेगी।

संस्थान के पूर्वछात्रों में आन्ध्रप्रदेश सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री श्रीपाल देशलहरा-हैदराबाद , पुलिस उप अधीक्षक श्री पवन कुमार जैन-भवानी मण्डी, श्री पारसमल जैन (सी.ए.)-मुम्बई एवं वर्तमान छात्र श्री पवन जैन ने भी अपने वक्तव्य में संस्थान से प्राप्त ज्ञान लाभ एवं जीवन-निर्माण में योगदान का उल्लेख किया।

नवीन भवन-निर्माण के संयोजक एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपड़ा ने कहा कि इस भवन में 24 कमरे हैं तथा प्रत्येक कमरे में तीन छात्र रह सकते हैं। इस प्रकार भवन में 72 छात्रों के रहने का स्थान है। तीन हॉल हैं, भोजन की सुन्दर व्यवस्था है तथा ध्यान-कक्ष की सुविधा है। विशिष्ट अतिथि श्री डी.आर.मेहता ने कहा कि संस्थान में समृद्ध पुस्तकालय हो तथा यह संस्थान ध्यान-साधना का भी उत्तम केन्द्र बने।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल सुराणा ने कहा कि जिस प्रकार छात्रों के लिए यह संस्थान कार्य कर रहा है, उसी प्रकार मानसरोवर में स्थित मण्डल की भूमि पर छात्राओं के अध्ययन के लिए पृथक् संस्थान प्रारम्भ किया जाएगा। उन्होंने संस्थान की गुणवता बढ़ाने के लिए अच्छे अधिष्ठाता एवं अध्यापकों की महत्ता को स्वीकार किया।

मुख्यातिथि संघ-सेवा शिरोमणि श्री मोफतराज जी मुणोत ने कहा कि संस्कार तभी टिकाऊ होते हैं जब वे ज्ञान से पुष्ट हों। छात्रों को संस्थान में प्रवेश देते समय यह आधार हो कि उसकी आध्यात्मिक रुचि कितनी है, तथा क्या वह आध्यात्मिक-नैतिक संस्कारों को ग्रहण कर सकता है। इसके लिए अध्यापक का भी चरित्र अच्छा होना आवश्यक है। मुणोत साहब ने कहा कि यह भवन शिक्षण एवं ध्यान के साथ ज्ञान का भी केन्द्र बने, जिसमें विविध प्रकार के व्याख्यान एवं संगोष्ठियों का आयोजन हो।

समारोह अध्यक्ष एवं संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने संस्थान के नये स्वरूप पर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की तथा पूर्व छात्रों से कहा कि वे वर्ष में एक बार गुरुदर्शन अवश्य करें। लोकार्पण समरोह सत्र का संचालन सुश्रावक श्री पारसचन्द जी जैन, जयपुर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के अधिष्ठाता श्री दिलीप जैन ने किया। समारोह में भवन-निर्माण के ठेकेदार श्री छीतरमल जी एवं आर्किटेक्ट श्री पुखराज जी जैन को भी सम्मानित किया गया।

21 जनवरी को मध्याह्न भोजन के पश्चात् पूर्व छात्रों एवं वर्तमान छात्रों का परिचय सत्र आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 50 पूर्व छात्रों एवं 21 नये छात्रों ने परिचय दिया। इससे विदित हुआ कि कौन छात्र क्या कर रहा है तथा उसकी धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक गतिविधियाँ किस प्रकार चल रही हैं। इस सत्र में गुरुजी श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के उपाध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जी जैन, आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के संयोजक श्री विनय जी डागा तथा संस्थान के वर्तमान अधिष्ठाता श्री दिलीप जैन का सान्निध्य प्राप्त था। सम्मेलन में समस्त छात्रों का भ्रातृत्व उमड़ रहा था। इसी परिचय सत्र में पूर्व छात्रों की परिषद् का भी गठन किया गया जिसका नाम 'आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्व छात्र परिषद्' रखा गया। यह परिषद् संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक रहेगी। परिषद् के पदाधिकारियों का भी मनोनयन किया गया।

21 जनवरी को ही रात्रि 7 बजे एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें न्यायमूर्ति श्री जसराज जी चौपड़ा ने पूर्व छात्रों को सामाजिक दायित्व का बोध कराया। पूर्व संघाध्यक्ष एवं संघहित चिन्तक श्री कैलाशचन्द्र जी हीरावत ने संस्थान के नये स्वरूप पर प्रकाश डाला तथा भावी योजना से अवगत कराते हुए कहा कि हमारी भावना है कि संस्थान से प्रतिवर्ष 100 छात्र अध्ययन करके निकलें। संस्थान के पूर्व छात्रों में श्री पवन कुमार जैन (RPS) श्री लोकेश कुमार जैन (IRS) एवं डॉ. धर्मचन्द जैन ने सम्बोधित करते हुए संस्थान की महत्ता पर प्रकाश डाला एवं गुरुजी श्री लोढ़ा साहब द्वारा प्रदत्त संस्कारों का स्मरण किया। संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने पूर्व छात्रों को उनकी सफलता पर बधाई दी तथा पूर्व छात्र परिषद् के गठन पर प्रसन्नता प्रकट की। संस्थान के छात्रों ने इस अवसर पर 'अनाथीमुनि' पर एक नाटिका का मंचन किया।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित 'आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना' के अन्तर्गत पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में 27 से 31 दिसम्बर, 2011 तक भोलपागढ़ में धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर में सवाईमाधोपुर, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़ (रामपुरा),

खेरली, हिण्डौनसिटी, गंगापुरसिटी, भरतपुर, अलवर, कोटा, जयपुर, पीपाड़, भोपालगढ़, नागौर, जोधपुर, जबलपुर, बालोतरा, मांगरोल, नदबई, श्योपुर आदि स्थानों से 179 छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हुए। योग्यता के आधार पर 8 कक्षाओं में वर्गीकृत कर आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया गया। शिविर में ज्ञानार्जन के साथ क्रियात्मक पक्ष जैसे शुद्ध सामायिक, प्रतिक्रमण, उपवास, प्रत्याख्यान आदि पर विशेष बल रहा। 2 तेले, 10 बेले, 30 उपवास एवं कई एकासन हुए। शिविर के तृतीय दिवस पर 150 एकाशन हुए।

शिविर में शिक्षण कार्य के रूप में श्री महेन्द्र जी जैन-जयपुर, श्री दिलीप जी जैन-जयपुर, श्री प्रकाश जी पारख-धनारीकलाँ, श्री राकेश जी जैन-जयपुर, श्री अंकित जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री मनीष जी जैन-चैन्नई, श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड़, श्रीमती कंचन जी मुथा-भोपालगढ़ की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। परम श्रद्धेय तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने प्रतिदिन दोपहर में उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वां अध्ययन सम्यक्त्व पराक्रम को लेकर अपनी वैराग्यप्रद वाणी से सामूहिक कक्षा को संबोधित किया। महासती मण्डल ने भी शिविरार्थियों को कक्षाओं के माध्यम से प्रेरणाएँ की।

शिविर के समापन समारोह में अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निदेशक श्री सुमतिचन्द जी मेहता-पीपाड़, परामर्शदाता श्री कुशलचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, चेन्नई, महासचिव श्री मनोज जी कांकरिया-भोपालगढ़, क्षेत्रीय प्रधान श्री रविन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर, स्थानीय श्री संघ के अध्यक्ष श्री शम्भूलाल जी चौरड़िया, मंत्री श्री सोहनलाल जी बोथरा एवं कई महानुभावों का सान्निध्य एवं आशीर्वचन शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। शिविर के समापन समारोह में शिविरार्थियों ने शिविर दौरान अर्जित ज्ञान एवं अपने अनुभवों से अवगत कराया। शिविर की रिपोर्ट श्री दिलीप जी जैन द्वारा प्रस्तुत की गई। परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल भोपालगढ़ के सभी कार्यकर्त्ताओं ने उत्साह से अतिथि सेवा का लाभ लिया। - *मनोज कांकरिया, महासचिव-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्*

युवक परिषद् की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की

बैठक दिनांक 31 दिसम्बर, 2011 को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में कार्यकारिणी पदाधिकारी एवं सदस्यों सहित शाखा पदाधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में युवक परिषद् के चारों राष्ट्रीय कार्यक्रमों एवं इसके अन्तर्गत दिवस विशेष एवं अभियानों की क्रियान्विति तथा कार्यप्रगति की समीक्षा की गई। बैठक के एजेण्डा बिन्दुओं पर विचार विमर्श हुए तथा निर्णय लिए गए। विशेष रूप से आगम स्वाध्याय को बढ़ावा देने की दिशा में व्यापक चिन्तन हुआ एवं शाखाओं में वर्ष भर में तीन आगमों ज्ञाताधर्मकथा, उत्तराध्ययन एवं दशवैकालिक का अध्ययन करने वाले युवारत्न को आगामी आमसभा में सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। जिनवाणी मासिक पत्रिका पर आधारित त्रैमासिक स्वाध्याय प्रतियोगिता के लिए युवारत्न श्री नमन समुतिचन्द जी मेहता-पीपाड़शहर को संयोजक नियुक्त किया गया। बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने रात्रि भोजन त्याग महाभियान के संकल्प-पत्र भर कर रात्रि भोजन त्याग के संकल्प लिए। *-मनोज कांकरिया, महासचिव*

जोधपुर में 10 केन्द्रों पर प्रति रविवार संस्कार शिविर

परमपूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर द्वारा चातुर्मासोपरान्त रविवारीय संस्कार शिविर निरन्तर चल रहा है। इस शिविर में 18 वर्ष तक के बालक-बालिकाएँ भाग लेकर सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल एवं थोकड़े सीख रहे हैं। दिसम्बर 2011 एवं जनवरी 2012 में प्रतिसप्ताह औसत 820 बालक-बालिकाओं ने विद्वान अध्यापकों से ज्ञान-ध्यान सीखा है। शिविर संचालन हेतु विभिन्न दानदाताओं का एवं संघ तथा संघ की सहयोगी संस्थाओं का सहयोग निरन्तर मिल रहा है। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 102 वीं जन्म-जयन्ती सभी केन्द्रों पर गुणगान कर मनाई गई *-मानेन्द्र ओस्तवाल, मंत्री*

'मुक्ति का राही' खुली पुस्तक प्रतियोगिता का परिणाम

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा दिनांक 6 मई, 2011 से 10 नवम्बर, 2011 तक अध्यात्मयोगी, युगमनीषी, परमाराध्य महामहिम आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के व्यक्तित्व-कृतित्व एवं जीवन-दर्शन पर

श्री सम्पतराज जी चौधरी द्वारा रचित काव्य रचना 'मुक्ति का राही' पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में देश के कोने-कोने से 1000 प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर दिया गया है। प्रतियोगिता में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कार राशि श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली के सौजन्य से चैक द्वारा भिजवाई जा रही है। सभी प्रतियोगियों को पोस्टकार्ड के द्वारा सूचना भिजवाई गई है, मोबाइल पर संदेश भी प्रेषित किया जा रहा है। मैरिट लिस्ट में आने वालों की सूची 320 अंकों में से इस प्रकार हैं-

प्रथम स्थान (313 अंक)- श्रीमती मंजूलता भण्डारी-अहमदाबाद, श्रीमती रुचिका लुणावत-जोधपुर, श्रीमती प्रीति खींचा-जयपुर।

द्वितीय स्थान (312 अंक)- श्रीमती वंदना जैन-होशियारपुर, श्रीमती सुषमा सिंघवी-जोधपुर, श्री कंवलराज मेहता-जोधपुर, श्री चेतन बोहरा-पीपाड़सिटी, श्रीमती मीरा जैन-सवाईमाधोपुर।

तृतीय स्थान (311.5 अंक)- श्रीमती प्रेमलता मूथा-रोहट, श्रीमती मंजूला बोहरा-जोधपुर, श्रीमती शीलू हीरावत-जयपुर।

10 टॉप स्थान प्राप्त करने वाले (310.5 से 311 अंक)- श्री सुमतिचन्द मेहता-पीपाड़सिटी, श्रीमती उजास डाकलिया-जोधपुर, श्रीमती हेमलता जैन-ब्यावर, श्रीमती अंकिता बाफना-जोधपुर, श्रीमती पुष्पा जैन-जयपुर, श्रीमती जयमाला कांकरिया-पाली, श्री संतोष कुमार जैन-दांतिया, श्रीमती कुसुम सिंघवी-जोधपुर, श्रीमती प्रमिला मेहता-दूदू, श्रीमती शालिनी जैन-आगरा।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें- श्रीमती सुनीता मेहता-अध्यक्ष, 0291-2640757

विश्व संस्कृत सम्मेलन में जैनविद्या पर भी शोधालेख

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली एवं अन्ताराष्ट्रिय संस्कृत अध्ययन समवाय के संयुक्त तत्त्वावधान में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 5 से 10 जनवरी, 2012 तक विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन 5 जनवरी को भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं मानव संसाधन मंत्री कपिल सिब्बल ने किया। सम्मेलन में वेद, दर्शन, नाट्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र, संस्कृत और विज्ञान, धर्मशास्त्र-अर्थशास्त्र, अनुष्ठान विद्या, प्रौद्योगिक जगत् में संस्कृत,

बौद्धविद्या आदि के साथ जैन विद्या पर भी शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। जैन विद्या में कुल 17 शोधपत्र पढ़े गए, यथा-

प्रथम सत्र - अध्यक्षता : डॉ. जितेन्द्र बी. शाह

1. डॉ. धर्मेन्द्र जैन - जैनपरम्परायां राष्ट्रभावना
2. डॉ. रजनीश शुक्ला- Non-violence and world peace of Mahavira
3. Eva De clereq - The Jaina Perception of Kalki

द्वितीय सत्र - अध्यक्षता : डॉ. जितेन्द्र बी. शाह

4. डॉ. कुलदीप कुमार- जैनदर्शने प्रमाणविचारः
5. डॉ. अनेकान्त कुमार जैन- World Peace and non-violence (with Special reference to Prakrit and Sanskrit Jain literature)
6. डॉ. प्रतीक दत्त - The Mīmāmsaka and the Naiyāyika critique on the theory of sarvajña of Jaina philosophy.

तृतीय सत्र - अध्यक्षता : Dr. Peter flugel, England

7. रूप चावड़ा - Kṛṣnacarita in Jain tradition
8. डॉ. धर्मचन्द जैन- Concept of Srutajñana
9. Dr. Peter Fliugel - Kārmic and natural causality in Jaina Philosophy

चतुर्थ सत्र - अध्यक्षता - Dr. Nalini Balbir, France

10. डॉ. जगतराम भट्टाचार्य - An introduction to the original Praśna vyākaraṇa
11. डॉ. कमलेश कुमार जैन - जैनदर्शने शब्दस्य पौद्गलिकत्वप्रतिपादनम्
12. डॉ. प्रमोद सिंह - जैनदर्शने प्रमाणस्वरूपम्

पंचम सत्र -अध्यक्षता : डॉ. जयेन्द्र सोनी, मार्बर्ग, जर्मनी

13. सपना जैन - Theory of matter in Jaina Philosophy
14. Marie-Helen Gorissa - Specifying rules of use for universal concomittance from Prabhacāndra's characterization of inference.

षष्ठ सत्र - अध्यक्षता : डॉ. जयेन्द्र सोनी, मार्बर्ग, जर्मनी

15. डॉ. अनिता जैन - जैनदर्शनानुसारेण मनःस्थैर्यप्रबन्धनम्
16. Himal Trikha - Competing world views : Perspectivism and polemics in The Satyasasana pariksa and other Jaina works.
17. Shalin Jain - Piety, Laity and royalty in early medieval India : Narratives from the Jain Sanskrit tradition

विशिष्ट विमर्श – अध्यक्षता : सत्यदेव मिश्र

18. Christine Chojnacki - Remodeling Jain novels in medieval times : Means and Motivations.
19. Basile Leclere - Evolving Patterns in Jain narrative Literature : Stylistic and Structural influences of Medieval theater on Storytelling.

सम्मेलन में कवि-समवाय एवं पण्डित परिषद् का भी आयोजन हुआ। सम्मेलन में लगभग 1000 विद्वानों ने भाग लिया। लगभग 200 विद्वान् विभिन्न 38 देशों से सम्मिलित हुए। सम्मेलन का समापन सत्र डॉ. कर्णसिंह, श्रीमती शीला दीक्षित एवं डॉ. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में हुआ।

शाजापुर में 'जैन दार्शनिकों का भारतीय दर्शन को अवदान' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.) में डॉ. सागरमल जी जैन के निर्देशन में 30-31 दिसम्बर, 2011 एवं 1 जनवरी, 2012 को भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली के अर्थसहयोग से 'भारतीय दर्शन को जैन दार्शनिकों का अवदान' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई।

संगोष्ठी के उद्घाटनसत्र में डॉ. सागरमल जी जैन ने आधार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारतीय दर्शन को जैन दार्शनिकों का अवदान त्रिविध रहा है- 1. अन्य दर्शनों की एकान्तवादी मान्यताओं की निष्पक्ष समीक्षा तथा एकान्तवादिता के दोषों का स्पष्टीकरण। 2. परस्पर विरोधी दार्शनिक मतवादों के मध्य अनेकान्तवादी दृष्टि से समन्वय का प्रयत्न। 3. निष्पक्ष होकर दर्शन संग्राहक ग्रन्थों की रचना। डॉ. रतनचन्द जैन-भोपाल, एवं डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा जी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्बोधित किया तथा अध्यक्षता डॉ. धर्मचन्द जैन-जोधपुर ने की। डॉ. ए.बी. शिवाजी एवं डॉ. तेजसिंह गौड़-उज्जैन ने भी सम्बोधित किया। संगोष्ठी में लगभग 20 विद्वानों एवं विदुषियों ने शोधालेख प्रस्तुत किए, जिनमें डॉ. फूलचन्द जैन प्रेमी, दिल्ली ने 'आचार्य समन्तभद्र का योगदान' विषय पर डॉ. सुषमा सिंघवी-जयपुर, ने "आचार्य कुन्दकुन्द का भारतीय दर्शन को अवदान" विषय पर, डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर ने "आचार्य वादी देवसूरि और उनके शिष्य रत्नप्रभसूरि का भारतीय दर्शन को अवदान" डॉ. कोकिला शाह-मुम्बई ने Contribution of Acharya Amritchandra to Jain Philosophy, डॉ. दीनानाथ शर्मा-अहमदाबाद ने "जैन आगमों में जैनदर्शन

तत्त्व, डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने "तेरापंथ आचार्यों का योगदान", डॉ. श्वेता जैन ने "उपाध्याय विनयविजय का भारतीय दर्शन को अवदान" विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किए। डॉ. अरूणप्रतापसिंह-वाराणसी ने "स्याद्वाद सिद्धान्त का अशोक की शासन नीति पर प्रभाव", शीर्षक से डॉ. रमेशचन्द्र गुप्त, अहिछत्र ने "ईश्वर सम्बन्धी दृष्टिकोण : जैनदर्शन के आचार्य हरिभद्र के विशेष सन्दर्भ में" शीर्षक से, डॉ. रेणुका पोरवाल-मुम्बई ने "Contribution of Dr. Sagarmal Jain in the field of History and Archaeology" विषय पर शोध निबन्ध प्रस्तुत किए।

1 जनवरी 2012 को डॉ. सागरमल जी जैन का अमृत महोत्सव मनाया गया, जिसमें उनके सम्बन्धियों एवं निकटवर्ती हितैषियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। डॉ. सागरमल जी एवं उनकी धर्मपत्नी का सम्पूर्ण परिवार एवं समाज पर उल्लेखनीय सकारात्मक प्रभाव है।

जैन यूनिवर्सिटी, बैंगलोर द्वारा जैन विद्या पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

जैन विश्वविद्यालय, बैंगलोर के प्रबन्ध अध्ययन केन्द्र (Centre for Management Studies) द्वारा 2 जनवरी, 2012 को 'जैन विद्या का कला, संस्कृति और साहित्य पर प्रभाव' विषय पर संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी एवं कन्नड इन चार भाषाओं में अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी 'सन्मार्ग' का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रातःकाल जे.जी.आई. के चेयरमेन डॉ. चैनराज जैन ने स्वागत भाषण दिया। जैन विद्या एवं कन्नड भाषा के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. हम्पा नागराजैय्या ने विस्तृत उद्घाटन भाषण दिया। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कन्नड साहित्यकार डॉ. चन्द्रशेखर कम्बरा, राजस्थान पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. गुलाब कोठारी एवं हिरोशिमा विश्वविद्यालय, जापान के प्रो. हिदेयोगे ओगेवा ने भी सम्बोधित किया। संगोष्ठी में कुल 12 सत्र (प्रत्येक भाषा में 3 सत्र) सम्पन्न हुए जिनमें 52 शोधपत्र पढ़े गए। संस्कृत भाषा में सम्पन्न सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र एवं डॉ. धर्मचन्द जैन, डॉ. श्रीयांस कुमार सिंघई तथा डॉ. धर्मचन्द जैन ने की। हिन्दी सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः डॉ. प्रियदर्शना जैन, डॉ. प्रेमसुमन जैन एवं डॉ. रमेश गादिया तथा डॉ. जितेन्द्र बी.शाह ने की। संगोष्ठी में क्योटो विश्वविद्यालय जापान के डॉ. दिवाकर आचार्य, श्री शान्तिलाल बोहरा आदि विद्वानों ने भी भाग लिया। अन्त में पेनल डिस्कशन भी हुआ, जिसमें

डॉ. शुभचन्द्र, मैसूर, डॉ. अजित प्रसाद, बैंगलोर, डॉ. एच.एस. राघवेन्द्र राव, बैंगलोर आदि ने भाग लिया। कान्फ्रेंस का समन्वयन श्रीमती तेजस्विनी जांगड़ा ने किया।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- श्री वर्द्धमान अस्पताल, घोड़ों का चौक, जोधपुर में आचार्य हस्ती जन्म-दिवस, 8 जनवरी को एक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. राम गोयल एवं डॉ. जी.सी. गांधी द्वारा हर्निया एवं बवासीर के 15 ऑपरेशन किए गए। निःशुल्क ऑपरेशन के साथ 5 दिन की दवा भी निःशुल्क उपलब्ध कराई गई। वर्द्धमान अस्पताल के अध्यक्ष एवं संघ के महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी ने बताया कि अस्पताल में फिजिशियन, शल्य चिकित्सक, हड्डी रोग विशेषज्ञ, दंत रोग विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ, नाक-कान-गला विशेषज्ञ एवं फिजियोथेरेपिस्ट की सुविधा उपलब्ध है। संत-सतियों की चिकित्सा में भी इस अस्पताल की सेवाएँ रहती है। 15 मार्च को पुनः एक निशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया जा रहा है।

चेन्नई- श्री जैन सहायक समिति द्वारा जैन समाज के बुजुर्ग एवं शारीरिक रूप से अस्वस्थ, जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है एवं आय के साधन नहीं है ऐसे जैन भाई बहनों को प्रतिमाह आर्थिक सहायता हेतु पेंशन योजना चलाई जा रही है। जरूरत मन्द भाई-बहिन अपना आवेदन निम्न पते पर भेज सकते हैं- श्री जैन सहायक समिति, 170, मिन्ट स्ट्रीट, दूसरा माला, चेन्नई-600079, फोन-094444-67744

छत्तीसगढ़- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर द्वारा संघ का 50 वाँ वर्ष स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत सामायिक, स्वाध्याय, बारह व्रत, धार्मिक पाठशाला, शिविर, व्यसनमुक्ति अभियान आदि कई कार्यक्रम आयोजित होंगे।

चेन्नई- करुणा अंतरराष्ट्रीय का चौदहवाँ वार्षिक सम्मेलन 6 एवं 7 जनवरी, 2012 को मेयर श्री सैदै दुरैस्वामी एवं श्री डी. जयकुमार, स्पीकर, तमिलनाडु लेजिस्लेटिव असेंबली के मुख्यातिथ्य में एवं श्रीमती प्रमोदाबेन चित्रभानु, निदेशक, जैन इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर न्यूयार्क के विशिष्टातिथ्य में हर्षोत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विशेष वक्ता डॉ. नंदिता कृष्णन, श्री

विजय मेनन, डॉ. चोकलिंगम के प्रेरणादायी व्याख्यान हुए। कार्यक्रम का प्रारंभ श्री सुरेन्द्रभाई मेहता, मानद चेयनमेन द्वारा करुणा प्रदर्शनी के उद्घाटन से और समापन वरिष्ठ संरक्षक श्री भंवरलाल गोठी द्वारा इस वर्ष में शामिल हुए नये वरिष्ठ संरक्षकों के सम्मान से हुआ। इसमें 16 उत्कृष्ट करुणा क्लब विद्यालयों को एवं 30 दयावान विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

-सुरेश कांकरिया, महासचिव

मुम्बई- जैन फुलवारी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 26 फरवरी 2012 को परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में राजस्थानी, गुजराती, कच्छी, महाराष्ट्री तथा हिंदी भाषी प्रदेशों सहित देश के सभी भागों के श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी आदि सभी जैन समुदाय के विधवा, विधुर, तलाकशुदा, विकलांग भाग ले सकते हैं। सम्मेलन में भाग लेने के लिए उम्मीदवार को 15 फरवरी, 2012 तक संस्था कार्यालय में अपना आवेदन पासपोर्ट साइज के दो फोटो, और प्रवेश शुल्क (400 रुपये) सहित जमा कराना अनिवार्य होगा। उम्मीदवार अपना आवेदन प्रत्यक्षतः अथवा डाक/कुरीयर द्वारा जमा कर सकते हैं। मुम्बई से बाहर के उम्मीदवार प्रवेश शुल्क डी.डी./ मनी आर्डर जैन फुलवारी के नाम से भेजें। **आवेदन जमा करने का पता-** जैन फुलवारी, हिन्द इलेक्ट्रिक प्रिमाइसेस, नागु सयाजी वाड़ी, सामना प्रेस के पास, न्यू प्रभादेवी रोड़, मुम्बई-400025, फोन- 099307-56598

दिल्ली- भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी द्वारा "प्राकृत भाषा एवं साहित्य अध्ययन" की चौबीसवीं (दिनांक 20 मई 2012 से 10 जून, 2012 तक) बाईस दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है, जिसमें संस्कृत, प्राकृत, पालि, हिन्दी विषयों में स्नातकोत्तर उत्तीर्ण विधार्थी, शोधार्थी एवं अध्यापक आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र संस्थान की वेबसाइट- www.blinstitute.org से प्राप्त किया जा सकता है। अभ्यर्थियों द्वारा पूरित आवेदन पत्र संस्थान में प्राप्ति की अंतिम तिथि 29 फरवरी, 2012 है। **पत्रोत्तर का पता-** प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, निदेशक- भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, जैन मंदिर परिसर, 20वां कि.मी., पोस्ट अलीपुर, दिल्ली-110036, फोन-011-27202065, 27206630, मोबाइल-09868883648, ईमेल-director@blinstitute.org

मुम्बई- राष्ट्रसंत उपाध्याय रत्नश्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य

में All Indian Jain Chartered Accountant Conference 4 दिसम्बर 2011 को संपन्न हुई। जिसमें पूरे देश से लगभग 100 सी.ए. ने भाग लिया। मुख्य अतिथि एद्मश्री डॉ. डी.वाय. पाटिल, राज्यपाल, त्रिपुरा राज्य, अध्यक्ष श्री के.सी. जैन, सी.ए. तथा विशिष्ट अतिथि श्री पवन वेद (इनकम टैक्स कमिश्नर) कमल तातेर हाईकोर्ट जज, पंकज जैन सी.ए. सदस्य सेन्ट्रल कॉंसिल, एस.के. जैन, श्री जम्बूकुमार जी कासलीवाल रहे। स्वागत भाषण श्री जम्बूकुमार जी कासलीवाल ने किया।

बधाई/चुनाव

मुम्बई- श्री जैन सेवा संघ, मुम्बई द्वारा 11 दिसंबर, 2011 को आयोजित एक भव्य समारोह में श्री दुलीचन्द जैन, चेन्नई का अभिनंदन किया गया तथा उन्हें ''जैन सेवा रत्न'' अवार्ड प्रदान किया गया। श्री जैन को यह सम्मान उनकी पिछले 20 वर्षों से मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में की गई सेवाओं के लिए दिया गया।

जयपुर- अर्पिता सुपुत्री इन्दू जी एवं रिखबचन्द जी सुखलेचा एवं सुपौत्री स्व. दीपचंद जी सुखलेचा ने B-Tech में 81 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। पूरे परिवार की आचार्यप्रवर एवं संत-साध्वी मण्डल के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति है। आप विगत 10-11 वर्षों से ग्रीष्मकालीन शिविर में बच्चों को अध्यापन कराती हैं।

जयपुर- श्री सम्यक् डागा सुपुत्र श्री संजय कुमार जी एवं श्रीमती तृप्ति जी डागा ने कॉमन प्रोफिसिएन्सी टेस्ट में अखिल भारतीय स्तर पर 9 वां स्थान प्राप्त किया। सम्यक् डागा वर्तमान में आई.आई.टी.कानपुर में अध्ययनरत हैं। आप श्री प्रेमचन्द जी जैन, उपाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के दौहित्र हैं।

जयपुर- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली ने डॉ. पी.सी. जैन, पूर्व निदेशक, जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय-जयपुर को उनकी उल्लेखनीय सेवाएँ एवं उनके द्वारा किये गये उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसंधान कार्य को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें एमरीटस प्रोफेसर के सम्मान से सम्मानित किया है।

जोधपुर- नवीता कुम्भट ने ''किशोर आपराधिकता : रोकथाम एवं मानवाधिकार'' विषय पर विधि संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में शोध कार्य पूर्ण किया। इस कार्य पर विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें पीच्.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

खामगाँव- सौ. प्रिया धर्मपत्नी श्री जयेश कुमार जी सांडेचा ने एम.कॉम. में अमरावती विद्यापीठ से मेरिट में 5 वां स्थान प्राप्त किया तथा नेट परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की। हार्दिक बधाई।

सी.ए. में उत्तीर्ण छात्र

अर्पित जैन

अनुरोध भण्डारी

निखिल जैन

प्रतीक्षा मेहता

महक बम्ब

कपिल संचेती

सुमेघा मेहता

खुशबू गांधी

विकास मेहता

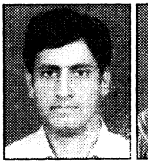
भरत जैन

विनय कोचेटा

पारुल खिवसरा

1. **कोटा-** श्री अर्पित जैन, सुपुत्र श्रीमती मंजू-रतनलाल जी जैन (चौरू वाले)
2. **ब्यावर-** श्री अनुरोध भण्डारी, सुपुत्र श्रीमती अनीला-देवेन्द्र भण्डारी
3. **अजमेर-** श्री निखिल जैन, सुपुत्र श्रीमती नीलम-डॉ. ललित जैन।
4. **जयपुर-** सुश्री प्रतीक्षा मेहता, सुपुत्री श्रीमती निशा-प्रदीप कुमार मेहता एवं सुपौत्री श्रीमती सुशीला-स्व.श्री कैलाश जी मेहता।
5. **जयपुर-** सुश्री महक बम्ब सुपुत्री श्रीमती मंजू-आलोक जी बम्ब एवं सुपौत्री डॉ. मंजुला-स्व. हेमचन्द जी बम्ब।
6. **सुमेरगंज मण्डी-** श्री प्रशान्त जैन सुपुत्र स्व. श्री सुरेशचन्द जी जैन
7. **जोधपुर-** श्री कपिल संचेती सुपुत्र श्रीमती विद्या-दिलीप संचेती एवं सुपौत्र श्रीमती अकलकंवर-शेषमल जी संचेती।
8. **बड़ौदा-** सुश्री सुमेघा मेहता, सुपुत्री श्रीमती रीटा-रमेश मेहता एवं दोहित्री श्री

चंचलमल जी चोरडिया।

9. **मुम्बई-** सुश्री खुशबू सुपुत्री श्री विनोद जी गांधी एवं सुपौत्री श्री बसन्त जी गांधी।
10. **जोधपुर-** श्री विकास जी मेहता सुपुत्र श्री वर्धमानचन्द जी मेहता।
11. **पीपाइसिटी-** श्री भरत जैन सुपुत्र श्रीमती मधुजी-प्रकाशचन्द जी मुथा एवं सुपौत्र श्री जबरचन्द जी मुथा।
12. **जयपुर-** श्री विनय कोचेटा सुपुत्र श्रीमती निर्मला-शांतिलाल कोचेटा एवं सुपौत्र श्रीमती कंचनदेवी-बंशीलाल जी कोचेटा।
13. **जोधपुर-** सुश्री पारूल खिंवसरा सुपुत्री श्रीमती जया-सुरेशचन्द्र जी खिंवसरा एवं सुपौत्री श्रीमती पुष्पकंवर एवं स्व. श्री कपूरचन्द जी खिंवसरा।

श्रद्धाञ्जलि

महाश्रमणी रत्ना साध्वी श्री का 59वें दिन महाप्रयाण

बीकानेर- श्री साधुमार्गी जैन संघ की ज्येष्ठ साध्वीरत्ना श्री इन्द्रकंवर जी म.सा. का संथारे के 59 वें दिन शुद्ध आत्म-भावों के साथ प्रातः 9.22 बजे महाप्रयाण हो गया। आपने गत 31 अक्टूबर, 2011 को ज्ञानपंचमी के शुभ दिन श्री रमेशमुनि जी म.सा. के मुखारविन्द से तिविहार संथारे के पच्चक्खाण ग्रहण किये थे। समाधिमरणोपरान्त दिनांक 29 दिसम्बर, 2011 को सेठिया कोटड़ी में स्मृति सभा का आयोजन किया गया।

जोधपुर- गुरुभक्त, संघ समर्पित श्रावकरत्न मुख्य न्यायाधिपति श्री चाँदमल जी

लोढ़ा का 29 जनवरी, 2012 को 93 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आदरणीय श्री लोढ़ा साहब संस्कृति एवं न्याय जगत् के विश्रुत व्यक्तित्व के धनी थे। वे उच्चकोटि के विद्वान् एवं साहित्य सर्जक रहे। न्यायक्षेत्र में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। न्याय के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए समर्पित लोढ़ा साहब ने आसाम एवं राजस्थान उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश के पद को सुशोभित किया। आपने जैन धर्म दर्शन के साथ विभिन्न दर्शनों का गहन अध्ययन किया था। आपका मौलिक चिन्तन, सूझबूझ और रचनात्मक दृष्टिकोण था। आप अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। विभिन्न संस्थाओं को आपका समय-समय पर मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता रहता था। रत्नसंघ की विभिन्न

प्रवृत्तियों के उन्नयन एवं विकास में समय-समय पर आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। संघ की सभी गतिविधियों में लोढ़ा परिवार का सदैव सक्रिय सहयोग रहा है।

ब्यावर- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती चूकीकंवर जी गोलेच्छा धर्मपत्नी

सुश्रावक स्व. श्री मांगीलाल जी गोलेच्छा का 20 जनवरी, 2012 को संथारे सहित समाधिपूर्वक मरण हो गया। सुश्राविका संघ-सेवा, संत-सेवा और स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में जीवन पर्यन्त सजग रहीं। परिवारजनों को धर्म के सम्मुख लाने में श्राविकारत्न का योगदान प्रेरणादायी है। आपने विगत 45 वर्ष पूर्व शीलव्रत का खंद अंगीकार किया। रात्रि-भोजन त्याग, चौविहार, लिलोती त्याग, कच्चे पानी का त्याग का नियम वर्षों से चल रहा था। वे सरल, सहज, सात्त्विकवृत्ति की श्राविका थीं। हर सम्प्रदाय के संत-सतीवृन्द की वे भावनापूर्वक सेवा करने में अग्रणी रहती थीं। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में उनका विशेष रूप से लगाव था इसलिये गोलेच्छा परिवार रत्नसंघ परम्परा में विभिन्न दायित्वों में सक्रिय रहा। आपके सुपुत्र सुश्रावक श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा और श्री महेन्द्र कुमार जी गोलेच्छा अच्छे चिन्तक और उत्साही संघ-सेवी श्रावक हैं। सुपौत्र ललित जी एवं यशवन्त जी भी धर्मनिष्ठ हैं।

पीपाड़ शहर- सरलता, सहजता, सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति एवं समाज-सेवा में

उदारता पूर्वक सहयोग करने वाली श्राविकारत्न श्रीमती लाडकंवर जी गांधी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री बसन्तराज जी गाँधी हाल मुकाम मुम्बई का 29 जनवरी, 2012 को असामयिक स्वर्ग-गमन हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। गाँधी परिवार की गुरु हस्ती-गुरु हीरा के प्रति जाति-न्याति सम्बन्धों के कारण शुरु से भक्ति रही, फिर श्राविकारत्न का पीहर पक्ष का परिवार जो रत्नसंघ के समर्पित परिवारों में से है, इस वजह से भी श्राविकारत्न का रत्नसंघ के प्रति लगाव व जुड़ाव बढ़ा। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. कांदिवली-मुम्बई चातुर्मास में एवं मुम्बई महानगर के विचरण-विहार में श्राविकारत्न के सुपुत्र श्री विनोद जी गाँधी ने समय का भोग देकर चातुर्मास में भोजन व्यवस्था की जिम्मेदारी संभाली। श्राविकारत्न ने गुरु-हीरा के मुखारविन्द से शील व्रत का खंद किया, जमीकन्द का त्याग किया और आयंबिल-उपवास-एकासन करने में सदा सजगता दर्शायी।

श्रीमती लाडकंवर जी अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है।

जोधपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती सुन्दरदेवी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री दलीचन्द

जी चौपड़ा (पूर्व अध्यक्ष, शास्त्रीनगर) का 6 दिसम्बर 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप सरल, शान्त एवं समभावी होने के साथ नियमित सामायिक, प्रतिक्रमण, दया, पौषध आदि किया करती थीं। आपने कई तपस्याएँ अपने जीवनकाल में कीं।

सिकन्दराबाद- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सायरबाई चोरड़िया धर्मपत्नी स्व. श्री पारसमल चोरड़िया का 17 जनवरी 2012 को मरण हो गया। आप नियमित सामायिक, स्वाध्याय करती थीं। आप नित्य व्रत-प्रत्याख्यान करती थीं। आप श्रीपाल देशलहरा, क्षेत्रीय प्रधान, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्रावक संघ की भुआजी थीं।

जोधपुर- सुश्रावक श्री पुष्पराज जी सुपुत्र स्व. श्री सोहनराज बरड़िया (जैन) का 9 जनवरी 2012 को निधन हो गया। आप बहुत ही शांत एवं सरल स्वभाव के थे। आचार्यप्रवर और उपाध्याय श्री के प्रति आपकी श्रद्धा भक्ति थीं।

चोरू- सुश्रावक श्री चांदमल जी सुपुत्र स्व. श्री नृसिंह लाल जी जैन का 15

दिसम्बर 2011 को 70 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सादगी से परिपूर्ण एवं शान्त स्वभाव से युक्त था। आपके रात्रि भोजन त्याग एवं नवकारसी का नियम था। आपकी रत्नसंघ के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

जोधपुर- स्नेहवत्सला, सुश्राविका श्रीमती स्वरूप कंवर सिंघवी धर्मपत्नी श्री

शीतलचन्द जी सिंघवी का 6 जनवरी 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थीं तथा सन्त-सती की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। स्वधर्मि-वात्सल्य एवं आतिथ्य सत्कार में सिंघवी परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

मायावरम- समाज सेविका, धर्माराधिका श्रीमती प्रेमकंवर बरमेचा धर्मपत्नी स्व.

श्री छीतरमल जी बरमेचा का 7 नवम्बर 2011 को 81 वर्ष की उम्र में समाधिमरण हो गया। आप प्रतिदिन ग्यारह सामायिक एवं स्वाध्याय करती थीं। वात्सल्य पूर्ण स्वभाव के कारण आप 'भौजईसा' के नाम से प्रसिद्ध थीं। मरणोपरान्त आपकी

इच्छानुसार नेत्रदान किए गए।

बारां- सुश्राविका श्रीमती भानुमती पतीरा धर्मपत्नी स्व. श्री हसवन्त राय जी पतीरा

(बाबू भाई) का सागारी संथारे के साथ 22 दिसम्बर, 2011 को 76 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप नित्य पाँच सामायिक करती थीं। आप सरल स्वभावी, गुरु निष्ठा से ओतप्रोत होने के साथ परिवार में सुसंस्कारों का सृजन करने वाली श्रमणोपासिका थीं।

जयपुर- युवा, कर्मठ, सेवाभावी श्री दीपक जी कोठारी सुपुत्र श्री सुनील जी

कोठारी का 5 जनवरी, 2012 को 30 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। आपका जीवन सरल व सुन्दर था। आप हंसमुख एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। विदेश में रहते हुए भी विरासत में प्राप्त धार्मिक संस्कारों का आपने जीवनकाल में पूर्णरूपेण निर्वहन किया। आप संघसेवी, जयपुर संघ के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री सुमेरचन्द जी कोठारी के सुपौत्र हैं। मण्डल के पूर्व उपाध्यक्ष श्री सुमतिचन्द जी कोठारी आपके ताऊजी व जयपुर संघ के सहमंत्री व रत्नसंघ के क्षेत्रीय प्रधान श्री सुरेश जी कोठारी आपके चाचा हैं। आप अपने पीछे पत्नी प्रियंका व एक पुत्री आहना सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

बालोतरा- श्रीमती कमलादेवी बागमार धर्मपत्नी श्री रूपचन्द जी बागमार का

स्वर्गवास 27 दिसम्बर, 2011 को 70 वर्ष की वय में हो गया। आपका पूरा जीवन धर्म से ओतप्रोत था। आप निष्ठावान श्राविका थीं। आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से प्रेरित है। आप न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा की भतीजी थीं।

जयपुर- सन्तसेवी, श्रद्धानिष्ठ समाजसेवी सुश्रावक श्रीमान् देवीचन्द जी सुपुत्र स्व.

श्री होशियारचन्द जी भण्डारी का 29 दिसम्बर, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठा, कर्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप विगत 30 वर्षों से धार्मिक चल पुस्तकालय का संचालन करते थे। जयपुर के जैन परिवारों के घर पर पुस्तकें पहुँचाते व वापस लेकर आते थे। इस कार्य का निर्वहन आपने अन्तिम समय तक किया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी

रहते थे। आपके जीवन पर आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

रियां सेठोंकी (पीपाइसिटी)- वीरदादा सुश्रावक श्री रामलाल जी कवाड़ सुपुत्र

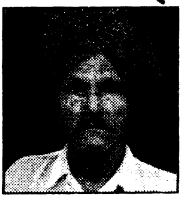

स्व. श्री केवलचन्द जी कवाड़ का 85 वर्ष की वय में 17 दिसम्बर 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक करते थे एवं कई व्रत नियम ले रखे थे। आपके सुपुत्र श्री गौतम जी कवाड़ अ.भा. आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के सहसंयोजक पद को सुशोभित कर रहे हैं। आपकी सुपौत्री साध्वी श्री सिंधुप्रभा जी म.सा. रत्नसंघ में दीक्षित है। आपके पुत्र श्री झुमरलाल जी, शांतिलाल जी, रतनलाल जी, अमृतलाल जी, गौतम जी पूरा परिवार पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर, उपाध्याय प्रवर आदि संत सतियों की सेवा में लगा रहता है।

जयपुर- संघसेवी सुश्राविका श्रीमती पन्नादेवी सुकलेचा धर्मपत्नी धर्मनिष्ठ श्री

विजयसिंह जी सुकलेचा का 67 वर्ष की आयु में 19 जनवरी 2012 को आकस्मिक निधन हो गया। आपने उपवास, तेले, अठाई आदि की अनेक तपस्याएँ कीं। सेवा के साथ सरलता, सहनशीलता, सहजता एवं विनम्रता जैसे गुणों के कारण आपका संघ-समाज में अच्छा प्रभाव था। वे स्वयं भी रत्नसंघ के महिला मण्डल में एक कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्या थीं। मरणोपरान्त श्राविका के नेत्र दान किए गए।

जयपुर- समाजसेवी सुश्रावक श्री सोहनराज जी रांका सुपुत्र स्व. श्री हिम्मतमल जी

रांका का 30 दिसम्बर 2011 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप पाली, जोधपुर, जयपुर आदि जहाँ भी विराजे, वहाँ पर संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे और धार्मिक क्रियाकलाप में सन्नद्ध रहते थे। आप देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्रीमान् कुलदीप जी रांका के आप पूज्य पिताश्री थे।

मैसूर- सुश्रावक श्री पारसमल जी दरला सुपुत्र स्व. श्री अनूपचन्द जी दरला का 9 दिसम्बर, 2011 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। कम खाना, गम खाना और नम जाना आपके जीवन का सार था।

चेन्नई- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, संघ समर्पित सुश्रावक श्री धनपतमल जी चोरडिया का 31 दिसम्बर 2011 को स्वर्गलोकगमन हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्रावक का जीवन संघ व समाज-सेवा में समर्पित रहा। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे तथा नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे। स्वधर्मि-वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी चोरड़िया परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

जोधपुर- श्रीमान् पारस राज जी सुपुत्र स्व. श्री भभूतराज जी चतुर मेहता का 29 दिसम्बर, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप आचार्य श्री अनन्य भक्त थे। संघ को आपकी विशेष सेवाएँ प्राप्त होती रही हैं।

अलीगढ़ (रामपुरा)- वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री उच्छबराय जी सुपुत्र श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन (सेवानिवृत्त अध्यापक, अलीगढ़-रामपुरा) का 84 वर्ष की आयु में 2 जनवरी, 2012 को निधन हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्ती, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी एवं संत-सतियों के प्रति दृढ़ आस्था एवं श्रद्धा-भक्ति थी। आपके प्रतिदिन दो सामायिक का नियम था। लगभग 40 वर्षों से शीलव्रत का पालन कर रहे थे एवं बारह व्रतों का पालन करते थे। आपने आजीवन रात्रि भोजन का त्याग किया। आप लगभग 25 वर्षों से प्रतिवर्ष दीपावली व पयुर्षण पर तेले की तपस्या करते थे। आप आचार्यश्री हस्ती की प्रेरणा से स्वाध्यायी बने। आपने लगभग 30 वर्षों से अनेक स्थान पर पर्युषण पर्व पर बाहर जाकर भी सेवाएँ दी। आपने अनेक स्थानों पर धार्मिक शिविरों में भी भाग लिया। आप सरल स्वभावी व धार्मिक निष्ठावान थे। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

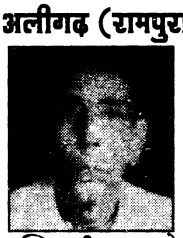

बैंगलोर- तपसाधिका सुश्राविका श्रीमती कमलाबाई कोठारी धर्मपत्नी श्री पारसमल जी कोठारी का 70 वर्ष की आयु में 5 दिसम्बर, 2011 को महासती श्री वैभवश्री जी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा के प्रत्याख्यान के पश्चात् देहावसान हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान श्राविका थीं। आपने जीवनकाल में वर्षीतप, मासखमण एवं अन्य कई तपस्याएँ की। आपने सजोड़े शीलव्रत के प्रत्याख्यान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से ग्रहण

किये। आपके जमीकन्द के भी त्याग थे। मरणोपरान्त नेत्रदान किया गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

बेलगाँव- संघ-सेवी, संघ समर्पित सुश्राविका श्रीमती ऊंकीबाईजी सामसुखा धर्मपत्नी स्व. श्री जवानमलजी सामसुखा (मोगड़ा वाले) का 18 जनवरी, 2012 को देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थीं। वर्षों से आप पौरसी करती थीं। त्याग-तप से युक्त आपका जीवन सबके लिए प्रेरणादायी रहा। आपने अपने जीवन में रात्रि भोजन त्याग, द्रव्यों की मर्यादा, पर्व तिथियों पर हरी सब्जी एवं जमीकन्द का त्याग आदि प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में भी आप सदैव तत्पर रहती थीं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी सामसुखा परिवार सदैव अग्रणी रहा है। पाली संत-सतीवृन्द के चातुर्मास में आपके परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा है।

जोधपुर- कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक श्री लालचन्द जी सुपुत्र श्री मिश्रीमल जी बाफना का 75 वर्ष की वय में 28 जनवरी, 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित सामायिक करते थे। आपमें जीव-दया के भाव कूट-कूट कर भरे हुए थे एवं आप संत-सती की सेवा में सन्नद्ध रहते थे।

जोधपुर- स्मितवदन सुश्रावक श्री सायरमल जी सिंघवी सुपुत्र श्री आनन्दराज जी

सिंघवी का 94 वर्ष की वय में 12 जनवरी, 2012 को देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से रोज सामायिक करते थे। आप एक धर्मपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी होने के साथ सदैव हसमुख रहते थे। आपने जैन कुशल छात्रावास में अपनी निःशुल्क सेवाएँ प्रदान कीं। आप श्री अनराज जी बोथरा के बहनोई थे।

जोधपुर- सेवाभावी सुश्रावक श्री भंवरलाल जी भंसाली सुपुत्र स्व. श्री पारसमल

जी भंसाली का 79 वर्ष की वय में 12 जनवरी, 2012 को देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक, संवर-साधना, अष्टमी व चतुर्दशी को रात्रि भोजन त्याग करते थे। आप स्वयं एक होम्योपैथिक डॉक्टर थे एव शिविर में निःशुल्क सेवाएँ प्रदान करते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल से प्रकाशित साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

734 श्री राजीव जी डागा, मुम्बई (महाराष्ट्र)
735 निदेशक-जैन दर्शन विद्या संस्थान, रामबाग, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
736 श्री बाबूलाल जी खींवसरा, अशोक रोड़, मैसूर (कर्नाटक)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13307 श्री शीतल जी ढड्ढा, इन्कम टेक्स कॉलोनी, टोंक रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
13308 Shri Ashok ji Jain, Park Town, Chennai (Tamilnadu)
13309 Shri Anil Kumar ji Bhandari, Bangalore (Karnataka)
13310 श्री लक्ष जी सिंघवी, राधाकृष्णम् टैक्सटाइल्स मार्केट, रिंग रोड़, सूरत (गुजरात)
13311 श्री अरिहन्त कुमार जैन, रामनगर सोडाला, जयपुर (राजस्थान)
13312 Shri Manoj Kumar ji Lunked, Shegaon, Buldhana (M.H.)
13313 Shri Raj Pramod ji Kotecha, Rahuri, Ahmednagar (M.H.)
13314 श्री सागरमल जी मेहता, सदर बाजार, रावटी, जिला-रतलाम (मध्यप्रदेश)
13314 श्री अंकित कुमार जी गाँधी, सदरबाजार, रावटी, जिला-रतलाम (मध्यप्रदेश)
13315 Shri H. Shantilal ji Jain, Chennai (Tamilnadu)
13316 श्री रविन्द्र कुमार जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक (राजस्थान)
13317 श्री अशोक कुमार जी मेहता, महावीर कॉलोनी, हुड़को के पास, जोधपुर (राज.)
13318 श्री विष्णु चन्द जी जैन, 3 ए 43, हाउसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा (राजस्थान)
13319 Shri Vijay ji Bafna, Bangalore (Karnataka)
13320 Shri Ashok ji Surana, Bangalore (Karnataka)
13321 श्री भीकमचन्द जी गुलेच्छा, शोभावतों की ढाणी, जोधपुर (राजस्थान)
13322 सौ. कुसुम जी भंडारी, श्रीधर नगर, चिंचवड़गाँव, जिला-पूना (महाराष्ट्र)
13323 श्रीमती सुशीला जी समदड़िया, श्रीनिवास कॉलोनी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
13324 श्री सुभाषचन्द जी जैन, पीपाड़सिटी, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
13325 श्री आशुतोष कुमार जी जैन, ए 406, वैशाली नगर, जयपुर (राजस्थान)
13326 श्री नरेन्द्र जी पटवा, 766-67, जवाहर नगर रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13327 Shri Deepak ji Khemsara, TN Pur (Karnataka)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

6600/- श्री चंचल जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्रीमती राजकुमारी जी एवं स्व. श्री सुखपालचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, परम विदुषी, साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा के 66 वें दीक्षा-दिवस पर भेंट।

5100/- श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर, श्री पदमचन्द जी कोठारी की 5वीं पुण्य स्मृति में भेंट।

5100/- श्री सुरेन्द्र जी हीरावत, जयपुर, चि. सौरभ जी सुपौत्र स्व. श्री पदमचन्द जी-स्व. श्रीमती चन्द्रावल जी हीरावत का शुभ विवाह सौ.कां. सुहानी (रेशु) के संग 31 दिसम्बर 2011 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री बसन्तराज जी, विनोदकुमार जी गांधी पीपाड़सिटी हाल मुकाम मुम्बई, श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्री बसन्तराज जी गांधी का 29 जनवरी, 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

3100/- श्री हुकमीचन्द जी, संतोष कुमार जी डोसी (चावण्डिया), बैंगलोर, ज्येष्ठ सुपुत्र श्री विनोद कुमार जी डोसी (एफ.सी.ए.) का 16 नवम्बर 2011 को 42 वर्ष की अल्पायु में देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

3100/- श्री प्रमोद जी हीरावत, जयपुर, सौ.कां. श्रुति जी सुपौत्री श्रीमती लाडदेवी जी-स्व. श्री हीराचन्द जी, सुपुत्री श्रीमती सुनीता जी-प्रमोद जी हीरावत का शुभ विवाह चि. विपुल जी सुपौत्र स्व. श्रीमती गलखी बाई जी-स्व. श्री दीपचन्द जी, सुपुत्र श्रीमती कान्तादेवी जी-श्री कीर्तिचन्द जी ढड्ढा के संग दिनांक 21 जनवरी 2012 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री चंचल जी, ईश्वर जी, श्री महेशचन्द्र जी, श्री सुरेश जी, श्री जितेन्द्र जी, जयपुर, श्री देवीचन्द जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री होशियारचन्द जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्रीमती निशा जी धर्मपत्नी श्री प्रदीपकुमार जी मेहता, जयपुर, सुश्री प्रतिक्षा मेहता, सुपौत्री श्रीमती सुशीला जी धर्मपत्नी स्व. श्री कैलाशचन्द जी मेहता के सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण होने पर भेंट।

2100/- डॉ. महावीरराज जी, नेमराज जी, अजितराज जी मेहता, जोधपुर हॉल मुकाम कलकता, पूज्य पिताजी श्री पारसराज जी मेहता का दिनांक 29 दिसम्बर, 2011 को स्वर्गवास होने पर उनके पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री झूमरलाल जी, शांतिलाल जी, रतनलाल जी, अमृतलाल जी, गौतम जी कवाड़, पीपाड़, अपने पूज्य पिताजी श्री रामलाल जी सुपुत्र श्रीमती पतासीदेवी-केवलचन्द जी कवाड़ की पुण्य स्मृति में भेंट।

2000/- श्री प्रकाशचन्द जी, दिलीप कुमार जी लूणिया, पल्लीपट्ट, पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शन एवं सुश्री कीर्ति जी लूणिया की सगाई के शुभ प्रसंग के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1151/- वीर पिता श्री (डॉ.) विमलचन्द जी, दिलीप बाबू जी, समर्पित बाबू जी, हिण्डौनसिटी, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में शासनप्रभाविका, परम विदुषी, महासती मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री उषा जी म.सा. के नौ की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री हेमन्त जी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर, श्री उच्छबराय जी जैन का दिनांक 02 जनवरी 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री बाबूलाल जी जैन (पटवारी), अलीगढ़-रामपुरा, श्री उच्छबराय जी जैन का 02 जनवरी 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री यशपाल जी, आनन्दपाल जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती सूरजकंवर सिंघवी की पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती निर्मला देवी जी धर्मसहायिका स्व. श्री कैलाशचन्द जी डागा, जयपुर,

सुपुत्र सुनील-मधु जी डागा के वैवाहिक जीवन के 25 वर्ष सानन्द पूर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री त्रिलोकचन्द जी, दलीचंद जी, किशनलाल जी नाहटा, के.जी.एफ. (कर्नाटक), स्वर्गीय श्री शांतिलाल जी नाहटा सुपुत्र श्री दीपचंद जी नाहटा की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री शान्तिलाल जी, दीपक जी, नवीन जी गाँधी (थाँवला वाले), भीलवाड़ा, पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 102वीं जन्म-जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी बागमार, मैसूर, पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 102वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सूरजदेवी-श्री हेमराज जी सुराणा, जयपुर, चि. अनुरोध जी सुपुत्र श्री देवेन्द्र जी भण्डारी (ब्यावर वाले) के सी.ए. फाइनल में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1001/- श्री स्वरूपचन्द जी उत्तमचन्द जी रूणवाल, चालीसगांव (महा.)।

1000/- श्री रंगरूपमल जी चोरड़िया, साहुकारपेठ-चेन्नई, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पीपाड़शहर में दर्शन, वन्दन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री शान्तिलाल जी गाँधी (थाँवला वाले), भीलवाड़ा, पूज्य पिताश्री स्व. श्री नेमीचन्द जी गाँधी की 25वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्रीमती कंचनदेवी-बंशीलाल जी कोचेटा की तरफ से अपने सुपौत्र श्री विनय कोचेटा (सुपुत्र श्रीमती निर्मला-शांतिलाल जी कोचेटा) के सी.ए. बनने की खुशी में भेंट।

501/- श्री ललीत कुमार जैन, सुमेरगंजमंडी (इन्द्रगढ़), श्री प्रशान्त जैन सुपुत्र स्व. श्री सुरेशचन्द जी जैन, के सी.ए. में उत्तीर्ण होने की खुशी में भेंट।

501/- डॉ. राजकुमार जी छाबड़ा, जोधपुर, अपनी पुत्री सौ. कुमुद का शुभ विवाह दिनाँक 16 जनवरी, 2012 को जयपुर में चि. अमित जी गंगवाल सुपुत्र श्री सौभाग्यमल जी गंगवाल के संग सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्रीमती रंजना अशोक जी चोरडिया, विजयनगर, श्री देवीचन्द जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री होशियारचन्द जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती प्रेमसुधा दीपक जी कोठारी, जयपुर, श्री देवीचन्द जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री होशियारचन्द जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री सतीश एच. पतीरा जी, मंत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, बारां (कोटा), श्रीमती भानुमती जी पतीरा धर्मपत्नी स्व. श्री हसवन्तराय जी पतीरा (बाबूभाई) की पुण्य स्मृति में पतीरा परिवार की ओर से सप्रेम भेंट।

500/- श्री सतीश एच. पतीरा जी, मंत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, बारां (कोटा), श्रीमती भानुमती जी पतीरा धर्मपत्नी स्व. श्री हसवन्तराय जी पतीरा (बाबूभाई) की पुण्य स्मृति में पतीरा परिवार की ओर से जीवदया में भेंट।

500/- श्री पारसमल जी, अशोककुमार जी कोठारी, शुले (बैंगलोर), सुश्राविका श्रीमती कमला बाई जी धर्मपत्नी श्री पारसमल जी कोठारी का समाधिमरण

होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन (चौरू वाले), चौथ का बरवाड़ा, सुश्रावक श्री चाँदमल जी जैन सुपुत्र स्व. श्री नृसिंहलाल जी जैन का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 15 दिसम्बर 2011 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री हरिप्रसाद जी, किशनचन्द जी जैन (मंडावर वाले), जयपुर, चि. चेतन कुमार सुपुत्र श्री त्रिलोकचन्द जी जैन का शुभ विवाह सौ.कां. अंजना सुपुत्री श्री विनोदकुमार जी जैन, चौड़ा की पाखर के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी, मीठालाल जी बागमार, मैसूर, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 102वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- सेठ बी.जे. संचेती लोक सेवा ट्रस्ट (रजि;), मल्कापुर संस्था के निवर्तमान अध्यक्ष स्व. श्री राणीदान जी भिवराज जी संचेती के पाँचवे स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री विजय जी, श्री चन्द्रभान जी खिंवसरा, मांडल (महा.), परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा के दर्शन-प्रवचन-श्रवण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती उमरावकंवर भण्डारी, जोधपुर, श्री गणपतमल जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री देवेन्द्रनाथ जी, लोकेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, श्रीमान् हुकमनाथ जी मोदी एवं श्रीमती कृष्णा जी मोदी की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती प्रेमकंवर धर्मपत्नी श्री मिलापचन्द जी बुरड़, ब्यावर, अपने सुपौत्र चि. मोहित सुपुत्र श्रीमती सुमन-सुनील जी बुरड़ का शुभविवाह सौ.कां. आंकाक्षा के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती नीलम धर्मपत्नी डॉ. ललित जी जैन, अजमेर, अपने पुत्र श्री निखिल जैन के सी.ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भेंट।

500/- श्रीमती सुशीला धर्मपत्नी श्री कंवलराज जी विनायक मेहता, जोधपुर, अपने दोहिते श्री निखिल जैन (श्रीमती नीलम-डॉ. ललित जी जैन) के सी.ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भेंट।

500/- श्रीमती खम्मादेवी जी बाफना एवं श्री अशोक जी, महावीर जी, प्रदीप जी बाफना 'मोकलसर वाले', जोधपुर, पूज्य श्री लालचन्द जी बाफना का 28 जनवरी, 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री प्रेमकुमार जी, मनीष जी, लोकेश जी, एवन्तजी, ऋषि जी सिंघवी, बारनी, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 14 के बारनी पदार्पण की खुशी में।

500/- श्री वर्धमानचन्द जी मेहता, जोधपुर, अपने पुत्र श्री विकास मेहता के सी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भेंट।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी मूथा, पीपाड़ सिटी, अपने पुत्र भरतकुमार जैन के सी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

50000/- श्री सुरेन्द्र कुमार जी सिंघवी, मानसरोवर-जयपुर, मंडल के नूतन सत्साहित्य गुरु हस्ती-गुरु हीरा के अनमोल भजन के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

25000/- श्री कांतिलाल जी भीकचन्द जी चौधरी, धुलिया (महा.)।
25000/- सौ. विमलाजी धर्मपत्नी श्री कांतिलाल जी चौधरी, धुलिया (महा.)।
10000/- श्री कल्पेश जी सुपुत्र श्री कांतिलाल जी चौधरी, धुलिया (महा.)।
10000/- श्री सुरेन्द्र जी सुपुत्र श्री कांतिलाल जी चौधरी, धुलिया (महा.)।
10000/- श्री हितेष जी सुपुत्र श्री कांतिलाल जी चौधरी, धुलिया (महा.)।
8000/- सौ. बिन्दु जी धर्मपत्नी श्री हितेष जी चौधरी, धुलिया (महा.)।
6000/- सौ. धनवंती जी धर्मपत्नी श्री कल्पेश जी चौधरी, धुलिया (महा.)।
6000/- सौ. सरिता जी धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र जी चौधरी, धुलिया (महा.)।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

27000/- श्री रतनलाल सी. बाफणा, जलगांव, चि. राहुल संग सौ. निष्ठा का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।
6600/- श्री चंचल जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्रीमती राजकुमारी जी एवं स्व. श्री सुखपालचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, परम विदुषी, साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा के 66 वें दीक्षा-दिवस पर भेंट।
2100/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़तासिटी, पर्युषण सहायतार्थ।
1500/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बेरछा मण्डी, पर्युषण सहायतार्थ।
1101/- श्री बाबूलाल जी जैन (पटवारी), अलीगढ़-रामपुरा, श्री उच्छबराय जी जैन अलीगढ़-रामपुरा का दिनांक 02 जिनवरी, 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को भेंट।
1100/- श्री हस्तीमल जी डोसी, मेड़तासिटी, स्वाध्याय सेवा के उपलक्ष्य में भेंट।
1000/- श्री शान्तिलाल जी गांधी (कानना वाले),भीलवाड़ा, पूज्य श्री नेमीचन्द जी गांधी की 24वीं पुण्य स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई को प्राप्त सहायता

5000/- श्री चैनराज जी, दीपक कुमार जी ओस्तवाल, कृष्णागिरी।
1100/- श्री राजेन्द्र कुमार जी बोहरा, होसुर।
1100/- श्री नवरतनमल सा दुगड़, होसुर।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर को प्राप्त साभार

15000/- श्रीमती अनिला-नवरतन जी कोठारी, श्रीमती शीला-प्रकाश जी कोठारी, जयपुर।
11000/- श्रीमती कमला जी कोठारी, जयपुर, श्री भीमराज जी कोठारी की पुण्य स्मृति में।
5000/- श्रीमती मधु-अरूण जी कोठारी, जयपुर, अपने दोहिते के जन्मोत्सव पर भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

19500/- श्री रतनलाल सी.बाफना, जलगाँव।
16000/- श्री कस्तूरचन्द जी बाफना, जलगाँव
15500/- श्री सुशील कुमार जी, कस्तूरचन्द जी बाफना, जलगाँव।
6600/- श्री चंचल कुमार, निर्मल कुमार भण्डारी एवं परिवार, चेन्नई।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

240000/- श्री हरीश जी कवाड़, चेन्नई।
60000/- श्री एस. अशोक जी मरलेचा, बैंगलोर।
12000/- श्रीमती सुशीलादेवी धर्मपत्नी श्री एम.सी. भण्डारी, ब्यावर।
12000/- श्री गणपतराज जी बाघमार, चेन्नई।
12000/- सुश्री दीपा दुधेडिया सुपुत्री स्व. श्री ज्ञानचन्द जी दुधेडिया, मेड़तासिटी।
12000/- श्री अंकित लोढ़ा सुपुत्र श्री प्रमोद जी लोढ़ा, जयपुर।
12000/- श्री अशोक कुमार जी कर्णावट, मुम्बई।
12000/- श्री सी.आर. मेहता, मुम्बई।
12000/- श्रीमती उम्मेदकंवरजी मेहता, जयपुर, श्री नरपतराजजी मेहता की पुण्यस्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

फाल्गुन कृष्णा 8	बुधवार	15.02.2012	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14	सोमवार	20.02.2012	चतुर्दशी
फाल्गुन कृष्णा 30	मंगलवार	21.02.2012	पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8	गुरुवार	01.03.2012	अष्टमी, श्री माणक मुनिजी की पुण्यतिथि
फाल्गुन शुक्ला 14	बुधवार	07.03.2012	चतुर्दशी, चातुर्मासिक पक्खी
चैत्र कृष्णा 8	गुरुवार	15.03.2012	अष्टमी, भगवान आदिनाथ कल्याणक एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 74 वां जन्म-दिवस
चैत्र कृष्णा 14	बुधवार	21.03.2012	चतुर्दशी
चैत्र कृष्णा 30	गुरुवार	22.03.2012	पक्खी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाऊस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

Opening Ceremony

of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

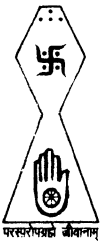

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™ TMT REBARS

yes, the best

DRI Plant

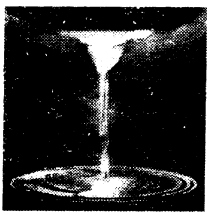

Electric Arc Furnace

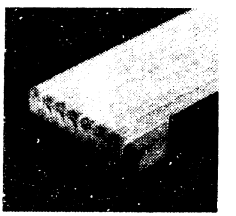

Billets

Rolling Mill

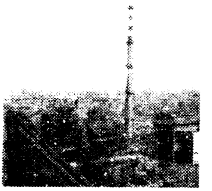

Captive Power Plant

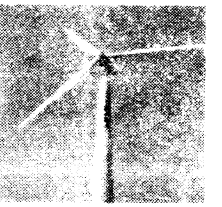

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नम: ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आओ प्रत्याख्यान करें

जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाने और गतिशील बनानें के लिए व्रत नियम का पालन अत्यन्त आवश्यक है। मन को वश में करने का एकमात्र उपाय है - **व्रत नियम**। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में छोटे-छोटे व्रत नियम को ग्रहण कर सफल बना सकें, इस उद्देश्य के लिए ही अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा "आओ प्रत्याख्यान करें" पुस्तक का प्रकाशन विगत वर्षों से किया जा रहा है। इस वर्ष भी किया गया है। आप अपने क्षेत्र में आओ प्रत्याख्यान करें पुस्तक मंगवाने के लिए सम्पर्क करें -

राजकुमार गोलेच्छा, पाली (9829020742), **मनोज कांकरिया,** जोधपुर (9414563597), **मनीष जैन,** चैन्नई (09543068382/044-42728476)

ज्ञान का दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइये आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाइये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097),
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729),
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164),
4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065),
5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597),
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932),
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411),
11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2012 ★ फाल्गुन, 2068

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन